जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी,

# अपनी धरती

( सायकिल द्वारा सम्पूर्ण भारतवर्ष की सद्भावना यात्रा का रोमांचकारी संस्मरण । )

लेखक— विमल कुमार पान्डेय
( सायकिल पर्यटक )

★ ॐ नमः शिवाय ★

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी,

# अपनी धरती

(साइकिल द्वारा सम्पूर्ण भारत वर्ष की सद्भावना यात्रा का रोमांचकारी संस्मरण)

श्रद्धेय पं. श्री सत्यनारायण शास्त्री जी को सादर भेंट।

विमल कुमार पाण्डेय
24-5-66

लेखक—
विमल कुमार पाण्डेय
( सायकिल पर्यटक )

प्रकाशक :—
विमल कुमार पाण्डेय
ग्राम—कोसड़
पत्रालय—खेमादेई
जिला—देवरिया (उ० प्र०)



द्वितिय संस्करण
सन १९७३

मूल्य:—आठ रुपया

मुद्रक—
सैनो प्रिन्टिंग प्रेस लार,
जिला —देवरिया (उ०प्र०)

ॐ नमः शिवाय

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णो गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥
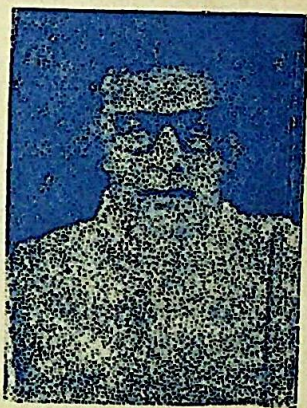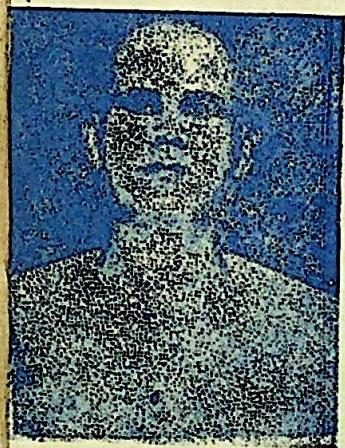
साधु पुरुष श्री शत्रुघ्न पति जी त्रिपाठी (व्यवस्थापक पिन्डी इंटर कालेज)

अग्रज श्री भुपेन्द्र पति जी त्रिपाठी (आचार्य संस्कृत वि०वि० वाराणसी)

गुरु देव मेरे श्रध्येय मेरे यात्रा पथ के आधार मेरे ।
जिनके अशीष उपदेश रहे सर्वत्र शक्ति श्रृंगार मेरे ॥

**श्री चंद्रा त्रिपाठी**

(जिला महिला कांग्रेस संयोजिका वाराणसी उ० प्र०)

काशी नगरी है पुण्य तिर्थ शिवशंकर शंभू विधाता की
उस पावन तिर्थ नगर में ही आशीष मिलाएक दाता की
उनसे उत्साह अपार मिला और मिला पुत्रवत प्यार मुझे
चिर काल रहेगी याद मुझे ममता मयी चंद्रा माता की ॥

# अर्पण

वीर शहीदों को अर्पण

जो देश हेतु बलिदान गये,

जिनके लख शौर्य प्रताप तेज,

अरिदल भी लोहा मान गये ।

# विषय - सूची

पृष्ठ

# लेखक परिचय

श्री विमल कुमार पान्डेय ग्राम कौसड़, पत्रालय खेमादेई जनप
देवरिया उ. प्र. के निवासी हैं। आप अपने क्षेत्र में सामाजिक एवं बौधि
कार्य कलापों में एक कर्मठ सुविज्ञ, एवं प्रतिभा शाली व्यक्तित्व के रुप
सुप्रसिद्ध हैं। उन्नीस वर्ष के आयुमेही अपने जन पद के पूर्वी क्षेत्रों में ज
मानस में भातृ भाव जागृत करने के उदेश्य से सायकिल द्वारा यात्रा की थ
श्री पाण्डे अपने अन्वेषी स्वभाव तथा साहसिक वृत्ति के कारण सायकि
द्वारा अब समग्र भारत वर्ष की सदभावना यात्रा पूरा किया है जो उनके दुर्ध
साहस, अगम सहन शीलता एवं अटल विश्वास का परिचायक है। अपने द
निश्चय को मूर्त रुप देने की सफलता प्राप्त कर अवश्यमेव प्रशंसा त
साधुवाद के पात्र हैं।

ग्रामीण नवयुवकों के उत्साह वर्धन और पथ प्रदर्शन में निरन्तर श्र
पान्डे तल्लीन रहते हैं। ऐसे उत्साही युवक कम मिलते हैं। आज देश
ऐसे ही दृढ़व्रती देश प्रेमी और सदा चारी युवकों की आवश्यकता है। आ
ही नही पूर्ण विश्वास है कि श्री पान्डेय जी का यात्रा विवरण देश के लाख
युवकों को प्रेरणा देगा और श्री पान्डेय का साहस उनके लिए अनुकरणी
होगा।

राम चन्द्र तिवारी (एडवोकेट
चेयर मैन लार टाउन (देवरिया

# ( आशिर्वचन )

भारत के राष्ट्रपति का उपसचिव

राष्ट्रपति भवन

नई दिल्ली–४

NOV 10, 1972

Shri Bimal Kumar Pandey is a social worker of district Deoria in Uttar Pradesh. He has undertaken a Journey of the whole country on a cycle. He has already completed almost half of the Journey. Such journeys are likely o contribute towards the emotional integration of the country. I wish Shri pandey all success in his mission.

( S. Nilakantan )

—:★:—

**श्रीमती लाल बहादुर शास्त्री** फोन नं० : ३८१४७२

१, मोती लाल नेहरु प्लेस

नई दिल्ली–११

दिनांक १०–११–७२

श्री विमल कुमार पान्डेय जो कि सायकिल द्वारा भारत की सद्भावना यात्रा करने के लिए निकले हैं, मुझसे मिले। उनके इस सायकिल यात्रा का उद्देश्य सराहनीय है। आशा है कि इसमे समाज को विभिन्न प्रान्तो की स्थिति की जानकारी मिलेगी। जो कि आपसी मेल जोल बढ़ाने की दिशा में सहायक सिद्ध होगी।

मैं इनके इस सद्भाव यात्रा की सफलता की शुभ कामना करती हूं।

ललिता शास्त्री

Member JAMMU

LEGISLATIVE COUNCIL. 19-11-72

I am glad to meet Shri Bimal Kumar Pandey. a social worker of district Deoreia Uttar Pradesh. He has undertaken to Tour the wohole of the country on cycle and has covered about 65000 K.m. Such Journeys are likely to Countribute towards emolional integration in of the country and dispel fears those exist among different regions. I wish Mr. Pandey all success in his mission. May Gob be with him.

S. L. Mahajan (M·L·C.)
Distt. Congress Presdent
(J&K)

—✱—

## To Whom It May Concern

HQ 525 ASC Battalion
✱C/o 56 APO✱

Shri Bimal Kumar Pandey of Distt. Deoria of UttarPrade who is on all India cycle tour visited the battalion on 18 Novembar 72, With this great zeal he wanted acquinted himself with the difficulties and livinig hardship of our Jawans in this mountaneous terrain. Besides this and being a progressive farmer he is keen to learn farming practices in this advanced aggriculturally state of INDIA.

we praise and wish him all the best and Success in his mote.

(T.S. DHILLON)
Major
Second in Command
officer Commanding 525 ASC
Battalion

Date 18 nov 72

✱✱✱

Sanatan Majhi
M.L.A. (Bihar)
Office :- Adibasi Bhavan
Karandih
P.o. Tatanagar (Singhbhum) Date 29, 12 72

Shri Bimal Kumar Pandey of Deoria (u.p.) Came to my contact at Karandih (jamshedpur). after completing his 80 /. percent cycle tour mission in india.

I am very much impressed by his adventure & inthosisim & glad to Know the history of his journy. I hope youug generation willbe impressed by his "Apani Dharati" written by Him Regarding his tour in the country.

I wish very sucoss in his misson.

Sanatan Majhi
M.L.A.)Bihar)

-★★-

# VISVA - BHARATI

Acharya founded by SANTINIKETAN
* RABINDRANATH TAGORE *
INDIRA GANDHI west Bengal (INDIA)
. upacharya janua 8,1973
Pratul Chandra Gupta

I have pleasure to certify that sri Bimal Kumau Pandey of uttar pradesh visited the Visva Bharati University campus at Santiniketan to-day. I understond that he is on an all India Tour on Bicyele to have a firsr hand knowledge of the people and the land all over our country.

I wish lim success.

(B.R. Basu)
Registrar
VISVA BHARATI

# Punjab Agricultural University

November 14, 1972.

I am glad to learn that sree Bimal Kumar Pandey, a social worker of district Deoria (U. P.) has undertaken a Journey of the whole of the country on his cycle. I feel such Journeys contribute a lot towards emotional integration.

I wish him all success.

M. S. Ahuja,
(M. A. LL. B.) Assistant Registrar (General)

★★★

## धर्म नाथ सिंह

अध्यक्ष

जिला संयुक्त सोसलिस्ट पार्टी, (देवरिया)

सदस्य

अध्यक्ष

सहकारी संघ लार

कृषि यंत्र परामर्श दात्री समिति

उत्तर प्रदेश लखनऊ

दिनांक १३–७–७३

श्री विमल कुमार पान्डेय सायकिल द्वारा अखिल भारत वर्ष की सदभावना यात्रा कर अपनी धरती पुस्तक के माध्यम से राष्ट्र की झाकी एवं रोमांच कारी संसमरण लिखी हैं. जिसे पढ़कर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी धरती से परिचित होना चाहिए। केंद्रिय एवं राज्य सरकारोंसे अनुरोध है कि इस पुस्तक को हाई स्कूल के विद्यार्थिओं के लिए पठनीय घोषित करें, तथा ऐसे उत्साही व्यक्ति को सहयोग देकर राष्ट्र की सेवा करने का सुयोग प्रदान करे। आशा है कि पान्डेय जी राष्ट्र एवं समाज हित कार्य में आजीवन संलग्न रहेगें। हमारे जैसे हजारों व्यक्ति आपको हर सम्भव सहयोग देने में पीछे नही रहेगें।

धर्म नाथ सिंह

लार (देवरिया)

---

वाराणसी

**चन्द्रात्रिपाठी**

२३-१०-७२

श्री विमल कुमार पान्डे ग्राम कौसड़ पो० खेमादेई जिला देवरिया के एक उच्च कुल ब्राह्मण परिवार के सदस्य हैं। मैं इनके परिवार वालों से भली भांति परिचित हूं। ये अपने क्षेत्र में अपने साहस, कर्मठना तथा ईमान दारी के लिए विख्यात हैं। ये साइकिल द्वारा भारत भ्रमण करने के लिए निकले हैं। मैं इनके उत्साह एवं साहस की प्रशंसाकरती हूं, तथा साथही इनकी यात्रा शुभ हो इसकी हृदय से कामना करती हूं।

चन्द्रात्रिपाठी

जिला महिला कांग्रेस संयोजिका

वाराणसी (उ० प्र०)

---

## श्री वंश नारायण सिंह

( भूतपूर्व ) संसद सदस्य गाजीपुर उ० प्र० )

ता० ३–१०–७१

"आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि सायकि द्वारा भारत-भ्रमण की ऐतिहासिक यात्रा में आप सफल हों।"

## श्री काशी प्रसाद पान्डे

१०–११–७१

अध्यक्ष, विधान सभा, ( मध्य प्रदेश )

"श्री विमल कुमार जी की सायकिल से सम्पूर्ण भारत की साह यात्रा निश्चय ही राष्ट्र के हित में होगी। यात्रा की सफलता के साथ आशा करता हूं कि देश के सभ्य नागरिक इनसे सहयोग करेंगे।"

## श्री जगदीश जोशी

(भूतपूर्व मन्त्री, मध्य प्रदेश) ७–११–७१

"श्री विमल कुमार पाण्डेय सायकिल से पर्यटन कर रहे हैं। देश जानने का यह भी एक अच्छा तरीका है। श्री पाण्डेय का उत्साह उ है। पर्यटन मनुष्य को अधिक बोध करा सकता है।"

## श्री अल्ला उद्दीन, खाँ पद्म भूषण

( मइहर, म०प्र० ) ८–११–७१

"तुमि सायकिल यात्रा आरम्भ को रेछे सुने आमी खूब खुशी तुमाके आशीर्वाद कोरछि कि तोमार यात्रा सफल होक।"

(तुमने सायकिल यात्रा आरम्भ किया है यह सुन कर मैं खूब तथा तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हारी यात्रा सफल हो।

## सदस्य विधान सभा

उत्तर प्रदेश

श्री विमल कुमार पान्डेय ग्राम कौसण पत्रालय खेमादेई जिला देवरिया के निवासी हैं। यह जान कर कि ये सायकिल से सम्पूर्ण भारत भ्रमण के लिए निकले हैं। बड़ी प्रसन्नता हुई। मेरी शुभकामना इनके साथ हैं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इनकी यह यात्रा सफल हो।

**वैजनाथ प्रसाद**

एम० एल० ए०

देवरिया

३-११-७२

———:—:—:—:———

## उप सचिव

उत्तर प्रदेश

राज्य विद्युत बोर्ड

१४ अशोक मार्ग लखनऊ

नम्बवर २–१९७२

श्री विमल कुमार पान्डेय ग्राम कौसण जिला देवरिया के एक उत्सही युवक हैं। जो साइकिलपर ही अखन्ड भारत की यात्रा कर रहें हैं। इनके यह संकल्प। केवल इसी लिए ही सराहनीय नहीं है किये इस दुर्गम और कठिन काम को सम्भव कर रहे हैं वल्कि इस लिए भी कि इनकी यात्रा में भावात्मक एकताको बल मिलेगा।

श्री पान्डे का उत्साह, निष्टा तथा दुर्गम कार्य करने की लगन, जिसकी नई पीढ़ी में काफी कमी है, अत्यन्त सराहनीय है। मैं इनके अनुष्ठान की सफलता की हृदय से कामना करता हूं।

केदार नाथ सिंह
( उप सचिव )

---

**बृजानन्द सिंह** **लखनऊ**

उपाध्यक्ष दिनाँक ३--११--७२

जिला सहकारी बैंक लिमिटेड देवरिया

संचालक पी० सी० यू० लखनऊ

ब्लाक प्रमुख, लार

श्री विमल कुमार पान्डे हमारे समीपस्थ ग्राम कौसड़ के बहुत ही प्रतिभाशाली विद्वान तथा समाज में प्रतिष्ठावान् ब्राह्मण परिवार के एक चरित्रवान युवक हैं। मैं इन्हें बचपन से व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। ये बचपन से ही घोर परिश्रमी, साहसी, व्यवहार कुशल तथा समस्याओं से उलझकर सफलता प्राप्त करने वाले उत्साही युवक हैं। मैं इनके हिन्दुस्तान भ्रमण के कार्य क्रम की सफलता की भगवान से शुभ कामना करता हूं।

बृजानन्द सिंह
प्रमुख
क्षेत्र समिति, लार (देवरिया)

# खन्ड विकास आफिस

क्षेत्र समिति लार

श्री विमल कुमार पाडे ग्रान्म कौंसड़ पत्रालयखेमादेई जनपद देवरिया (उ० प्र०) के निवासी हैं। चूंकि इनकी एक विषेश अभिरुचि है, जो क्षेत्रीय जन मानस को काफी प्रभावित की है। समाज सेवा में विशेष अभिरुचि रखते हैं, एवम् सांस्कृतिक कार्य कलापों में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहे हैं। इन्होंने विकास क्षेत्र केही माध्यम से अपनी सिचाई योजना को कार्यान्वित करने के लिए पंम्पिगसेट लिया है, तथा कृषि में हमेशा उन्नति शील विधि अपनाते हैं।

में ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि इनकी ऐतिहासिक एवं साहसिक सायकिल यात्रा सुखद एवं सफल हो।

राम मति सिह

खंड विकास अधिकारी

क्षेत्र समिति लार

देवरिया ( उ० प्र० )

# संत विनोबा डिग्री कालेज, देवरिया (उ०प्र०)

दिनांक २४--१०--७२

साइकिल से भारत यात्रा का संकल्प लेकर निकले हुए श्री विमल कुमार पान्डे मेरे छात्र रहे हैं। ये एक उत्साही, कर्तव्य, निष्ठ, एवम् राष्ट्रप्रेमी युवक हैं। सायकिल से भारत यात्रा का संकल्प अपने आप में एक महत्वपूर्ण निर्णय है। आजके युवकों में अपने राष्ट्र को देखने और समझने की अपेक्षा विदेश ही को देखने और समझने की ललक अधिक रहती है। यदि हमारे नव युवक समय समय पर सामूहिक रूप से इस प्रकार की यात्राओं का अयोजन करते रहें तो इससे राष्ट्रीय एकता और सौहार्द के सम्वर्धन में सहायता मिलेगी। मेरी शुभ कामनाए सतत् इनके साथ हैं।

**डा० रामा पान्डेय**

प्रधानाचार्य

सन्त विनोबा डिग्री कालेज

देवरिया ( उ० प्र० )

—:—:——:—:—

**आद्यानाथ पान्डेय**

हिन्दी अनूदेशक

राष्ट्रीय पुलिस अकादमी

माउन्ट आबू

दिनांक ३ दिसम्बर १९७२

देश विदेश घूमना और मिट्टी की गंध से एकाकार होना मानव मन की वड़ी मनोरम कामना है। आज के कर्म संकुल संसार मे संघर्षरत मानव इस काम के लिए समय निकाल सके, संदेहास्पद सा लगता है लेकिन आकुल आकांक्षा आदमी को समय के अभाव के भाव को अनुभव नहीं करने देती और वह अपनी मंजिल की ओर पग उठा देता है। ऐसा ही कोई क्षण श्री विमल कुमार पान्डे के जीवन में आया होगा और उनके पग साइकिल की ओर बढे होंगे जो कि उनके इस प्रयास की एक मात्र संगिनी है। साइकिल से भारत के ओर छोर के भ्रमण का संकल्प लेकर आप देवरिया, उत्तर प्रदेश से चल पड़े हैं। दक्षिण को नाप लिया है और उत्तर भारत को नाप रहें हैं, भाव में, भाषा में, रूप में, रंग में, एक ही प्रकाश की इन्द्रधनुषी आभा में।

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि इनका पथ मंगलमय हो, संकल्प पूरा हो और "एक प्राण है भारत धरती" की कहानी सम्पूर्ण हो।

**आद्यानाथ पांडेय**

---

राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी
(एक विशद सचित्र परिचय ग्रन्थ)

लेखक सम्पादक
**सुमनेश जोशी**

ग्रन्थागार नागनोली भवन
सांगानेरी गेट
जयपुर–३

सहयोगी
**टीपू सुल्तान**

उत्तर प्रदेश के श्री विमल कुमार पान्डेय भारत की आत्मा का दर्शन करने निकले हैं। वे आधे भारत की यात्रा पूरी कर चुके हैं। उन्होंने साइकिल से गांव-गांव की यात्रा करते हुए खुली आँखों से और खुले मन से प्रत्येक प्रांत की सांस्कृतिक और सामाजिक स्थितियों का गहराई से अध्ययन किया है उन्होंने देश के विभिन्न प्रान्तों की विभिन्न जीवन पद्धतियाँ और जीवन मूल्यों को समझने का प्रयत्न किया है। वे हर स्थान पर राष्ट्रीयता, भारत की अखंडता और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार से भावात्मक एकता को सुदृढ़ और सुगठित करते जाते हैं। देश के कोने-कोने में इन्होंने प्रत्येक स्थान के विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया है और हर व्यक्ति ने उनके सद्भावना मिशन की सराहना की है।

श्री विमलकुमार पान्डे से मिलकर और बातचीत करके सन्तोष हुआ है। जनता में जिस चेतना को इन्होंने राष्ट्रव्यापी स्तर पर विकसित होते देखा है उससे इन्हे सन्तोष है। इनकी दृढ़ मान्यता है की भारत अपनी अखन्डता की रक्षा करने में पूर्ण समर्थ है। देश के प्रत्येक स्थान पर इन्हें जनमानस का मनोबल और राष्ट्र के प्रति आस्था की भावना अत्यन्त सुदृढ़ लगी है।

श्री विपन कुमार पान्डे अपनी यात्रा में अधिक से अधिक लोगों से मिलने और जनमानस को अधिक से अधिक समझने का यत्न करते हैं। राष्ट्र की आत्मा से वे अपना आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करते हैं। यात्रा की समाप्ति पर अपनी यात्रा की अनुभूतियों को वे "अपनी धरती" के नाम से प्रकाशित करने की योजना लेकर चले हैं। निश्चय ही इनका ग्रन्थ देश के वर्तमान सन्दर्भ में इतिहास भूगोल और संस्कृति का एक विश्व कोष जैसा बन सकेगा।

मैं राजस्थान में पान्डे जी का स्वागत करता हूं। मैं चाहूंगा कि ये आज के बदलते हुए राजस्थान की आत्मा को और अधिक गहराई और निकटता से देखें और राजस्थान के अतीत के २५ (वर्ष पहले के) सन्दर्भ में उसकी तुलना करें।

मैं श्री विमलकुमार पान्डे की इस साहसिक सद्भावना यात्रा की हृदय से सफलता चाहता हूं।

सुमनेश जोशी

१ दिसम्बर

जयपुर

जयहिन्द तार-नवजीन
साप्ताहिक 'नवजीवन, उदयपुर फोन-५३
स्थापित १९३९ (राजस्थान का सबसे पुराना नियमित प्रगतिशील पत्र)
सम्पादक पो० बा नं० ८
**कनक मधुकर** सूरजपोल अन्दर
उदयपुर राजस्थान
दि० १०-१२-७३

हार्दिक शुभ कामना

श्री विमल कुमार पान्डे उत्तर प्रदेश निवासी साइकिल पर भारत भ्रमण को निकले हैं। अपने प्रवास में आप दिसम्बर ९ को यहाँ पहुंचे और सर्व प्रथम नवजीवन प्रेस में पधारें। यात्रा का वैसे ही महत्व है, वह तीर्थ हो या विश्व भ्रमण आज तो साहसी पुरुष बार बार चन्द्र लोक की यात्रा कर उस पवित्र शीतल भूमि की मिट्टी का मूल्यांकन करने पर तुले हुए हैं। अपनी धरती पुस्तक को साकार रूप देने के लिए 'श्री पान्डे जी सायकिल से भारत भ्रमण का अनुभव संजो रहे हैं। आप अपनी पूर्व यात्रा में गत वर्ष विनोबा जी जैसे महापुरुषों से भी भेंट कर चुके हैं। आप बड़े सरल हैं तथा साथ ही उत्साह सेओतप्रोत युवक हैं। जिन्दा दिली ही जीवन है और आप जैसे जीवट के युवकों मे देश को वड़ी आशा है। आप के मन में विभिन्न प्रान्तों के बारे में विविध ज्ञान अर्जित करने की जो पिपासा है वह भगवान पूरा करें। आपका मार्ग सदा प्रशस्त हो।

इसी शुभ कामना के साथ

'कनक मधुकर'

**शोभालाल गुप्ता** २९७८/६२ अब्दुल अजीज रोड

करोल बाग

सम्पादक हिन्दुस्तान नई दिल्ली ५

मु० उदयपुर (राजस्थान)

ता० १०-१२-७२

अपनी धरती का दर्शन करने के उद्देश्य से साइकिल पर यात्रा कर रहे देवरिया जनपद उ० प्र० के श्री विमल कुमार पांडे से परिचय प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता हुई। हमारा देश बहुत विशाल है और विविधताओं से परिपूर्ण है। उसकी विशेषताओं से प्रत्येक भारतीय को परिचय होना चाहिए। इसका प्रयास उत्तम माध्यम से हो सकता है। इसके द्वारा मनुष्य बहुमुल्य ज्ञान और अनुभव अर्जित कर सकता है। मैं श्री पान्डे की सरलता से प्रभावित हुआ। इनका साहस और पुरुषार्थ प्रशंसनीय है। यह अच्छी बात है कि ये अपने प्रवास के अनुभवों से सर्वसाधारण को भी लाभान्वित करने का विचार रखते हैं। मैं इनके प्रति अपनी शुभकामनायें प्रगट करता हूं और इनके प्रयास की सफलता चाहता हूं।

नवजीवन भवन **शोभालाल गुप्त**

जयपुर

दिनांक १०-१२-७२

प्राध्यापक ज्योतिष विभाग

# विद्यावारिधि कृष्णचन्द्र द्विवेदी

संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी-२

साइकिल यात्री ने प्राचीन प्रवास को अर्वाचीन कड़ियों में पिरोया। बृहत्तर भारत की आधारशिला में जितने सांस्कृतिक केन्द्र बने हैं वे सभी इसी प्रकार के सोत्साही अपरिमित उद्योगियों के उद्योग के प्रतीक हैं। इसने पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की धरती को अपना घरेलु आंगन मानकर एकता का मानबिन्दु स्थिर किया है और इसी की प्रेरणा पर आज सहस्राब्दि से भारत की अपनी अक्षुण्य परम्परा अमरबेल जैसी विश्व के समक्ष लहराती है। इसी अतीत के वृत्त का स्मरण कर श्री पान्डे जी भी इस वैज्ञानिक साधन सम्पन्नता के युग में अपनी धरती का दर्श प्रवास में मात्र साइकिल से भ्रमण कार्य सम्पन्न कर रहे हैं। अनुभव में आता है, यह व्यक्ति कितनी प्रसन्न मुद्रा में अपना कार्य संबल परीश्रमपूर्वक पूरा कर रहा है। यह संस्मरण भविष्य के युवकों के लिए प्रेरणाप्रद होगा और ऐसे ही कार्यों से देश के अन्य भी निःस्वार्थ अपनी सद्भावना यात्रा पर अग्रसर होंगे।

इससे ही देश की सक्रिय सफल भावनात्मक एकता का रूप मानव के समक्ष साकार हो सकेगा। मैं श्री पान्डे की इस साहसिक यात्रा का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और इन्हे वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के अध्यापक परिषद की ओर से ढेर बधाइयां समर्पित करता हूं जिससे इनकी सफल यात्रा मंगलमय बने।

प्रो० डा० कृष्णचन्द्र द्विवेदी

—:—

ॐ

# महर्षि दयानन्द आर्य महाविद्यालय

# श्री गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

संश्रुतेन गमेमहि

तार–आर्य गुरुकुल
संस्थापित वि० सं० १९८६
मार्गशीर्ष शु० ५-२-२९
दि० ११-१२-७२

ओइम् स्वस्ति पंथामनुचरेम सूर्याचन्द्र मसाविव ।
पुनर्ददताघ्न जनता संग मेमहि ॥

—रिग्वेद

इस वेदमन्त्र के उच्च आदर्श को हृदयंगम कर भारत की एकता एवम् अखण्डता का सब प्रान्तों में दिग्दर्शन करते हुए श्री पान्डे जी आज यहाँ पधारे। आप जैसे कर्मठ उत्साही नवयुवक से मिलकर हम सब गुरुकुल वासियों को बहुत प्रसन्नता हुई। आप जिस उद्देश्य से भारत-भ्रमण कर रहे हैं वह अति प्रशंसनीय है। परमदेव ओइम से प्रार्थना है कि वह आपको इस उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्रदान करे।

भारत भ्रमण करते हुए आपने ऐतिहासिक वीरभूमि चित्तौड़ को विस्मृत नहीं होने दिया, यह आप जैसे कर्मवीर के लिए आवश्यक था। मेवाड़ के वीरों का तो यह ध्येय था कि, "जो दृढ़ राखे धर्म को, तेहि

राखे कर्तार" । इस भावना को आप ने भी ओझल नहीं होने दिया और वीरभूमि धर्मभूमि चित्तौड़गढ़ का दर्शन करके अपने को कृत कृत्य किया भारतवासियों को एकता का पाठ पढ़ाने वाला एवम् 'सत्यमेव जयते' का उद्बोधक महाराणा कुम्भा द्वारा विरचित विजय स्तम्भ चित्तौड़गढ़ दुर्ग के १२० फुट ऊपर आकाश में उद्भासित होकर सबको एक ही देव का स्मरण कराने हेतु, ओइम नमः शिवाय' मंत्र का उपदेश दे रहा है । "जगतीपति सौलि हीरो हम्मीर भूपतिरमूदरण रंगवीर" सिलालेख पर लिखा हुआ है । यह पद्य सबमें वीरता का संचार कर रहा है । ऐसी पवित्र भूमि को श्री पान्डे जी द्वारा लिखित भारतयात्रा में भी अवश्य स्थान मिलेगा, इस आशा के साथ श्री पान्डे जी द्वारा लिखित भारत यात्रा (अपनी धरती की सफलता चाहता हूं ।

भगवत्सफलताभिलाषी

**भीमसेन वेद वागीश**

श्री गुरुकुल, चित्तौड़गढ़

—:·—:—

**रामचन्द्र तिवारी (एडवोकेट)** सिविल कोर्ट, देवरिया

सदस्य पो० मु० लार, देवरिया

प्रान्तीय कांग्रेस कमैटी (सत्तारुढ़) उत्तर प्रदेश

चेयरमैन

टाउन एरिया कमैटी लार देवरिया

उपाध्यक्ष

उत्तर प्रदेश टाउन एरियाज चेयरमेन कमेटी

श्री विमल कुमार पान्डेय पार्श्ववर्ती ग्राम कौसड़ पत्रालय खेमादेई जनपद देवरिया (उ० प्र० ने अखिल भारतीय सायकिल पर्यटन में

राष्ट्रीय एकता एवं जनसाधारण में बंधुत्वकी भावना जागृत कर, अदम्य साहस एवं शौर्य का परिचय दिया है जो हमारे युवा वर्ग के लिए अनुकरणीय है। आपने अपनी धरती, नामक पुस्तक में भारत वर्ष की जो झाँकी वर्णन की है वह जन साधारण के लिए पठनीय है।

ऐसे उत्तसाही एवं समाजिक व्यक्ति को टाउनएरिया लार (देवरिया उ०प्र०) निःशुल्क सायकिल चालन की अनुमति देकर गर्व की अनुभूति कर रही है।

आशा है सम्पूर्ण भारत वर्ष के नगर एवं टाउनएरिया भी आपको अपने क्षेत्र में निःशुल्क सायकिल चालन की अनुमति देगी।

**राम चन्द्र तिवारी**

चेयरमैन

**टाउन एरिया कमेटी**

लार (देवरिया)

इनके अतिरिक्त डा० रामनिरंजन पाण्डेय, एम० ए० (हिन्दी) एल० एल० बी० (बी० एच० यू०), वेदान्तशास्त्री, पी० एच० डी० (नागपुर) प्रोफेसर तथा हेड आफ डिपार्टमेंट, हिन्दी उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आ० प्र०) श्री पी० माधवराव, कार्यालय मन्त्री हि० प्र० स० हैदराबाद, श्रीमती एल० देवकी अम्मा, प्रिन्सिपल, विशारद प्रवीण हिन्दी महाविद्यालय कालीकट, (केरल) तथा डा० एन० एस० दक्षिणामूर्ति एम० ए० पी, एच, डी, प्रोफैसर मैसुर विश्वविद्यालय, मैसूर। एवम सेन्ट एन्थोनी हाई स्कूल मापूस (गोआ) के प्रिंसिपल आदि अनेकानेक विशिष्ट व्यक्तियों ने यात्रा पथ में प्रोत्साहन तथा सहयोग दिया।

# सद् भावना यात्रा के उद्देश्य

१—प्रत्येक प्रान्त के जन मानस में सौहार्द्र, वन्धुत्व एव म् भारतीयता जागृत करना।

२—कृषि सम्बन्धी विशेष जानकारी प्राप्त करना।

३—भारत के विशिष्ट, अनुभवी एवम् महापुरुषों की सुवाणी, सुशिक्षा तथा शुभकामना प्राप्त करना।

४—भारत के दर्शनीय स्थलों तथा नवीन योजनाओं का अवलोकन करना।

५—देश के विभिन्न क्षेत्रों के रीति रिवाजों की जांनकारी प्राप्त करना तथा अपनी जानकारी से जन साधारण को अवगत करना।

—:★:—

ॐ नमः शिवाँय

# मेरी चिर अभिलाषा

"भारतस्य प्रतिष्ठेद्वे संस्कृतम संस्कृतिस्तथा"

अनेकता में एकता भारत की अपनी विशिष्ठता है। विविध भाषाओं रीति-रिवाजों धर्मों तथा वर्गों के बावजूद भारतवासियों की अपनी एक अलग ही विशेषता होती है। यहां विशेषता है भारतीयता की। प्रश्न उठता है कि भारतीयता है क्या पं० जवाहरलाल जी ने अपनी पुस्तक "डिस्कवरी आफ इन्डिया में इस भारतीयता की भारतीय संस्कृति का परिवेश माना है, ',अर्थात हर भारतीय में एक संस्कृति है जो उसके रक्त में विद्यमान है। वह संस्कृति जिसका प्रतिपादन स्मृतिओं पुराणों एवम उपनिषदों में होता आया है और जिससे हमारा सामाजिक जीवन ओतप्रोत रहा है। हमारी संस्कृति की नीव अध्यात्म है। हमारा धर्म जिसमें दर्शन की प्रधानता है। जन जीवन के व्यवहारिक पहलू को दृष्टि से ओझल नहीं करता। भारतीय आचार्यो और मनीषियों ने जहां मनुष्य जीवन का चरमोत्कर्ष मोक्ष प्राप्ति माना है उसके साथ हीं कर्म प्रधान होने का उपदेश भी दिया है। भारतीय जीवन में धर्म, अर्थ काम और मोक्ष चारों की प्राप्ति का निर्देश है। विद्या व अर्थ के उपार्जन में अपने को अजर अमर समझकर धर्माचरण करने का निदेश रिषियों ने दिया है. इस प्रकार हमारी संस्कृति का मूल आधार धर्म यद्यपि निवृति प्रधान नहीं है, तथापि अनासक्त रहने का उपदेश देता है। यथा कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन, यहाँ धर्म विशेष रूप में दर्शन ग्रन्थों वेदों एवं रिषिमुनियों के उपदेशों के रूप में अति विशदता से निरूपित है, इसके साथ ही कहीं कहीं आप्त वाक्यों में भी इसका मूल तत्व दृष्टि-गोचर होता है। उदाहरणार्थ—

परहित सरिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहि अधमाई ॥

अथवा अष्टादस पुराणेषु व्यासस्य वचनम् द्वयम्, परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् । "इसलिए सामान्य जीवन अर्थ और काम की उपासना मे उच्छृंखल नहीं अपितु धर्म से नियंत्रित होना चाहिए। भारत ने युग-युग से यह संदेश सुना है और अपने जीवन में समाहित किया है। यह संदेश किसी प्रांतीयता रीति-रिवाज अथवा संकीर्ण स्वार्थ की सीमा में आबद्ध नहीं हुआ अपितु समग्र भारत की नस-नस में प्रवाहित हुआ। हमारा आचरण या व्यवहार कैसा हो इसका उल्लेख ऊपनिषदों में मिलता है।

उदाहरणार्थ —सत्यं वद, धर्मंचर, सत्यान्न प्रमदितव्यम,
धर्मान्नप्रमदितव्यम कुशलान्न प्रमदितव्यम। इत्यादि

यही संदेश जो सैकड़ों वर्षों से हमारा व्यवहार नियंत्रित करता रहा है और आज भी करता है भारतीय संस्कृति की एक झाकी है। यही मानवीय नैतिक चेतना एवं अध्यात्मिक उन्मुक्तता भारत में समस्त विविधताओं एवम् भिन्नताओं के बावजूद उस तत्व का सन्निवेश हर भारतीय के अंतस में करता है जिसे हम आत्मीयता कहते हैं। मैं उसी भारतीयता का दर्शन करने के लिए समग्र भारत वर्ष की यात्रा का संकल्प लिए बैठा था उचित अवसर की तलाश में। यात्रा का मानव जीवन में विशेषस्थान है। यात्रा हमारे आमोद प्रमोद मय जीवन का अंग है, वरन हमारी रुचि अनुभव तथा मानवोचित गुणों को संवारने में भी सहयोग प्रदान करती है। एक स्थान पर सुनिश्चित रुप से जम जाने पर जीवन में जड़ता आजाती है। गतिसीलता तथा परिवर्तन जीवन के नये रुप प्रगट करते हैं और वह स्फूर्ति से तरो ताजा रखते हैं। केवल यात्रा के व्यसन ने ही राहुल सांकृत्यायन के जीवन को विद्वता एवं अनुभव के विशाल भंडार से पूरित कर दिया। बिना देशाटन के हमारी शिक्षा अधूरी है और ज्ञान अपरिपक्व। प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुलों में हुआ करती थी जिनमें शिक्षा प्राप्ति हेतु शिष्य

बेखटके एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाया करते थे। इन गुरुकुलों में शिक्षार्थी का जीवन गतिशील हुआ करता था। विश्वामित्र राम लक्ष्मण कोसाथ लिए बहुत दिनों तक यात्रा में भ्रमण करते रहें। हमारे व्यवहारिक जीवन में इन यात्राओं का बड़ा महत्व है। भारतीय रिषिओं ने गृहस्थ के लिएउसके आध्यात्मिक विकास तथा पारलौकिक उन्नति के लिए तीर्थ यात्राओं का विधान बनाया चारों धाम की यात्रा गृहस्थ के लिए मुक्तिदाई मानी गई है ये चारों धामभारत के उत्तर से दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम तक के विशद यात्रा के लिए पर्याप्त हैं। अगर उत्तर भारत के वद्री केदार का दर्शन अतीव पुण्य कारक है तो दक्षिण कारामेश्वरम उससे किसी स्थिति में कम नहीं। इन तीर्थ यात्राओं के पीछे भी मानव की यात्रा से परिमार्जित होने वाली रुचि बुद्धि तथा रहन-सहन के सम्बन्ध में होने वाले लाभ का रहस्य छिपा था। हम अपने संकीर्ण स्वार्थ की परिधि के बाहर जाकर प्रकृति की गोद में उसकी मनोहारी छवि का जब इन यात्राओं में दर्शन करते हैं, जब ऊंचे ऊंचे गिरिशृंगों एवम विकट वनों तथा वन्य पशुओं से और हरे-भरे फूलों से हमारा सामीप्य होता है तब हमें अपनी क्षुद्रता का बोध होता है। मनुष्य इस लीलामयी विशाल हृदयप्रकृति के सामने कितना तुच्छ दुर्बल तथा असहाय है। इसका बोध हमें यात्रा से ही होता है, और यही बोध हमारी चितनधारा को एक महान मोड़ देता है। हमें अपनी सीमाओं का ज्ञान होता है तथा हमें नये दिशा बोध की ऊपलब्धि होती है, जो सर्वथा वैयक्तिक हैं तथा हमारे मानवोचित गुणों का विकास कर हमें वास्तव में मनुष्य बनाती है। ऐसी ही यात्रा पर निकलने की उत्कट अभिलाषा चिरकाल से मेरे अंतर में पल रही थी।

विगत दशाब्दी का मानव जीवन अत्यन्त मुखर तथा प्रभावी परिवर्तनों से ओत-प्रोत रहा है। विग्यान के माध्यम से जहां एक ओर प्रकृति के नए रहस्यों का उदघाटन हो रहा है, वहीं तत्जन्य सामाजिक चेतना में भी नये आयाम प्रगट हो रहें हैं। बौद्धिक चैतना तथा

बढ़ते हुए सामाजिक सह अस्तित्व की स्वीकारोक्ति ने इस दशाब्द के मानव में अपने अगल बगल आगे पीछे नजर रखने तथा उसकी सोचने समझने की प्रवृत्ति को काफ़ी बढ़ावा दिया है। राष्ट्रीय चेतना का जो रूप विगत दशाब्द में मुखर हुआ है वह इतना स्पष्ट पहले नहीं था। भारत के सन्दर्भ में यह चेतना १९६२ के चीनी आक्रमण तथा भारत-पाक युद्धों के कारण काफ़ी फली-फुली है। इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रीय संकट की घड़ी में भारत के प्रत्येक वर्ग, जाति, तथा उपजाति ने अपने प्रदेशीय और आन्तरिक झगड़ों के ऊपर उठकर तन मन धन से एक होने का परिचय दिया है। बंगाली बंगला का आसामी आसाम का या महाराष्ट्र महाराष्ट्र का न होकर पहले भारत का रहा है, और बाद में और कुछ। युवकों मे इस नवीन चेतना के बोध ने उन्हे अपनी धरती के हर क्षेत्र हर वर्ग से पूर्ण परिचित होने, तथा इस राष्ट्रीय चेतना को जन-जन में जागृत करने को उत्साहित किया। इसी नई चेतना ने मेरी देश भ्रमण तथा भारतीय जन जीवन को अधिक निकट से देखने की चिरअभिलाषा को एकदम से झकझोर दिया और मैंने सायकिल से समग्र भारत वर्ष की सद्भावना यात्रा करने के विचार को साकार रूप देने का संकल्प करलिया। धीरे-धीरे इस संकल्प को पूरा करने का समय भी आगया। यात्रा की तिथि निश्चित हुई तथा काशी से इसे आरम्भ करने का विचार हुआ। जब तक यात्रा की तिथि निश्चित नहीं थी तब तक इसकी कठिनाइयों अथवा इसकी दुर्गमता का बोध

व्यग्र नहीं करता था परन्तु अब हर चीज अधिक स्पष्ट तौर पर आंखों के सामने तिरने लगी। यात्रा एकाकी थी, अतः मन कभी कभी शंकालु हो उठता था परन्तु हृदय में उत्साह एवम धैर्य पर्याप्त था। और एक प्रातः गुरुजनों। मित्रों तथा सहयोगियों से विदा लेकर अपने इष्टदेव परम ब्रह्म "शिव" का स्मरण कर भरे तथा भावपूर्ण हृदय एवम धड़कते दिल से आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हुए सैकड़ों हाथों की छाया में मैंने अपना पथ चेतक ( सायकिल हरकुलिस) को सम्भाला और मंजिल की ओर चल पड़ा।

मेरी सद्भावना यात्रा में श्रीं शत्रुघ्न पति त्रिपांठीं (व्यवस्थापक इण्टर कालेज पिण्डी ) श्री झूलन तिवारी (प्राचार्य इण्टर कालेज पिण्डी ) का सहयोग सर्वदा याद रहेगा। ग्राम के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री हुकुम सिह जी की प्रथम यात्रा से ही मेरे साथ हार्दिक शुभकामना रही है।

यात्रा के द्वितीय चरण में मुझे श्रद्धेया मातेश्वरी चंद्रा त्रिपाठी जिला महिला कांग्रेस संयोजिका वाराणसी उ० प्र०) का विशेष स्नेह मिला।

इस सम्बन्ध में श्रद्धेय श्री भूपेन्द्र पति त्रिपाठी, (संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी ) एवम अस्सी वर्षीय युवा समाज सेवी तथा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के कर्मठ सेनानी श्री भास्करानन्द जी पाठक का आशीर्वाद सस्नेह सदा याद रहेगा।

गोठिजी (बिहार) के ख्याति प्राप्त चिकित्सक डा० गोपाल तथा उनके अग्रज श्रीयुत राजेन्द्र जी का सहयोग भी विस्मरणीय रहेगा। आप दोनों भाई अपूर्व प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति हैं। डा० साहब को अपने युवा काल में शब्दवेधी वाण चलाने का अभ्यास था और आज चिकित्सा के क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति अर्जित किये हैं। श्री राजेन्द्र जी इस क्षेत्र के लब्ध प्रतिष्ठ समाजसेवी तथा सुप्रसिद्ध पत्रकार भी हैं। "जनप्रिय" नेता श्री धर्मनाथ सिंह जी का भी मुझे शुभकामना मिला।

अन्त में मैं अपने परम मित्र श्यामविहारी सिंह, श्री प्रेम शंकर पाडेय (एडवोकेट) का विशेष आभारी हूं जिन्होंने अपनी 'धरती' के प्रस्तुतिकरण में सहयोग देकर मेरा उत्साहवर्धन किया।

यात्रा के दौरान जो अनुभव हुए उन्हे संक्षिप्त रूप में इस पुस्तक के माध्यम से आप तक पहुचाने की चेष्टा की गयी है। इस पुस्तक के द्वारा आपको 'अपनी धरती' के लोगों के बारे में थोड़ी भी जानकारी दे सका तो अपना प्रयत्न सार्थक समझूंगा। पाठकों तथा शुभचिन्तकों का ऐसा ही सहयोग मिलता रहा तो अपने अनुभवों को विस्तृत रूप से विभिन्न खण्डों में प्रकाशित करने की चेष्टा करूंगा।

विमलकुमार पाण्डेय
(साइकिल यात्री)
(सायकिल पर्यटक)
कोसड़

प्रथम खण्ड

ॐ नम शिवाय:

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुत:
स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवै-
र्वेदै: साङ्गपद क्रमोपनिषदं,
गायन्ति यं सामगा: ।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा,
पश्यंति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा,
देवाय तस्मै नम: ॥
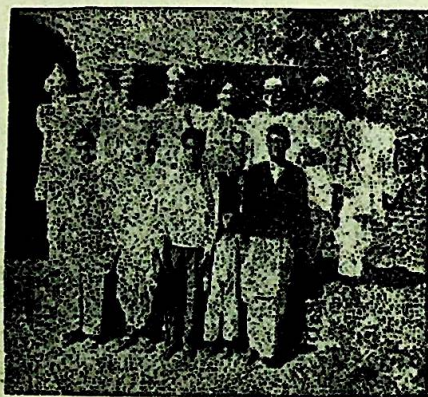
ग्राम सभापति श्री शिवनाथ सिह, श्री हुकुम सिह (कार्य-कारिणी सदस्य सुतावर इण्टर कालेज व क्षेत्रीय डाइरेक्टर केन विभाग) अध्यापक श्री कपिलदेव सिह, अध्यापक श्री अवधविहारी पांडेय, केदार सिह सुग्रीव सिह, यासीन अहमद, भानु प्रताप पान्डे इन्द्रदेव सिह इत्यादि ग्राम वासियों के साथ।

पर्यटक (विदाई चित्र)

## मुख्य यात्रा ३ नवम्बर १९७१

# आदमी कब एक होगा ?

३ नवम्बर १९७१ को प्रत्यूष वेला में शंकरपुरी काशी को प्रणाम कर राष्ट्रीय पथमार्ग का अनुगमन करते हुए आगे बढ़ा। आरम्भ में अपने स्वजनों से विलग होने की एक वेदना दबाये चला जा रहा था। किन्तु संकल्प पूरा करने का उल्लास भी कम न था। पथ के अपरचित परिजन भी आज न जाने क्यों चिरपरिचित स्वजन लग रहे थे। रास्ते भर उत्सुक आंखें मुझे निहारती जा रही थी। कहीं कहीं अपने उत्तर द्वारा जिज्ञासु पथिकों की जिज्ञासा पूरा करता जाता था। तीसरे दिन रीवा की ओर बढ़ रहा था।

घटना रीवा शहर की है। काशी छोड़े हुए तीसरी रात थी। इधर कुछ विशेष बातें नहीं हुई। मिर्जापुर के आस-पास मुझे तीन बंगाली युवक मिले जो सायकिल पर ही पर्यटन करने निकले थे। उनकी यात्रा दिल्ली से कलकत्ते तक थी। जब उन्हे मालुम हुआ कि मैं विशेष उद्देश्य से नियमबद्ध रूप से सम्पूर्ण भारत की सद्भावना यात्रा पर निकला हूं तो वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी अनुभवों की जानकारी मुझे दी तथा मेरी यात्रा के सम्बन्ध मे विस्तृत जानकारी लिए। बड़े प्रेमी युवक थे। मेरी प्रवाह पूर्ण बंगला भाषा ने उनसे मित्रता बढ़ाने में विशेष योग दिया। उन्होंने मुझे अपना पता दिया तथा लगभग दो घण्टे के बाद यह वादा लेकर मुझे छोडे कि जब मैं यात्रा के दौरान कलकत्ते में रहूंगा तो उनसे भेंट करूंगा। मिर्जापुर से ही ऊसर-धूसर, ऊंची नीची अनुपजाऊ भूमि का सिलसिला आरम्भ हो गया था। गांवों में गरीबी अधिक प्रतीत हुई। एक ग्राम प्रधान के द्वारा ज्ञात हुआ कि यहां खेती अभी भी

भगवान के भरोसे पर ही होती है। पानी के साधन नहीं के बराबर है इस ऊंची नीची भूमि में पानी पहुचाना एक कठिन काम है। चारों ओर तीसी के खेत फैले हुए थे। बीच-बीच में कहीं कहीं अरहर और कपास के खेत भी थे। मैंने रीवा पहुंचकर वहां के प्रसिद्ध समाजवादी नेता एवं भूतपूर्व मन्त्री श्री जगदीश जोशी तथा वहाँ के पुलिस कमीश्नर से मुलाकात किया। पुलिस कमीसनर बड़े मिलनसार व्यक्ति थे। इन दोनों महानुभावों ने मुझे प्रशस्ति पत्र दिया। शाम हो चली थी। एक जगह सड़क पर खड़ा होकर मैं विश्राम करने के बारे में सोच रहा था कि दो सायकिल सवार मेरे पास आए और पूछा कि क्या मैं कोई पर्यटक हूं? मेरे हां कहने पर दोनो ने एक साथ नमस्कार किया तथा मेरी यात्रा का उद्देश्य जानकर बड़े आनन्दित हुए। वे आग्रह पूर्वक मुझे अपने निवास स्थान पर ले गए तथा फल और दूध से मेरा सत्कार किया। ये सज्जन थे श्री लालजी सिंह जी प्रतापगढ़ के रहने वाले थे और विशेष प्रेम पूर्वक मेरी सुविधा के लिए सामान जुटाने में पर्याप्त सहयोग दिए। दूसरे सज्जन थे श्री भरतराज शर्मा जो गुजरात के रहने वाले थे पर वहीं एक तरह से बस गए थे। इन्होंने यहां की एक श्रेष्ठ लड़की से शादी कर लिया था। पत्नी बड़ी सभ्य और सुशील थी। यह एक सफल प्रेम विवाह था। भरत जी बी० ए० फाइनल की तैयारी कर रहे हैं और उनकी पत्नी मैट्रिकुलेशन की। श्री लालजी सिंह तथा श्री भरत जी दोनों ही बिजली विभाग में सेवारत हैं। शाम को ये सज्जन मुझे शहर घुमाने ले गए तथा राज निवास और शहर के अनेक प्रसिद्ध भवनों का दर्शन कराया। उस नगर की विशेष जानकारी भी दिए। उसी दिन रात को श्री लालजी सिंह अपने लिए नयी रजाई गद्दा तथा तकिया खरीद कर लाए। उन्होंने मेरा विस्तर तहकर के सायकिल पर बांध दिया तथा मेरे लिए नया विस्तर लगा दिया। मेरे पूछने पर उन्होंने कहा कि इस नवीन विस्तर का वे मेरे द्वारा ही उद्घाटन कराना चाहते थे। यह सुनकर वहां जितने भी शुभ चिंतक थे, सभी हंस पड़े। मुझे भी उन उत्साही

युवकों की सेवा तथा सहयोग से बहुत आनण्द मिला।

सुबह अपनी दूर की मंजिल पर चल दिया। पवन देव मेरे प्रतिकूल चल रहे थे अतएव श्रम काफी पड़ रहा था फिर भी मैं अपनी धुन में गुनगुनाए जा रहा था।

मूसाफिर तुझे दूर मंजिल पुकारे,
अरे नौनिहाल "अपनी धरती के प्यारे।
सुहाने ये झरने सुहानी ये नदियां,
हैं पर्वत यहां के बड़े ही निराले ॥ मुसा० ॥
नहीं जिसने गर अपनी धरती को जाना,
तो उसकी "विमल" बुद्धि दे प्रभु हमारे ॥मु०॥

रीवां से लगभग सवा सौ किलोमीटर आगे आ गया था। शाम को पांच बजे थे। मैं रात्रि विश्राम के लिए उचित स्थान की तलाश कर रहा था। कुछ ग्रामीणों ने टेकमा गाव के श्री तिवारी जी के होटल का पता दिया जो राष्ट्रीय पथ पर ही जंगल में था। बड़ी कठिनाई से उस नीरान इलाके में तिवारी जी का पांच छः बेंचों वाला देहाती होटल मिला। मैंने तिवारी जी को अपना परिचय दिया तथा रात्रि में विश्राम करने की जगह चाही। उन्होने बड़ी ही बेमुरौती से कहा कि जओ उस साधू के पास सो जाओ। उनकी हृदय हीनता अखर गई। पास ही झाड़ियों के बीच एक झोपड़ी थी जिसमें एक साधू बावा धूनी रमाए बैठे थे मैंने उन्हें नमस्कार किया तथा सोने की जगह तथा अनुमति चाही। उन्होंने मैं जहां खड़ा था वहीं सो जाने का इशारा कर किया। मैंने मन ही मन भगवान को याद किया और सायकिल एक तरफ रखकर वहीं पर अपना संक्षिप्त सा बिछौना लगा दिया। बाबा से बड़ी देर तक

बातें होती रहीं । बातों के दौरान में कब सो गया पता नहीं चला । आ
रात के लगभग मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे सर के पास सूं-सूं
कोइ आवाज हो रही है। मैंने सोचा कि बिल्ली होगी और उधर ध्
दिए बिना मैं फिर सो गया। जाड़े का रात थी अतः मुह ढककर सो
था । कुझ देर के बाद मैंने अपने सीने पर कुछ बोझ सा महसूस किया त
ऐसा लगा कि कोई चीज वहां सरक रही है। अब मुझे पूरा विश्
हो गया कि यह सर्प हो है। मारे डर के मेरी हालत पतली हो गई त
जाड़े में भी मुझे पसीना आने लगा फिर भी मैं शान्ति पूर्वक लेटा रहा
इतनी बात दिमाग में अवश्य थी कि जब तक सर्प को छेड़ा न जाय
कुछ नुकशान नहीं करता है। नींद आने का कोई प्रश्न ही नहीं
कुछ देर बाद मैं डरते डरते मुंह पर से कम्बल हटाया। धूनी की
रोशनी झोपड़ी में फैल रही थी। देखता क्या हूं कि एक अच्छा
मोटा सर्प पास ही रखे गोइरे में अपना सर घुसाकर बेठा है तथा
पिछला धड़ बाहर है। मैंने धीरे-धीरे बाबा को जगाया तथा उन्हे
का ज्ञान कराया। इन्होंने इस घटना को जरा भी महत्व नहीं दिया
मुझे आदेश दिया "सो जाओ" यह कुछ नहीं करेगा।" उनकी बा
मुझे जरा भी तसल्ली नहीं हुई। नींद जाने कहां चली गई। सारी
में धूनी के पास बैठा रहा। साधू बाबा आराम से सो रहे थे जैसे
हुआ ही नहीं।

—::—

जबलपुर अब केवल १२ मील दूर रह गया था
में एक सुन्दर तालाब तथा शिव मन्दिर देखकर मैं भोजन करने की
से वहां रुक गया समीप हीं एक झोपड़ी में एक केवठ परिवार
था। केवट ने मुझे कोई तीर्थ यात्री समझा तथा मेरा बहुत
सत्कार किया। उसने अपने सारे परिवार वालों को बुलवाया और

पैर स्पर्श कराने लगा। मैं तो दंग रह गया। राम की कथा बरबस याद आ गई। मेरे भी पैर छुए जा रहे है। वड़ा संकोच हुआ। कहां राम और कहा मैं। मैंने यत्न पूर्वक उन लोगों को अलग कर दिया। जब तक मैंने स्नान तथा भोजन किया तब तक केवट की पत्नी ने मेरे कपड़ों को तथा बाद में मेरे बर्तनों को साफ कर दिया। ★ कितनी सेवा कितना आदर, कितना सद्भाव पूर्ण व्यवहार। एक बार फिर रामकथा दिमाग में कौंध गई। केवट भी बार-बार राम बनगमन की चौपाई कह कर उतराई की याद दिला रहा था। चलते समय उसने तालाब से एक टोकरी ताजा सिघाड़ा लाकर मेरे सामने रख दिया। नहीं नहीं कहने पर भी मुझे कुछ लेना ही पड़ा। बातों के दौरान मालुम हुआ कि यह तालाब उसने गांव के एक बड़े आदमी से सालाना लगान पर लिया था। तथा सिघाड़ा बेचकर ही अपने परिवार का भरण पोषण कर रहा था।

केवट परिवार से विदा लेकर मैं आगे बढ़ गया। मन पर उनके निष्कपट व्यवहार की अमिट छाप छूट गई। जबलपुर पहुंचते पहुचते शाम के चार बज गए। मुझे मालूम था कि मेरे गांव के श्री श्यामविहारी सिह वहां कोयला खान भविष्यनिधि कार्यालय में कार्यरत है। उनसे मिलने जब मैं वहां पहुचा तो यह जानकर बड़ी निराशा हुई कि उनका स्थानान्तरण हो चुका था। गांव के ही एक दूसरे सज्जन श्री बालचन्द जी से भेंट हुई और उन्होंने जो स्वागत तथा सत्कार किया कि श्यामविहारी सिह की अनुपस्थिति विल्कुल ही नहीं खलीं। श्री बाल-चन्द कां अपने सद्व्यवहार के कारण वहाँ विशेष स्थान है। विभिन्न प्रान्तों के लोग वहा परिवार की तरह रह रहे थे। कार्यालय तथा कार्यालय के बाहर सब जगह घर जैसा वातावरण मिलां जिसने मुझे बहुत ही प्रभावित किया। श्री बालचन्द जी ने सभी कार्यकर्ताओं से मेरा परिचय कराया। श्री धर्मदेव सिह, अधीक्षक ने विशेष दिलचस्पी लिया। उन्होंने स्थानीय "नवीन दुनियाँ" तथा "नव भारत" पत्रों को मेरा इन्टरब्यू दिलवाया जिन्होंने दूसरे दिन मेरे कार्यक्रमों तथा मेरी यात्रा से सम्बन्धित समाचारों को बड़े ही रुचिपूर्ण तरीके से प्रकाशित किया।

'नवीन दुनिया' के प्रधान सम्पादक श्री सुन्दर शर्मा से मुझे विशेष प्रोत्साहन मिला। मैं जब तक जबलपुर में रहा मुझे ऐसा लगा कि मैं अपने घर में हूं।

जबलपुर से १५ किलोमीटर दूर भेड़ाघाट नाम का स्थान है जहाँ एक विचित्र झरना है। नदी की धारा एक स्थान पर आकर सं ... फीट गहरी खाइ में गिरती है। एक अजीब हरहराहट की आवाज और खाई से उठती हुई पानी की फुहार। ऐसा लगता है कि धुआं उठ रहा हो। इसीलिए इसे ★ धुंआधार कहते हैं। जब वहां पहुंचा तो भूल गया कि मैं कौन हूं और मुझे कहां जाना है। देर तक बैठा देखता रहा। जब चेतना लौटी तो वापस हुआ। रास्ते में चौसठ जोगिनी का मन्दिर है। असंख्य खंडित मूर्तियां अपनी प्राचीन कला तथा आततायियों के अत्याचार का इतिहास कह रही हैं अपनी मौन वाणी से। कुछ दूर और आपस आने पर संगमंमर की चट्टानों से घिरी धारा मिली नाव पर चले तो एक स्थान विशेष पर पहुचकर यह पता पाना कठिन हो गया कि अब किधर जाना है। इसे वहां के लोग भूल-भुलैया कहते हैं। एक जगह दो पहाड़ियां विचित्र रूप से सठी सी दिखीं। इसे लोगों ने बन्दर कुदान बताया। सारा दृश्य बड़ा ही मनोरम था।

---

★ यहाँ पर यह बता दूं कि स्वयम सेवा सर्वोत्तम सेवा के सिद्धान्त के अनुसार रास्ते में अपना सारा काम मैं स्वयम् करता था। स्टोव तथा खाना बनाने के और बर्तन मेरे साथ रहते थे तथा अपना खाना मैं स्वयं बनाता था। बिस्तर' स्टोव, बर्तन तथा अन्य आवश्यक सामान का सब मिलाकर लगभग १९ किलो वजन। यह सब कुछ बराबर मेरी सायकिल पर रहा। काशी में ही मैंने १५०० ( का एक ट्रैवेलर चेक बनवा लिया था क्योंकि राह में किसी से एक पैसे की भी सहायता लेना अपने स्वाभिमान पर चोट होता।

जबलपुर का मदन महल स्टेशन भी एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है जहां रानी दुर्गावती और औरंगजेब का युद्ध हुआ था।

दूसरे दिन जब मैं चलने लगा तो श्री बालचन्द जी तथा उनके बहुत से साथी मेरे साथ हो लिए और मुझे जबलपुर की सीमा के बाहर नर्मदा तक छोड़ने गए। वहां से वे लोग लौट गए तथा मैं भरे दिल से आगे बढ़ा। पवित्र नर्मदा नदी को देखकर मन भक्तिभाव से भर गया। मैकल शैल सुता, पुन्य सलिला नर्मदा, तेरी महिमा अपार है। शिव ने लोक कल्याणार्थ विष का पान तो कर लिया पर जब वे इसकी ज्वाला से बेचन हो उठे तो शान्ति पाने के लिए कहां कहां नहीं गये? पर कहीं भी शान्ति नहीं मिली। अन्त में वे आम्रकूट -अमरकण्टक पहुचे और इसी नर्मदा में स्नान करने के बाद उनकी ज्वाला शान्त हुई। इक्षा हुई कि एकबार मैं भी स्नान कर लूं पर आगे बढ़ने की इक्षा बाधा बन गई और मैं पावन-सलिला नर्मदा को मन ही मन प्रणाम कर आगे बढ़ गया।

—:—:—

१२-११-७१

नर्मदा पार करने के बाद लगभग १५ कीलोमीटर पर घाट मिला। बड़ी चढ़ाई उतराई थी। घाट लगभग ६ कीलोमीटर का था। चढ़ाई पर मैं सायकिल से उतर कर उसे ठेलते हुए जा रहा था। एक तरफ उतुंग पहाड़िया और दूसरी तरफ सैकड़ों फीट गहरी खाई। इस पर से यदि कोई लुढ़क जाय तो क्या हो? हड्डियों के टुकड़े भी खोजने से नहीं मिलेंगे। कुछ दूर जाने पर देखता क्या हूं कि बन्दरों की एक विशाल भीड़ ऊंचाई की ओर से उतर कर सड़क पार करके खाइ में उतर रही है। सारे बन्दर नीचे एक शीशम के पेड़ पर इकट्ठा हो रहे

थे । सड़क एकदम अवरुद्ध । सैकड़ों बन्दर रहर चुके थे पर फिर भी
आने वालों का तांता लगा हुआ था। मैंने आगे पीछे देखा कोई नहीं
था । कोई ट्रक या बस आदि भी नहीं । मैंने सोचा कि बन्दरों का तांता
टूटे तो आगे बढ़ूं । मन में कौतूहल था कि आखिर इतने बन्दर इकट्ठे
क्यों हो रहे हैं । मैंने साहस बटोरा और बाई की ओर वाले किनारे पर
और आगे बढ़कर नीचे झांका तो देखता क्या हूं कि शीशम के पेड़ से
उतर कर सारे बन्दर एकदम नीचे एक सपाट मैदान जैसी जगह पर
इकठ्ठा हो गये हैं । ऊपर से बिल्कुल खिलौने जैसे दीख रहे थे । असंख्य
बन्दरों की विशाल सभा । इतनी विशाल बन्दरी सभा मैंने आज तक
नहीं देखी थी । ऐसा लगता था कि किसी का मातम मनाया जा रहा हो ।
न मालुम मैं कब तक देखता रहा । मैं बिलकुल भूल ही गया कि मैं
भारत-भ्रमण करने निकला हूं और इस समय एक वीरान जंगल के
बीच खड़ा हूं । इसी समय फिर से बन्दरों का आना शुरू हो गया ।
मुझे वहां से हटना पड़ा । ये बन्दर भी इसी सभा में सम्मिलित होने
के लिए आ रहे थे । बन्दरों में इतनी एकता । आदमी कब एक होगा ?

ॐ

# २ संत विनोबा आश्रम में १४ घंटे

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदिवा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समा विशतु गच्छतु वा यथेष्टम ।
अद्यैव वा मरण मस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात् पथः न विचलन्ति पदं सधीराः ।

१३-११-७१

इधर कोई उल्लेखनीय चीज देखने को नहीं मिली जैसा पीछे मइहर में मिली थी। शारदा देवी का मन्दिर। करीब पांच सौ सीढ़ियां चढ़कर जाइए तो ऊपर पहाड़ी पर शारदा माता का मन्दिर मिलेगा। महोबे के आल्हा और ऊदल हर साल यहां पूजा करने के लिए आते थे। मइहर तक मुझे सरयूपारीण ब्राह्मण मिले। प्रायः दो सौ वर्ष पहले इनके पूर्वज इधर आए थे और इधर के ही हो गये। फिर भी इनके रीति-रिवाज हम लोगों जैसे ही हैं। ऐसे ही एक सरयूपारीण ब्राह्मण से भेंट हो गई थी। उन्होंने ही शारदा देवी का मन्दिर तथा अन्य स्थान दिखाया। मइहर में मैं ११० वर्षीय विख्यात संगीतज्ञ पद्मभूषण खां साहब अलाउद्दीन खां से मिलकर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर चुका था।

उस समय शाम के साढ़े चार बजे थे। मैं मध्य प्रदेश के छपरा कस्बे के पास पहुंच गया था। मेन रोड पर ही बाजार लगा हुआ था। रात्रि विश्राम के लिए मैं प्रायः पुलिस स्टेशनों पर रुका करता था। पूछने पर मालूम हुआ कि यहां का पुलिस स्टेशन दूर है अतः मैंने समीप ही कहीं रात काट देने का निश्चय किया। पास ही एक राजकीय दफ्तर था।

अधिकारी महोदय भी वहीं रहते थे। मैं वहीं पहुंच गया। उस समय अधिकारी महोदय अपने मित्रों के साथ ताश खेल रहे थे। मैंने उनसे प्रार्थना किया कि रात्रि विश्राम के लिए थोड़ी सी जगह का प्रबन्ध कर दें पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। मैंने कई बार उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्टा किया पर सब बेकार। न तो वे ही और न उनके अन्य मित्र ही किसी को मेरी ओर देखने की फुरसत नहीं थी। मैं लगभग १ घंटा वहीं खड़ा रहा और उनकी बेगुरौती और अपनी बेबसी को कोसता रहा। जब शराब की दुर्गन्ध से नाक फटने लगी तो मैं बाहर बरामदे में आ गया। कड़ाके की ठंड और हड्डियों को भी कंपा देने वाली सर्द हवा। अब जाऊं तो कहां ? मैंने वहीं एक तरफ साइकिल खड़ा कर दिया और अपना बिस्तर खोलकर किसी तरह सिकुड़ कर पड़ रहा। दिन भर का थका था अतः नींद आ गई पर कब तक ? जब ठंड के मारे नींद खुली तो आधी रात से केवल डेढ़ बज रहे थे। मारे ठंड के न बैठ जाय न सोया जाय आफिस का ताला बन्द हो चुका था। और वहां कोई भी नहीं था। सारी रात ठिठुरते बीती। कभी कभी जी में आता था कि क्यों घर से निकला ? क्या जरूरत थी ? पर सवेरा होने पर विचार बदल गया। हर सुबह एक नई चेतना लेकर आती है। सूर्य की किरणों के साथ ही फिर नवीन उत्साह मन में भर गया। वैसे अब तक कष्ट और अपमान सहने की काफी शक्ति भी मिल चुकी थी।

छपारा पीछे छूट चुका था। सड़क के दोनों ओर फैले हुए धान के खेत। कहीं केवल बाजरे तथा अरहर के खेत। बालियों से लदे हुए बाजरे के प्लांट झुकी हुई बाजरे की बालियां विनम्रता का प्रतीक लग रही थीं। राह में पास के ही एक गांव 'अतोर' के प्रधान मिल गये। उन्होंने बताया कि अब इधर प्रायः दोनों फसलें होने लगी हैं क्योंकि सिंचाई के साधन उपलब्ध हो गये हैं।

कुछ दूर बाद सिवनी के जंगल शुरू हो गये। सुनसान जंगल

और नीचे में राजपथ। चारों ओर सन्नाटा जो कभी-कभी बस तथा ट्रक आने जाने से भंग हो जाता था पर फिर वही प्रकृति का चिर गान। मैं अपने आप में मगन चला जा रहा था। शहर के कोलाहल से दूर प्रकृति की गोद में कितना आनन्द है। कभी कभी जब मन ऊब जाय तो मनुष्य को प्रकृति की शरण में जाना चाहिए। बड़ी शांति मिलती है। मैं यही सब सोचते हुए जा रहा था कि पास की झाड़ियों से एक तीखी आवाज आई और मेरा ध्यान भंग हो गया। देखा कि एक बहुत बड़ा गीदड़ बन्दर के एक मासूम बच्चे को मुंह में दबाए भाग रहा है और बच्चा जार बेजार चीख रहा है। बन्दरिया अपने बच्चे को बचाने के लिए अपने नाखूनों तथा दांतों से गीदड़ की पीठ पर खूनी वार कर रही है तथा उसे छुड़ाने का प्रयास कर रही है। बच्चे की चीख सुनकर जंगल के और भी बन्दर गीदड़ के पीछे गुर्राते हुए दौड़ पड़े। बन्दरों में बड़ी एकता होती है। तथा बच्चों के प्रति इनके मन में अथाह प्रेम होता है। सुना है बन्दरिया अपने मरे हुए बच्चे को भी तब तक नहीं छोड़ती जब तक उसकी लाश सड़कर बदबू न देने लगे। प्रत्यक्ष उदाहरण मेरे सामने था। मौत बच्चे को घसीटे लिए जा रही थी और ममता उसका पीछा कर रही थी। बड़ा रोमांचकारी दृश्य था। मौत और ममता ममता और मौत। लेकिन अन्त में मौत को हार माननी पड़ी। ममता जीत गई बन्दरिया की मार से आजिज होकर तथा अपने पीछे बन्दरों की सेना को देखकर गीदड़ हिम्मत हार गया। मौत ने घुटने टेक दिए गीदड़ बच्चे को छोड़कर झाड़ियों में लुप्त हो गया। आकुल ममता ने आहत बच्चे को अगाध स्नेह के साथ समेट लिया। बच्चा मां की गोद में चिपक गया। मां की गोद में भय कैसा? मेरा मन अजीब आनन्द से भर गया।

१६-११-७१

पिछली बार जंगल विभाग के कर्मचारियों के साथ चेक पोस्ट

पर बितानी पड़ी। इन लोगों ने बहुत आदर सत्कार किया। बा
नींद सोकर सबेरे उठा तो मन बहुत प्रसन्न था। पास की
दूध लेकर काफी बनाया और पीकर चलने की तैयारी करने
रविवार का दिन था रास्ते में बहुत से सैलानी मिले पूछने पर
कि ये लोग रामटेक जा रहे थे। राम टेक अथवा राम की
यहां पर राम ने विशाल हड्डियों का ढेर देखकर मुनि से इसका
पूछा था। जब मुनि ने बताया कि ये हड्डियां राक्षसों द्वारा मारे
मुनियों की थीं तो राम की आंखें द्रवित हो गई। उन्होंने प्रतिज्ञा
कि राक्षसों का नाश करेंगे। यही है वह स्थान। देखने को इच्छा
हो उठी। मनसर से प्रायः तीन मील की दूरी पर रामटेक की पहा
वहां पहुंचने पर देखा कि बहुत से लोग पिकनिक पर आए हुए
सुरम्य जगह थी। एक स्थान पर 'सीता' रसोई है जहां कहा
कि सीता ने रसोई बनाया था। बड़ी देर तक घूमता रहा। म
दूर भी विदा होना पड़ा। मनसर में अरविन्द आश्रम होते
बढ़ा। यहां संयोगवश मेरी मुलाकात मेरे क्षेत्र के रुद्रपुर के श्री
सिंह तथा एक और सज्जन साही जी से हो गई। इतनी दूर
अपने गांव के समीप के लोगों से मिलकर बड़ा आनन्द मिला।
का भाव भीना आतिथ्य स्वीकार कर मैं आगे बढ़ गया। इन
। द्वारा मुझे अपने गांव के बिलकुल पास के गांव कोहरा के श्री
तिवारी जी का पता चला जो नागपुर मे लकड़ी का व्यवसाय
और भगवान की दया से आज लाखों के मालिक हैं। ना
तिवारी जी के यहां ही ठहरा। तिवारी जी विशेष स्नेह से
मुझे उनके यहां घर जैसा वातावरण मिला। नागपुर में
तियां देखने को मिलीं। इस पत्र ने मुझे अच्छा सहयोग
फोटो के साथ मेरे कार्यक्रमों का समाचार छपा था।

...... तिवारी जी ने एक मन्दिर दिखाया जिसमें विचित्र विशाल मूर्ति थी। 'हरिहर मिलन'। दो सफद हाथी कलात्मक रूप से आपस में मिले हुए थे। एक पर विष्णु थे तथा दूसरे पर सपरिवार शिव। 'हरि-हर मिलन' वैष्णवों और शैवों के बीच समन्वय का प्रयास। नागपुर से थोड़ी दूर पवार नदी के किनारे दमयन्ती के पिता भीमसेन का किला तथा आरवी में रुक्मिणी के पिता का किला जो कभी किला रहे होंगे पर आज तो भग्नावशेष बचे है और अपने प्राचीन गौरव की मौन गाथा कह रहे हैं।

वर्धा पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई। मैं सीधे विनोबा आश्रम में ही पहुच गया। उस समय विनोबा जी आश्रमवासियों को फलाहार करा रहे थे तथा अपने हास्यपूर्ण प्रवचनों से आनन्दित भी कर रहे थे। मेरे पहुंचने पर स्वाभाविक ही सबकी आंखें मेरी ओर उठ गई। उन आंखों मे जो प्रश्न था उसके उत्तर में मैंने अपना परिचय-पत्र विनोवा जी के सामने रख दिया। बड़ी देर तक मेरे रेकार्डों को देखते रहे तथा मेरे कार्यक्रमों की जानकारी लेते रहे। बड़े प्रसन्न थे। वृद्धावस्था के कारण श्रवणशक्ति कमजोर हो गई है अतः उनसे लिखित रूप में बातचीत करनी पड़ी। विनोवा जी ने बहुत प्रश्न किए। बात बात में उन्होंने पूछा कि साथकिल द्वारा भारत भ्रमण करने में मुझे कितने दिन लगेंगे। अपने बारे में उन्होंने बताया कि पैदल भ्रमण करने में उन्हे चार साल लगे थे। उन्होंने अन्त में कहा कि, "आप भारत भ्रमण में निकले हैं बड़ी अच्छी बात है। पैदल आते तो और अच्छा होता।" उनके सचिव जो हर भाषा के विद्वान लग रहे थे; आश्रसवासियों के साथ देर तक मेरे बारे में पूरी जानकारी लेते रहे।। आश्रमवासी मेरे नियम तथा व्यवहार से संतुष्ट लगे। मैंने उस दिन शाम तथा दूसरे दिन सुबह की प्रार्थना सभाओं में गद्‌गद् हृदय से भाग लिया।

विभिन्न प्रान्तों के लोगों में आपस में बड़ा ही मधुर व्यवहार था तथा वे विभिन्न भाषाओं में बात कर रहे थे। बन्धुत्व की विचित्र समा थी। क्यों न हो, जगत विख्यात सन्त विनोबा का आश्रम जो था। विनोबा जी के दो और छोटे भाई है। मझले हैं श्री बालकोबा जी जो उसी आश्रम में रहते हैं। रिषि के समान चेहरे पर अद्भुत योग्यता। इनका व्यक्तित्व भी विनोबा जी की तरह ही प्रभावकारी है। छोटे भाई शिवाजी एलोरी कांचन आश्रम में रहते हैं। शाम से सुबह-सात बजे तक की आश्रम की दिनचर्या ने मुझे बहुत प्रभावित किया। आश्चर्य तो तब हुआ जब मैंने विनोबा जी को इस बृद्धावस्था में भी आश्रमवासियों के साथ बगीचे में श्रमदान करते देखा। मस्तक श्रद्धा से झुक गया। चलने के पूर्व मैं विनोबा जी से विदा लेने गया। उन्होंने बड़े प्रेम से अपनी पुस्तक गीता-प्रवचन की एक प्रति मुझे दिया जिसमें उन्होंने हिन्दी में लिखा, "इसे अपने जीवन में उतारना तथा अपना हस्ताक्षर भी किया। मैंने भारी मन से सन्त का चरण-स्पर्श किया और आश्रम वासियों से विदा लिया।

सर्व शास्त्रमयी गीता सर्व देव मया हरिः,
सर्व तीर्थमयी गंगा सर्व वेद मया मनुः ॥

ॐ शान्ति

—:—

॥ ॐ ॥

## ३. मृत्यु कितनी करीब थी ।

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम् ।
आयुर्परिस्रवति भिन्न घटादिवाम्भो,
लोकस्तथा प्यहि तमाचरतीति चित्रम् ॥

१८-११-७१

'जे·········आ·········ह······' इस शब्द से मैं नागपुर से आधे आंध्र प्रदेश तक चिहुक उठता था । यह शब्द सभी गाड़ीवान तथा हलवाहे बैलों को हांकने के लिए प्रयोग में लाते थे । इस इलाके में कई प्रकार के हल देखने को मिले जो दो बैलों से चलते थे । एक हल ऐसा था जिसमें तीन तावे लगे होते थे । तथा वह एक बार में एक गज चौड़ी जमीन जोतता था । इस क्षेत्र में प्रायः लाल रंग के बैल ही दिखाई दिए । भैसों की सींगें तलवार जैसी थीं, बिल्कुल राणाप्रताप टाइप ।

आंध्र का जंगली क्षेत्र शुरू हो गया था । यह सिहरन पैदा करने वाली घटना आंध्र प्रदेश के सुरक्षित जंगलों की है । चढ़ाई पर चढ़ता जा रहा था । घने जंगलों में जगह-जगह पोस्टर लगे हुए थे जिनपर लिखा था, "वन्य जीवों को न मारें और अपने को सावधान रखें" और भी अनेक हिदायतें थीं जिनपर मैंने जल्दी जल्दी जंगल पार करने की धुन में ध्यान नहीं दिया । घनघोर जंगल में दिन में भी अंधेरा जैसा लगता था । सुनसान भयावने जंगल में आदमी की कहीं गंध भी नहीं थी

विचित्र डरावनी आवाजें सुनाई दे रही थीं। वैसे साहस ने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा। पर उस भयावने जंगल में अकेला होने से दिल में कुछ दहसत अवश्य महसूस हो रही थी। मैं अब एक घाट में चढ़ाई पर था। सायकिल से उतरकर उसे ठेलकर चढ़ता जा रहा था कि पीछे सूखी पत्तियों की चरमराहट की आवाज आई। मन इतना शंकित था कि हर आहट पर चिहुक उठता था। मुझे पहले ही बता दिया गया था कि शाम को जंगल पार करते समय हाथ में टार्च अवश्य होना चाहिए। मैं हाल ही में भराई हुई तेज रोशनी वाला 'एवरएडी' टार्च लिए हुए था। जब मैंने उस तरफ रोशनी फेंका जिधर से पत्तों के चरमर की आवाज आई थी तो पहाड़ी पर मैंने जो कुछ देखा उसे देखकर दिल की धड़कन एकाएक तेज हो गई। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। लगभग दो मिनट तक एक हाथ से सायकिल संभाले तथा दूसरे हाथ से लक्ष्य पर टार्च की रोशनी फेंकते हुए खड़ा रहा। मेरे सर से करीब १० गज की दूरी पर एक चीता अपनी आँखों को मिचकाते हुए खड़ा था। वह बिना कुछ हरकत किए बैठ गया। स्थिति से मुकाबला करने की चिन्ता मेरे दिमाग में तेजी से चक्कर काटने लगी। मैं उसी अवस्था में एक हाथ से सायकिल ठेलता हुआ तथा दूसरे हाथ से चीते के मुह पर लगातार रोशनी डालते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। मैं लगभग १० पन्द्रह गज चला हूँगा कि एक ट्रक की घरघराहट की आवाज सुनाई दी। तब तक मैं अपने आप को पूर्ण नियन्त्रण में कर चुका था। ट्रक भी चढ़ाई पर था। अतः उसकी आवाज बड़ी तेज थी तथा उसकी तेज रोशनी घाटी में भर रही थी। आवाज तथा रोशनी के कारण चीता झाड़ियों में कहीं गायब हो गया। अब जाकर मेरी साँस सामान्य हुई। मैंने ललाट का पसीना पोंछा तथा चारों तरफ आँखें घुमाकर स्थिति का ज्ञान किया। मैं बार-बार यही सोचता रहा कि आखिर चीते ने वार क्यों नहीं किया। मौत कितनी करीब थी। मुझे लगभग छूते हुए बगल से निकल गई। मैंने

भगवान को लक्ष लाखें धन्यवाद दिया और मेरे पैर अनायास ही पैडिलों पर तेजी से घूम पड़े।

१९-११-७१

आंध्र प्रदेश की महबूब घाटी, जिसकी ऊंची पहाड़ियों की अपनी अलग शान है। ऊंचाई से देखने पर नीचे के दृश्य बड़े विचित्र तथा हृदय को छूने वाले दिखाई दे रहे थे। इस क्षेत्र में दो जातियों के लोग विशेष रूप से देखने को मिले। 'लम्बाड़ा और मथूरी। लम्बाड़ा स्त्रियां दोनों बाहों में कलाई से कांख तक एक विशेष प्रकार की चौड़ी चूड़ियां पहने हुए थी तथा उसके कानों में तीन तीन लच्छों वाले झुमके लटकते रहते थे। पूरा सर कौड़ियों के गहने से ढका हुआ तथा घांघरा घुटने तक। ऊपर कशीदा काढ़ी हुई शीशों से जड़ी चोली जो केवल सामने छाती को ढकती थी। पीछे बिल्कुल खुला केवल दो धागों से बंधी हुई। पुरुष लगोटी और हाफ कमीज के किस्म की कमीज तथा सर पर पगड़ी धारण किये हुए। इनका रंग प्रायः काला था। मथूरी जाति की स्त्रियां अपेक्षाकृत गोरी थीं। नीचे ये भी घांघरा ही पहने थीं पर ऊपर सर पर लगभग एक बालिश्त की लकड़ी की फिट किए हुई थी तथा उस पर एक हाथ की ओढ़नी रखे हुए थी। ओढ़नी से पूरा सर ढका रहता था। हाथ इनके नगे थे पर पावों में घुंघरू थे जो चलते समय एक लयपूर्ण ध्वनि करते रहते थे। इस जाति के पुरुष चेक की लुंगी धारण किए हुए थे। ये दोनों ही जातियां खानाबदोष हैं। अब थोड़ी हीं बची है। 'लम्बाड़ा' लोग कभी राजपूताने मे रहते थे। महाराणा प्रताप के साथ निकले थे कि स्वतन्त्र होकर ही फिर घर को वापस जायेंगे पर जाना नहीं हो सका और आज भी ये जंगलों में भटकते फिरते हैं।

अब उतराई शुरू हो गई थी। लम्बी चढ़ाई के बाद जब आपकी

साइकिल वैसी ही लम्बी उतराई पर आ जाय तो बिल्कुल स्कूटर का ही आनन्द आएगा। पेडिल मारने की कोई आवश्यकता नहीं। केवल बैलेंस साधकर बैठे रहिए। चढ़ाई की सारी थकान मिट जायगी। यह अनुभव मुझे प्राय: हुआ क्योंकि जंगलों और घाटों में ऊँची-नीची सड़क ही मिली मैं ध्यान मग्न चला जा रहा था कि मेरी दृष्टि एक नंग-धडंग आदमी पर पड़ी जो सड़क के घुमाव पर ठीक बीच में सोया हुआ था। सड़क एक लम्बा चक्कर लेकर नीचे जा रही थी। मैं उसे बचाकर ज्यों ही आगे बढ़ा कि वह उठकर लगा जोर-जोर से कुछ बोलने। उसकी बातें मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आई। मैंने उसकी बातों पर ध्यान दिए बिना आगे बढ़ना जारी रखा। वह आदमी बोलता ही जा रहा था। अब चक्कर पूरा करके सड़क ठीक उसके नीचे आ गई थी और वह एक तरह से मेरे सर पर था। उसे पता नहीं क्या सूझा कि वह मेरी ओर बड़े-बड़े पत्थर उठाकर फेंकने लगा। अगर एक भी पत्थर मुझे लग जाता तो मैं बुरी तरह घायल हुए बिना नहीं रह सकता था। मैं तो किसी तरह बच गया पर मेरी सायकिल उसकी मार से नहीं बच सकी। पागल के पत्थरों के दाग आज भी उसके मडगार्ड पर अंकित हैं जो उस घटना की याद दिला रहे हैं।

ॐ

# ४. भूत प्रेतों में रात्रि

सशङ्ख चक्रं सकिरीट कुण्डलं
सपीत बस्त्रं सरसी रुहेक्षणम ।
सहार वक्षः स्थल कौस्तु भश्रियं,
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम ।।

२१–११–७१

आंध्र प्रदेश में मैंने प्रायः लोगों को एक विशेष प्रकार की हरी पत्तियों का चुरुट बनाकर पीते देखा । इधर होटलों तथा दूकानो का सारा प्रबन्ध लड़कियां ही कर रही थीं । रास्ते में सड़क के दोनों ओर रेंड़ी, के बड़े-बड़े प्लाट मिले । रेंड़ी की खेती इधर अधिक होती है । राष्ट्रीय पथ-७ जिससे होकर मुझे रामेश्वरम् तथा कन्या कुमारी तक जाना था, इधर काफी चौड़ा और सांफ था । लाल धरती शुरू हो गई थी । मैं जैसे-जैसे आगे बढ़ता था, जमीन और भी लाल होती गई । हैदराबाद के आसपास के इलाकें में अधिकतर अंगूर की खती देखने को मिली । पान के खेतों की तरह अगूंर के मीलों लम्बे प्लाट फैले हुए थे । भूमि ऊंची नीची ही थी और हलके जंगलों की शोभा निखर रही थी इधर बैल बड़े स्वस्थ दीख रहे थे ।

आदीलाबाद में ही मुझे सत्यप्रकाश जी मिल गए थे जिन्होंने मुझे बताया था कि उनके पिता जी श्री राजकिशोर पाण्डे हैदराबाद में रहते है । पं० राजकिशोर जी हमारे गांव के पार्श्ववर्ती गांव सहियां के निवासी है जो अब हैदराबाद में एक तरह से बस गए है । इनका पूरा परिवार हैदराबाद में ही है । यहां इनकी भव्य कोठी है, बच्चे ऊंचे-ऊंचे पदों पर है तथा स्वयम् उस्मानियां विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है तथा हिन्दी प्रचार सभा में शिक्षा मंत्री हैं । पाण्डेय जी बड़े ही अपनत्व से मिले ।

सर्व प्रथम मैं हिन्दी मिलाप प्रेस गया वहां के सम्पादक सरदार जी ने बड़े ही बहादुराना शब्दों में सराहना की तथा दूसरे दिन मेरे फोटो के साथ मेरे कार्यक्रमों का समाचार अपने पत्र में प्रकाशित किए। इसके बाद मैं हिन्दी प्रचार सभा में गया। वहां के अधिकारियों ने भी मेरी साहसिक यात्रा में पर्याप्त दिलचस्पी लिया। हिन्दी प्रचार सभा के कर्मठ कार्य कर्त्ता श्री ओझा जी ने मुझे नगर भ्रमण कराया। निजाम शाही के समय की बनी हुई अलीशान इमारतें तथा मनोहर जलाशय हैदराबाद की विशेषताएं हैं। नगर से बाहर थोड़ी दूर पर गोलकुण्डा के किले के खण्डहर दिखाई दे रहे थे। हैदराबाद में मुझे उस्मानियां विश्वविद्यालय के डा० राम निरंजन पाण्डे जी से मिलने का सौभाग्य मिला। विद्वत्ता के साथ-साथ आप एक महर्षि की आभा से विभूषित हैं। आपने मुझे पुत्रवत प्यार दिया ऐसे ही महापुरुषों के प्रोत्साहन और आशीर्वाद से मुझे शक्ति मिलती थी। हैदराबाद के अपने शुभ चिंतकों की याद मेरे हृदय में सदा बनी रहेगी।

२३-११-६१

मैंने भूत प्रेतों में कभी विश्वास नहीं किया। लेकिन यह घटना आज भी मेरे दिल में सिहरन पैदा कर देती है। उस शाम में हैदराबाद से काफी दक्षिण एक जंगल से गुजर रहा था। एक सभ्य से दीखने वाले सज्जन से मैंने समीप के पुलिस स्टेशन का पता जानना चाहा जहां मैं रात्रि विश्राम कर सकूं। उन्होंने मुझे बताया कि पुलिस स्टेशन आगे ही है। मैं आगे बढ़ गया-बढ़ता गया पर कहीं मनुष्य नामधारी जीव की गंध भी नहीं मिली-पुलिस स्टेशन की बात कौन करे। उस सभ्य दिखाने वाले सज्जन ने गलत सूचना दी थी। अब मैंने महसूस किया कि मुझे धोखा हुआ है। भले आदमी ने हमें परेशान क्यों किया? समझ में नहीं आया। "लखि सुवेस-जग बंचक जेऊ। वेष प्रताप पूजियउ तेऊ" और मैंने उन पर भरोसा कर लिया। खैर अंधेरे में मैंने आगे बढ़ना उचित नहीं

समझा। थोड़ी दूर पर मुझे एक छोटी सी झोपड़ी दिखी जो पहाड़ी की जड़ में बनी हुई थी। अनजान सुनसान जंगल में एक छोटी सी झोपड़ी देख कर मन में एक आशा तो कौंध ही गई। मैं वहां पहुंच गया। अन्दर एक मनहूस सा छोटा दिया जल रहा था। झांक कर देखा तो दंग रह गया वहां एक बूढ़ा जो अब हड्डियों का कंकाल मात्र था, बैठा था। बदन पर सिर्फ एक लंगोटी, सर तथा दाढ़ी के बाल बुरी तरह बढ़े हुए, नाखून लम्बे-लम्बे तथा मुंह में गिनती के २-४ पीले पीले दांत सब मिलाकर एक भयंकर आकृति। देख कर सिहर गया। झोपड़ी क्या थी घर और दूकान के बीच की कोई चीज थी। तीन चार शीशे की छोटी-छोटी गिलासें और एक गंदी केतली—चाय पानी का काम चलाऊ प्रबन्ध। भूत को देखकर पीछे नहीं मुड़ना चाहिए नहीं तो वह पकड़ ही लेगा—यह मैं जानता था, अतः मैं साहस बटोर कर झोपड़ी में घुस गया। कंकाल ने मुझे घूर कर देखा और अपनी विचित्र भाषा में कुछ कहना शुरु किया। उसकी एक भी बात मेरी समझ में नहीं आई। अन्दर से मैं एकदम डर गया था पर बाहर से नहीं डरने का सफल अभिनय करता जा रहा था। मैंने उसे हाथ जोड़कर नमस्कार किया और रात भर विश्राम करने के बारे में उसे बड़ी कठिनाई से समझा पाया। मैंने उससे चाय मांगा और थोड़ी थोड़ी करके कुछ देर में एक रुपए की चाय पी गया। एक भूत की चाय पता नहीं और क्या होगा—भगवान जाने मेरी बातें वह पूरी तरह समझा कि नहीं और मुझे रात भर ठहरने की आज्ञा दिया कि नहीं—सो मैं नहीं जानता लेकिन जब मैंने सायकिल में ताला लगा कर अपना बिस्तर लगाने का उपक्रम करने लगा तो उसने कोई विरोध नहीं किया अतः मैंने मान लिया कि वह मुझे रात में ठहराने के लिए राजी है। एक भूत के साथ रात बितानी थी-भागने से पकड़ लेगा। जीवन का एक नया अनुभव था। अब यह विश्वास कि भूत प्रेत का कोई अस्तित्व नहीं हैं—धीरे धीरे टूट रहे थे। मैंने एक टूटी बेंच पर अपना बिस्तरा लगा लिया और किसी तरह लेट गया। इशारे पर ही बूढ़े से बात होने लगी क्योंकि मैं भूतों की भाषा नहीं जानता था।

उसकी विचित्र हरकतों को देखते देखते लगभग बारह बज गए। आस पास की पहाड़ियों की छाया झोपड़ी से साफ दीखती थी। भूतों के बारे में नाना प्रकार की कल्पनायें करते करते मेरी आँखें ढंपने लगीं। मुझे ऐसा लगा कि सामने की पहाड़ पर आग जल रही है और उसके आस पास बूढ़े जैसी आकृति वाले ही कुछ कंकाल चल फिर रहे हैं। मेरी नींद गायब हो गई। पर फिर भी मैंने अपनी आंखों को मल कर देखा कि कहीं यह स्वप्न तो नहीं है। पर यह स्वप्न नहीं था, एक सत्य था जो हमारे सामने था। मैं एकटक उधर हीं देख रहा था। कुछ देर बाद वहां की आग बुझ गई। यह सब होते होते तीन बज गए। मैं सो भी रहा था और नहीं भी सो रहा था। ऐसी ही अर्धनिद्रावस्था में मुझे ऐसा लगा कि पास से कुछ आवाजें आ रही हैं अब मैं एकदम जाग गया। सामने बीस तीस गज के फासले पर कम से कम दस काले काले भूत सर पर भारी गट्ठर रखे झोपड़ी की ही ओर आ रहे थे। मेरी हालत मारे डर के खराब होती जा रही थी पर स्थिति से मुकाबला भी करना था अतः मैं धीरे धीरे अपने को तैयार भी कर रहा था। मैं उठकर बैठ गया। सारे भूत झोपड़ी के पास आ गए। सब के सर पर बहुत बड़े बड़े गट्ठर थे। उन्होंने उमे जमीन पर इस प्रकार रखा जैसे कोई तिनका रख रहे हों। मैं उनकी इस अप्राकृतिक शक्ति को देखकर दंग रह गया। उनके भूत होने में अब रंचमात्र भी संदेह नहीं रहा। बूढ़ा जो सो गया था अब जाग गया। उसने भूतों से कुछ कहा और सारे भूत एक एक करके झोपड़ी में आ गए। और मेरे करीब बैठते गए। मैं भी सन्नद्ध होकर बैठ गया और सोचने लगा कि भूत कब और किस तरह एक इन्सान पर आक्रमण करते हैं। सारे भूत विचित्र हरकतें कर रहे थे। और अपने शरीर को ऐंठते से लगते थे। आपस में बात करते जाते थे और बीच बीच में मुझे घूर भी लेते थे। जब बड़ी देर तक कोई आक्रमण नहीं हुआ तो मैं थोड़ा थोड़ा आश्वस्त हो गया। सारे भूत बूढ़े जैसे [illegible]। एक अन्तर अवश्य था। बूढ़े

के सर और दाढ़ी के बाल लटक रहे थे जब कि अन्य भूतों के बाल प्रायः खड़े थे। कुछ देर बाद बूढ़े ने चाय बनाकर सभी भूतों को पिलाया। मुझे भी एक गिलास चाय दी गइ। अब तक मेरा भय बहुत हद तक मिट चुका था। भोर भी होने लगी थी। मैंने भूतों के चेहरों को बारीकी से देखा। सबके चेहरे पर एक मासूमियत थी लगता था जैसे ये बड़े ही हीं गरीब भूत हों। मैंने एक की तरफ कुछ इशारा भी किया जो मात्र हंसकर रह गया। भूत हंसते भी हैं यह मेरे लिए एक सर्वथा नइ बात थी। मैंने मन में सोचा कि यदि इनसे बचकर निकल गया तो सुबह लोगों को बताऊंगा कि मैंने भूत को हंसते हुए देखा है। भूतों की यह सभा चार बजे तक चलती रही और मैं भी उनके बीच बैठा रहा। इसके बाद सभी भूत उठे और एक एक करके झोपड़ी से बाहर हो गए। उन्होंने अपने भारी गट्ठरों को फिर बड़ी ही आसानी से सर पर उठा लिया और धीरे-धीरे पहाड़ियों में विलीन हो गए।

भोर का उजाला चारों ओर फैल चुका था। रात की भयंकरता समाप्त हो चुकी थी। और पक्षियों का शोर शुरू हो गया था। भूतों का राजा सो गया था। मैं उठा, जल्दी जल्दी अपना सामान समेटा और भूतराज को मन ही मन नमस्कार कर झोपड़ी से बाहर आ गया। मुझे जितनी जल्दी हो सके यहां से भाग जाना था।

बहुत आगे जाने पर मैं एक शिक्षा संस्थान में रुका। वहां मैंने लोगों से रात की घटना के बारे में बताया। लोग खूब हंसे। बाद में हिन्दी पण्डित ● ने बताया कि वे भूत नहीं गड़ेरिए (भेंड़िहार थे। ये

● दक्षिण में सभी शिक्षा संस्थाओं में हिन्दी पढ़ाने वाला एक अध्यापक रहता है जिसे वहां पर 'हिन्दी पण्डित' के नाम से जाना जाता है।

लोग बड़े ही गरीब हैं । भेड़ पालते हैं और उनका ऊन नोंचकर गुज
चलाते हैं । रात मे उन्होंने अपने सर पर जो बड़ा बड़ा गटठर लिया
वह ऊन था जिसे वे लोग पास के बिक्री केन्द्र पर ले जा रहे थे।
झोंपड़ी में मैं ठहरा था वह एक मामूली होटल के किस्म के दूकान
जहां ये गड़ेरिये यदा-कदा चाय पीते हैं। इसके मालिक वही भूतराज
जिनके साथ मैं पूरी रात रहा । जब मैंने पूरी घटना पर फिर से वि
किया तो हंसी आ गई । काले भूत, भूतराज नहीं गड़ेरिए-भेड़िहार
भी कितना मूर्ख बना। वैसे गोरे आदमी इधर शायद हीं दिखें।

२५-११-

करनूल से कुछ दूर उत्तर मैंने कृष्णा नदी को पार कि
कृष्णा नदी का बांध बहुत बड़ा है और भारतीय इंजीनियरों की कला
का एक नमूना है । इसी के द्वारा रास्ते में दूर-दूर तक नहरें मिल
थीं जिनसे ज्वार, तम्बाकू, धान और गेहूं के खेत सरसब्ज हो रहे
बहुत से परिश्रमी किसान डोर द्वारा भी धान के खेतों में पानी चला
थे। करनूल अब ६ किलोमीटर था। यहां मैंने तुंगभद्रा को पार किया
तुंगभद्रा की नहरों द्वारा भी सिचाई होती थी। जगह-जगह धान
फसलें लहलहा रही थी । करनूल के आस पास मूंगफली की खेती अ
दिखी । मूंगफली कटने का 'सीजन' था । बड़े ही विचित्र हलों द्वा
कटाई हो रही थी । हवा कुछ गरम हो चली थी । बदन पर कपड़ा र
कठिन हो रहा था । इस समय मैं लाल धरती वाले देश मे चल रहा
एक उपयुक्त स्थान देखकर मैं भोजनादि का प्रबन्ध करने के लिए
गया । हवा से बड़ी परेशानी हो रही थी । स्टोव बुझ-बुझ जाता
जब चला तो हवा के कारण आगे बढ़ना कठिन हो गया । मैं दक्षिण
में बढ़ना चाहता था और हवा मुझे उत्तर की ओर ढकेल रही थी।
घर की भी याद बहुत आ रही थीं । मैं गुनगुना उठा—

हवायें जा रही उत्तर में तो मेरा पयाम कह देना,
मेरे प्रिय वन्धुओं से बंदगी परनाम कह देना।
प्रभू की है दया शुभ कामनायें गुरुजनों की है,
मेरे प्रिय पथ के चेतक हरकुलिस का नाम कह देना।

भाषा की कठिनाई मुझें अपनी पूरी यात्रा में कहीं नहीं अखरी। जहां कहीं कुछ परेशानी महसूस भी हुई तो मैंने अपने व्यवहारों से पाटने की कोशिश किया और सफल भी हुआ। पामीडी कस्वे में मुझे कुछ उत्साही युवक मिले। ये सभी किसी कारखाने के कार्यकर्ता थे। अधिकतर लोग तेलगू में ही बातें कर रहे थे पर कुछ लोग कभी-कभी टूटी-फूटी हिन्दी भी बोल देते थे। मुझे एक सुखद आश्चर्य की अनुभूति हुई। मुझसे बातें हुई तो वे बहुत प्रभावित हुए। और मेरे बारें में पूरी जानकारी लेने लगे। बात बात मे ही अनायास मेरे मुंह से निकल आया, "तेलगू जिन्दाबाद" बस फिर क्या था। वे सबके सब एक स्वर चिल्लाने लगे, "हिन्दी तेलगू जिन्दाबाद", "तेलगू हिन्दी जिन्दाबाद"। गगन भेदी नारों से वातावरण गूंज उठा। काफी भीड़ इकट्ठी हो गई। उत्तर भारतीयों की भी वहां कमी नहीं थी। वे सब तो मुझसे सहानुभूति रखते ही थे पर आंध्र प्रदेश वालों की भावनाओं ने मुझे विशेष प्रभावित किया। खास कर जब 'हिन्दी तेलगू जिन्दाबाद' का तुमुलनाद हुआ तो मैं हर्षातिरेक से कुछ क्षणों के लिए एकदम विह्वल हो गया। सारी भीड़ से एक एक करके हाथ मिलाकर ही मैं आगे बढ़ सका।

बंधुत्व से परिपूर्ण यहां कि संस्कृति न्यारी हैं,
मां भारती के हर क्षेत्र में हिन्दीं की क्यारी है।
क्या भाव थे क्या चाव थे इस राष्ट्र भाषा से,
ऐसी विमल भाषा सहज हिन्दी हमारी है॥

पेन्टा कुन्डा के एगमा पल्ली स्थान में मुझे एक गुजराती भाई मिल गए। जंगलों के बीच उनका एक बहुत बड़ा प्लाट था जिसमें उनका एक प्लास्टिक का कारखाना भी था। वहत्र आग्रह पूर्वक मुझे अपने यहां ले गए। बड़ी आवभगत करते के बाद मुझे विदा किए। इधर जगह-जगह बांध बना कर पानी रोका गया था। जो तालाव की तरह लगता था। जमीन लाल थी अतः पानी भी बिलकुल लाल, एकदम रक्त जैसा था। उन्हें देखकर बचपन में पढ़ी लालसागर तथा रक्त सागर की कहानियां याद आ गयीं। इन तालावों से यहां सिचाई की पूरी व्यवस्था है जिससे धान मक्का, तथा मड़ुआ आदि की अच्छी उपज होती है। पीने के लिए इन्हीं रक्त तालावों का पानी काम में लाया जाता है। मुझे जब पहले पहल पानी पीना हुआ तो बड़े ही असमंजस में पड़ गया। खून जैसा पानी पीने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मजबूर होकर पीना पड़ा। हालाकि पीने पर स्वाद में कुछ विशेष अन्तर नहीं जान पड़ा। तालाव का पानी देखने मे लाल जरूर लगता था पर वहीं हाथ में उठाने पर कुछ हलका हो जाता था। डरते-डरते कपड़ों को भी धोया पर वे भी सफेद ही निकले। इधर लम्बे मुंह वाले बन्दर बहुत थे। ऐसे बन्दर मुझे कलकत्ता के चिड़ियाघर में ही देखने को मिले थे। जानवरों के सींग एकदम सीधे और लम्बे थे।

दो दिन से मैसूर की सीमा में चल रहा था। बंगलौर पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। शहर बड़ा ही शानदार लगा। यहां मुझे पहले बार अन्डर ग्राउन्ड सड़क देखने को मिली।

बंगलौर में सर्व प्रथम दक्षिण की प्रसिद्ध पत्रिकाओं "दी इन्डियन एक्स्प्रेस" और 'दी हिन्दू' को अपना इन्टरव्यू दिया। बाद में पंडित राज-किशोर जी द्वारा वताए गए पते पर श्री तेज नारायन टन्डन जी से मिला। टन्डन जी दक्षिण के एक बहुत बड़े पुस्तक प्रकाशक हैं तथा उधर हिन्दी की अवाधगति से एकान्त सेवा कर रहे हैं। इन्होंने मुझे छोटे भाई जैसा प्यार दिया और आगे के पथ की जानकारी भी दिए क्योंकि वे स्वयम् ट्रेन से रामेश्वरम् तथा कन्याकुमारी की १९ बार यात्रा कर चुके थे। टन्डन जी ने मेरा परिचय अपने एक परम हितैषी एवम् हिन्दी के विद्वान लेखक श्री परमानन्द गुप्त से कराया जो मुझसे बहुत खुले दिल से मिले तथा अच्छा सहयोग भी दिए। चलते समय टण्डन जी ने अपनी एक पुस्तक "जै कृष्णा जै कन्या कुमारी" की एक प्रति मुझे भेंट मे दिया जिसे पढ़कर दक्षिण के बारे में काफी जानकारी मिली। बंगलोर की उत्साहपूर्ण विदाई से मुझे काफी शक्ति मिल चुकी थी। आजकल मैं प्रतिदिन लगभग १३० कि०मी० साइकिल चलाता था पर कुछ विशेष थकान महसूस नहीं होती थी। अब मुझे रामेश्वरम पहुंचने की जल्दी हो गई थी। तमिलनाडु की सीमा में पहुंचने पर मालूम हुआ कि चार दिन की बन्दी है। बड़ा बुरा लगा अब तो शिक्षा संस्था में रुककर लोगों से भी भेंट नहीं हो सकेगी। वैसे मैंने हर शिक्षा संस्था में रुककर लोगों से मिलने का प्रयत्न किया और जो मिले उनसे मुझे बहुत सहयोग मिला। अधिक परिश्रम से एवं इधर आटे की कमी से ज्यादा चावल खाने से मुझे कुछ कुछ बुखार हो आया मदुराई पहुंचते-पहुंचते मुझे काफी बुखार हो गया। मदुराई में एक सज्जन श्री नायडू जी का मुझे बहुत सहयोग मिला। नाम मैं भूल रहा हूं पर उन्हें नहीं भूल सकता। उनकी दवा से बुखार भी कुछ कम हो गया। नायडू जी ने मुझे प्रसिद्ध मीनाक्षी मन्दिर का दर्शन कराया। मदुराई से कुछ दूर आगे से रामेश्वरम् तक सायकिल का मार्ग बड़ा दुर्गम है। यह जानकारी मुझे बंगलौर में ही श्री टन्डन जी एवं अन्य शुभ

चिन्तकों द्वारा मिल चुकी थी । अतः टन्डन जी के परामर्शानुसार मैंने अपनी सायकिल को मदुराई मे नायडू जी के यहाँ छोड़ दिया और बुखार की ही हालत मे वहाँ से ट्रेन से रामेश्वरम् को चल दिया ।

आज मैं उस पावन तीर्थ मे प्रवेश कर रहा हूं जहां से राम ने शिव पूजन कर लंका को प्रस्थान किया था ।

परम रम्य उत्तम यह धरनीः महिमा अमित जाइ नहि वरनी ।
करहहु इहां शम्भु स्थापना, मीरे हृदय परम कलपना ।
जे रामेश्वर दर्शन करिहहि, ते तनू तजि मम लोक सिधरहहि ।
जो गंगाजल आनि चढ़ाईहि, सो साजुज्य मुक्ति नर पाईहि ।

(मैं भी गंगा जल चढ़ाना नहीं भूला जो इसी हेतु काशी से लाया था । इसी गंगा जल से मैं इस क्षेत्र के धार्मिक जनों का श्रद्धा पात्र बना) साथ में नायडू जी द्वारा दी हुई दवा भी थी । रामेश्वरम पहुचते-पहुचते दवा ने अपना पूरा असर दिखाया और जो कुछ बाकी बचा वह वहां के समुद्री दृश्य ने पूरा कर दिया । सब मिलाकर अब मैं एकदम स्वस्थ था । एक पंडा जी मुझे ट्रेन में ही मिल गए । उन्होंने मुझे बूखार से तपते देखा तो बड़ी सहायता किए । रामेश्वरम में आकर उन्होंने स्नानादि की धार्मिक क्रिया चौबीस कुण्डों के जल को मेरे शरीर पर छिड़क कर पूरा किया । पण्डा जी ने जल्दी जल्दी मुझे मन्दिर तथा अन्य दर्शनीय स्थानों का दर्शन कराया । उन्हें दक्षिणा देकर मैं लौटता ट्रेन से मदुराई वापस आ गया । मदुराई पहुंचने पर मेरी तबियत एकदम हल्की हो चुकी थी । नायडू साहब के यहां मैं सायकिल लिया और उनसे बिदा लेकर केरल प्रदेश की ओर चल पड़ा । नायडू जी कुछ दिन तक कलकत्ता में रह चुके थे और हिन्दी तथा बंगला का उन्हे थोड़ा -२ ज्ञान था । इस कारण भी उनकी मेरे ऊपर विशेष कृपा रही ।

दक्षिण मे मुझे कहीं भी कोई बेइमान व्यक्ति नहीं मिला। विश्वास उधर प्राय: सभी पर किया जा सकता है। एकाध अपवाद अवश्य हो सकते हैं पर प्राय: विश्वासी लोग ही मिले। एक घटना याद आ गई, आंपको बता दूं। वीरान सड़क पर १० १२ मील तक कहीं कोई दुकान आदि नहीं थी। रास्ते में एक ट्रक खराब हो गई थी। ड्राइवर धूप से बचने के लिए एक बेर की झाड़ी में बैठा था। पास में ट्रक पड़ी थी। ड्राइवर उसके पास आया और मरम्मत में जुट गया। पूरा वायरिंग खोल चुका था। इंजिन के बनने में काफी देर थी बेचारा अकेले ही था। मुझे उसने इशारे से रोक लिया। टूटीं-फूटी हिन्दी में बात करते हुए उसने मुझे पांच रुपये की एक नोट दिया ओर कहा कि आगे जो भी होटल मिले उसकी सेविका को दे दीजिएगा ओर मेरी गाड़ी का नम्बर भी, जो शायद A.P.A. ३५९६ था, बता दीजिएगा। वह किसी ट्रक वाले से खाना भेज देगी। मुझे बहुत भूख लगी हैं। और आस-पास कोई होटल या दूकान नहीं है। मुझे बड़ा आश्चर्य लगा। मैंने पूछा कि आप मुझपर इतना भरोसा कैसे रखते हैं। यदि मैं आपके रुपये लेकर चला जाऊं तो उसने खूले हुए तारों में दृष्टि उलझाए हुए ही कहा, "साहब' उमर पचपन के पार हो गयीं इसी लाइन में। आप जैसे आदमी ऐसे नहीं हो सकते। उसने जबरदस्ती मुझे रुपया थमा दिया। बहुत दूर आने पर एक होटल मिला। मैंने वहा उसका रुपया दे दिया तथा अपने सामने उसका खाना एक बस ड्राइवर के द्वारा भिजवा दिया। खाने में मांसादि तथा कुछ पीने की भी चीज़ थी।

केरल में प्रवेश करने से पहले ही मुझे हाथियों के वन से गुजरना पड़ा। मैं सड़क की उतराई पर था। नीचे पहाड़ी नदी में हाथियों का एक विशाल झुण्ड जलक्रीड़ा कर रहा था : दो हाथी एक सद्य: जाति बच्चे को अपने सूड़ों से झूला झुला रहे थे। मैं बड़ी तन्मयता से इस दृश्य को देख रहा था तब तक पास ही में एक हाथी चिंघाड़ उठा और मेरी तन्द्रा भंग हो गयी। मैं जल्दी से उतराई की ओर बढ़ गया और तब तक बढ़ता गया जब तक खतरा टल जाने का पूरा एहसास नहीं हो गया।

केरलवासी बड़े कर्मठ और मिलनसार होते हैं । मुझे सर्वत्र इ
सहयोग मिला। परिश्रमी इतने कि ऊंची नीची सारी भूमि पर हरे हरे
लहरा रहे थे। थोड़ी जगह भी बेकार नहीं थी चाय और काफ़ी के बा
बड़े सुहावने लग रहे थे। समुद्र के किनारे किनारे नारियल के बगीचे
को बरबस आकर्षित कर लेते थे। आदमी बड़े सभ्य तथा सुसंस्कृत।
काफ़ी उधर बड़ी सस्ती थी। दस पैसे में पूरी गिलास भर जाते थी
दम स्वादिष्ट काफी। होटलों में ठंढे जल की जगह गर्म जल चलता
वहां हिन्दुओं की एक विशेष पूजा होती है मैंने कई जगह झ
के झुन्ड लोगों को काली लुंगी तथा गंजी पहने दाढ़ी तथा बाल ब
मन्दिर की ओर जाते देखा। कहीं कहीं घंटा तथा घड़ियाल भी बज
थे। ऊंची पहाड़ियों पर विचित्र उच्चारण करते हुए स्थान स्थान पर
कोई धार्मिक विधि सम्पन्न कर रहे थे। बाद में पता चला कि ये स
जाति के हिन्दू लोग थे जो एक विशेष देवी की चालीस दिन तक
करते हैं। इस व्रत में बड़ी पवित्रता बरती जाती है तथा एक देवता कि
की गले में पड़ी हुई माला मैं लटकाए रहते हैं।

पूरे केरल प्रदेश मे मैंने गावों और शहरों को एक दूसरे से सटे
पाया। कहीं जगह नहीं बची थी। एक स्थान पर अपने पीठ पीछे "
हू..." की आवाज सुनकर मैं चौंक कर मुड़ा तो आसपास के सभी
मेरी हरकत को देखकर हंस पड़े। मैंने देखा कि एक आदमी कांवर
आगे पीछे दोनों ओर पुराने अखबारी कागज लिये हुए था। पूछने पर
चला कि इधर कागज खरीदने बेचने वाले या फल और साग सब्जी
वाले इसी आवाज मे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कालि
और माही होते हुए मैं वास्को डिगामा के उस प्रसिद्ध ऐतिहासिक
पर पहुंचा जहां प्रथम बार वास्को डिगामा का जहाज लगा था मन
क कल्पनाओं से भर गया वीर वास्को डिगामा की साहसिक यात्रा
कहानियों को स्मरण करके हृदय में बहुत शक्ति और साहस की अनुभूति

ॐ शान्तिः

★ अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी। ★ "बच्चन"
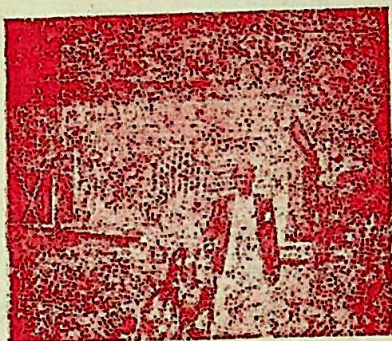
सुदूर दक्षिण कालीकट में पर्यटक श्री पान्डेय।
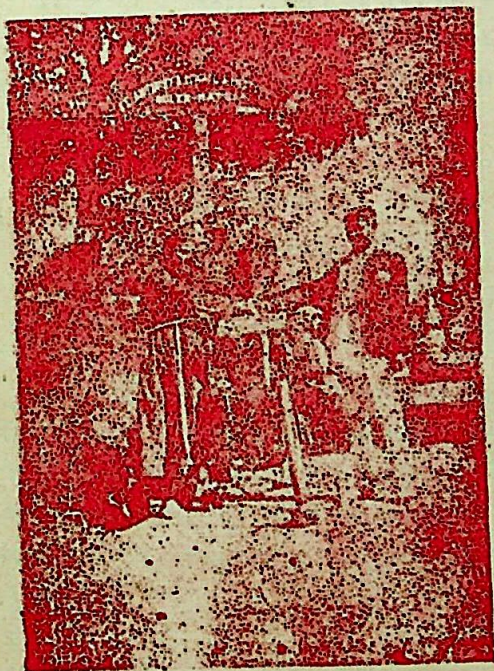
सायकिल पर्यटक श्री विमल कुमार पान्डेय को प्रसस्ति पत्र देते हुए, बाएं- "प्रिन्सीपल" सत ऐन्थोनी कालेज डूलर, मापुसा, गोवा।

ॐ नमः शिवाय:

# ९. जासूस के भ्रम में नजरबन्द

शंखेन्द्वा भमतीव सुन्दर तनुं, शार्दूल चर्माम्बरं,
काल व्याल कराल भूषण धरं गंगा शशाङ्क प्रियम।
काशीशं कलि कल्प षौघ्र शमनं कल्याण कल्पद्रुमं,
नौमिढ्यं गिरिजा पति गुणनिधि कन्दर्प हृशंकरम्॥

अरब सागर के किनारे राष्ट्रीय पथ बड़ा ही मनोमुग्धकारी प्रतीत हो रहा था। मीलों तक मेरा और अरब सागर का साथ रहा। जैसा नीला आकाश वैसी ही नीली विशाल जलराशि दूर-दूर तक पालधारी नौकायें तैर रही थीं। दृश्य देखकर एक रुबाई याद आ गई—

"क्या शान निराली है तेरी बहरे अरबिया,
मंजर है लाजवाब तेरी बहरे अरबिया।
अरमाँ ये है कि हर लम्ह तुम साथ ही रहो,
लेकिन हूं मैंमजबूर प्यारे बहरे अरबिया।

केरल से विदा होकर अब में एक बार फिर मैसूर में अरब सागर से मिलते बिछुड़ते चल रहा था। छोटे-छोटे बच्चे भोर में ही पंक्तिबद्ध स्कूल जाते हुए बड़े भले लग रहे थे। यहां मैं एक बात आप को बता दूं कि मध्य प्रदेश से ही धुर दक्षिण तक प्राय: सभी स्कूलों में जो उस समय खुले होते थे, मेरे सम्मान मे एक सभा जैसा आयोजन हो जाता था और बच्चों को मेरे ... मेरे आदर्शों के बारे में बताया जाना

था। कई जगह मुझे भी अपनी कुछ बातों को लिखित रूप में
पड़ता था जिसका वहाँ के शिक्षक लोग अनुवाद करके छात्रों को
थे ताकि उनके अन्दर अपने राष्ट्र के प्रति सद्भावना जगे तथा साह
कार्य करने की इच्छा भी।

केरल तथा आस पास के क्षेत्रों में मुस्लिम आबादी अधिक
केरल से लेकर गोवा तक मुझे जहां भी देहाती लोग मिले उनमें
केवल एक पट्टी से अपनी लाज ढके हुए थे तथा औरतें केवल एक
या घांघरा और एक ब्लाउज पहने थीं। बूढ़ी औरतें कमर के
बिलकुल नङ्गी रहती थीं।

मैसूर का मेंगलोर शहर भी बड़ा खूबसूरत है पर वहां मुझे
कटु अनुभव हुआ उसकी याद जीवन भर रहेगी। अपने एक शुभ
के बताये हुये पते पर मैं एक सज्जन के यहां गया उनका नाम
उन्हें जलील करना नहीं चाहता। भगवान उनका भला करे। मुझे
उनसे कोई शिकायत नहीं है। ये सज्जन कालेज के एक प्रोफेसर
शिक्षा संस्थाओं से मुझे प्रशस्तिपत्र मिलते थे। अतः स्वभावतः
उनसे सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करता था। प्रोफेसर साह
समय कहीं गये हुए थे। उसी कालेज के एक दूसरे प्रोफेसर साह
राय दिया कि आप यहीं बरामदे में बैठकर इन्तजार कीजिए, वे आ
तक अवश्य आ जायेंगे। इतना कहकर वे महाशय भी बाहर चले
उस समय शाम के साढ़े छः बजे थे। मैं वहीं बैठकर उस
डायरी लिखने लगा। रात के नौ बज गये पर कोई नहीं आया
देर बाद एक पादरी महाशय साथ में दो कुत्तों को लिए हुए आए
में एक दरबान भी था। वे वहां के इन्चार्ज थे। यह मुझे एक छात्र
पता चला। उन्होंने आते ही बड़े कठोर स्वर मे प्रश्न किया, "
यू" ( तुम कौन हो ? ) किसके आर्डर से अब तक यहां हो?

कुत्ता भी गुर्राने लगा। मैंने बड़ी शांति से उन्हें अपना परिचय दिया तथा मेरे पास उस समय जो भी रेकार्ड थे उन्हें उनको दिखाया। इनमें ८-१० समाचार पत्रों की प्रतियों तथा अनेक स्कूलों तथा महानुभावों द्वारा दिए हुए प्रशस्ति पत्र थे। मुझे विश्वास था कि पादरी जी उस सन्त के शिष्य हैं जो लोक कल्याण के लिए सूली पर चढ़ गया और मेरे प्रति सदय हो जायेंगे तथा रात मे ठहरने के लिए राजी हो जायेंगे। मेरा विश्वास खन्डित हो गया। बड़ी देर तक कागजों को देखने के बाद भी उनकी त्यौरी मे कुछ उतार नहीं आया और उसी कठोर स्वर में बोले, "मैं कुछ भी देखना सुनना नहीं चाहता। तुम इसी समय अपनी सायकिल के साथ यहाँ से गेट-आउट हो जाओ।" उन्होंने दरवान को आदेश दिया कि वह मुझे गेट से बाहर कर दे। जब मैंने देखा कि ये जरा भी पिघलने वाले नहीं हैं तो मैं उन्हें धन्यवाद देकर उस रात में ही वहाँ से चल दिया। वह रात किस प्रकार गुजरी कहना बेकार है। अपमान के इस कड़वे घूंट को किसी प्रकार गले के नीचे उतारना ही पड़ा। भगवान इसामसीह की बड़ी याद आई।

शायद ही किसी धर्म का इस पर विवाद हो।

धृतिः क्षमा दमोंस्तेयं शौचं मिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

गोवा में पुर्तगाली रहन-सहन अच्छी तरह देखने को मिला। गोवा का अधिकांश इलाका जंगल ही जंगल है। प्रायः एक मील का समुद्र स्टीमर से पार करना पड़ा। कहां कहां पहाड़ों नदियों की घाटियों में धान की अच्छी खेती थी, जहां पानी की अन्य व्यवस्था थी यहां भी। आदमियों से अधिक औरतों और लड़कियों का स्वास्थ्य अच्छा दिखा। हर जगह ईसाइयत की गहरी छाप थी।

भारत पाक युद्ध अब जोश पकड़ चुका था। पंजिम पहुंचते--पहुंचते युद्ध अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। ब्लैक आउट से सारा शहर अन्धकार में डूबा हुआ था। रास्ता देखने के लिए भी टार्च नहीं जला सकता था। जरा सी रोशनी हुई कि स्वयं सेवकों तथा पुलिस के कर्मचारियों की फटकार पड़ी। अनजाने रास्ते पर स्वयं सेवकों की मदद से चल रहा था। अंधेरे में पैर एक पत्थर से टकराया और मैं सायकिल लिए जमीन पर गिर पड़ा। पैर का अंगूठा कट गया पर रोशनी जला कर देख नहीं सकता था। केवल दर्द से महसूस हो रहा था कि अंगूठा बुरी तरह कटा था बड़ी बेबसी थी एक स्थान पर रुक कर स्वयं सेवकों की ही मदद से अंगूठे में पट्टी बाँधा और किसी प्रकार गोवा के प्रसिद्ध समाचार 'नवहिन्द' प्रेस पहुंचा। प्रेस वाले बड़ी आत्मीयता से मिले पर उन्होंने परामर्श दिया कि मैं अपनी यात्रा स्थगित कर दूँ। देश अभी संकट से गुजर रहा था और इस समय उसे सैनिकों की अवश्कता थी, पर्यटकों की नहीं। बात बिलकुल ठीक थी पर मुझे बड़ा कष्ट हुआ। मैंने सोचा भी नहीं था कि अपना 'मिशन' पूरा किए बिना ही मुझे यात्रा स्थगित करनी पड़ेगी। प्रेस वालों का अभिवादन कर मैं रात्रि विश्राम के लिए पुलिस स्टेशन पहुंचा। वहां के सारे अधिकारी ब्लैक आउट तथा अन्य सुरक्षा व्यवस्थाओं में व्यस्त थे। मुझे सोने की आज्ञा तो मिल गई पर कड़े पहरे में-मैं कोई जासूस भी तो हो सकता था मेरे कागज पत्रों को देखने की फुरसत किसे थी? मुझे वहीं सोना पड़ा जहां ब्लैक आउट की अवहेलना करने वालों को रखा गया था। बड़ी कड़ी व्यवस्था थी। वहां मुझे एक बंगाली युवक मिला जो पास ही के एक शरणार्थी शिविर से नौकरी की तलाश में इधर आ निकला था। मैंने जब बंगला में बात किया तो वह एक प्रकार से चौक ही उठा। भाव विभोर हो कर उसने मेरा पैर पकड़ लिया और बोला, "दादा अपनी को थेके एलेन।"

(भाई आप कहां से आए) बड़ी देर तक अपनी आप बीती सुनाता रहा। बर्बर पाकिस्तानी फौजों ने उसके भाई बहनों पर तथा पशुओं पर असह्य जुल्म ढाये थे। उसने बताया कि कैसे उसे अपनी बूढ़ी माँ के साथ भारत का मेंहमान बनना पड़ा था। याहियाशाही के नृशंस अत्याचारों की कथा सुनकर रोंगटे खड़े हो गए। सुबह मैंने उसे दो रुपये दिया जिसे उसने अनिच्छा पूर्वक ग्रहण किया। जब मैं पुलिस आफिस पहुंचा तो वहां बहुत से अधिकारी मौजूद थे। उन्हें मैंने अपने सारे कामजात दिखाये। उन कागज-पत्रों को देखकर तथा अपने प्रिय-पत्र "नवहिन्द" में मेरी यात्रा के समाचार को पढ़कर जब वे मेरे बारे मे आश्वस्त हो गए तो सबने एक-एक करके मुझसे हाथ मिलाया और रात में मुझे जो कष्ट हुआ था उसके लिए अपनी विवशता दिखाते हुए क्षमा याचना भी किए। उन्होंने भी परामर्श दिया कि मैं यात्रा स्थगित कर दूं। क्योंकि मुझे हर जगह परेशानियों का सामना करना पड़ सकता था। उस समय दुश्मन के जासूसों की धर-पकड़ बड़ी कड़ाई से हो रही थी। सभी अधिकारियो ने अपनी शुभकामनाओं के साथ मुझे विदा किया।

अब में बम्बई के मार्ग पर था। युद्ध की विभिषिका इस समय तक इतनी बढ़ गइ थी कि मेरी यात्रा में किसी को दिलचस्पी नही रह गई थी। यह स्वाभाविक भी था। मैंने फिर अपनी यात्रा को तबतक स्थगित करना उचित नहीं समझा जब तक यह एकदम असम्भव न हो जाय। कई नेताओं ने भी राय दिया कि युद्ध की अवस्था में ऐसी यात्रायें शोभा नहीं देतीं अतः इसे रोक दिया जाना चाहिए। रतनगिरि में भी जासूस के भ्रम रोका गया था एवं यात्रा स्थगित करने की सलाह भी दी गई थी। इन्हीं परेशानियों में मैं बम्बई पहुंचा। वहा मैं अपने एक शुभचिन्तक श्री राम राज सिंह के यहां ठहरा। उन्होंने मेरे सत्कार में कोई कोर कसर नहीं रखा। उन लोगों के यहां तीन दिन मुझे पुलिस की देख-रेख में बितानी पड़ी। बम्बई में प्रायः रोज ही दुश्मन के सैकड़ों जासूस पकड़े जाते थे। बम्बई पर दुश्मन की विशेष नजर थी पर वहा का प्रबन्ध इतना चुस्त था कि उसकी दाल गलनी कठिन थी।

तीसरे दिन दो पुलिस अधिकारी सादे लिवास में आए। उन्होंने मेरे सारे कागज पत्रों को देखा और जब आश्वस्त हो गए कि मैं कोई संदेहास्पद आदमी नहीं था तो उन्होंने मूझसे हाथ मिलाया और क्षमा याचना की। इन्हें मेरी साहसिक यात्रा से काफी दिलचस्पी थी पर परिस्थिति को देखते हुए इन्होंने भी यात्रा स्थगन का ही परामर्श दिया। उन्होंने कहा "आप जैसे साहसी युवकों की हमें वड़ी आवश्यकता है। वम्वई से उत्तर भारत के प्रत्येक शहर में दुश्मन की बमवारी जारी थी। मेरे शुभचिन्तक श्री रामेश्वर सिंह ने भी जो स्थानीय एस० पी० एच० स्कूल में शिक्षक थे तथा कई संस्थाओं के अध्यक्ष भी थे, मुझें वापस जाने का परामर्श दिया मेरा दिल टूट चुका था। अव आगे वढ़ने की सारी सम्भावनायें समाप्त हो चुकी थी। कहां मैं घर से सोचकर चला था कि पूरे देश की, अपनी धर्म की यात्रा करके ही वापस जाऊंगा और कहां मात्र ३५०० मील की दूरी तय करने के वाद ही मुझे रुकना पड़ रहा था। श्री रामराज सिंह तथा श्री भानुप्रताप सिंह ने, जिन्होंने मुझे भाई के समान आदर दिया था, उस आपत्तिकाल में जब ट्रेन का टिकट मिलना भी कठिन था, मेरे लिए सायकिल के साथ वम्वई से इलाहावाद तक का रिजर्वेशन करा दिया। मैंने वहुत भरे मन से उन लोगों से विदा लिया। उस संक्रान्ति काल में भी वम्वई वालों का मनोबल कितना ऊंचा था, यह देखकर आश्चर्य लगता था। इलाहावाद से दूसरे दिन में घर आ गया।

अव तो युद्ध समाप्त हो चुका है। अपने देश की शानदार विजय भीं हो चुकीं है और स्वतन्त्र वंगला देश का अस्तित्व भी उभरकर सामने आ गया है। अपनी अधूरी यात्रा को मैं शीघ्र ही पूरा करना चाहता हूं। इस वार घर से चलकर काश्मीर, राजस्थान, सौराष्ट्र और उधर से लौंटकर कलकत्ता तथा बांगला देश की भी सद्भावना यात्रा करने का मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है। इस संस्मरण में यदि पाठकों की रुचि रही तो मैं अपनी यात्रा का दूसरा खण्ड भी प्रकाशित कराऊंगा।

सर्वे भवन्तु सु खिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मां कश्चित् दुखभाग्भवेत्॥

—:०:—

# द्वितीय खण्ड

**अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः रुचे जनन्त सूर्यम ।।**

स्वयं विधाता हो हे मानवअंतर में विश्वास जगाओ । [ऋक ६-२३-२]
चलो न मिटते पद चिन्हों पर अपने रास्ते आप बनाओ । [शाम ६-२-६]
नयी प्राण-प्रतिभा से जागृत अपने सूर्य आप बन जाओ ।।

(अपने ग्राम वासियों से विदा लेते हुए पर्यटक श्री पान्डेय जी ।)
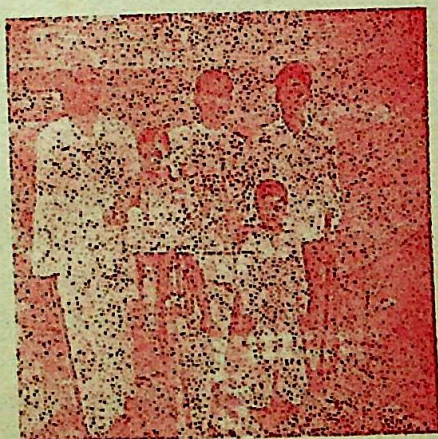
उत्साही युवकों अध्यापक श्री सुग्रीव सिंह एवं श्री यासीन अहमद तथा प्रिय मुन्नी कनक कुमारी, भतीजा राजू के साथ पान्डेय जी (विदाई चित्र)

ॐ

## १०. दो शब्द ( द्वितीय खन्ड )

नमों नमों हे जन्मभूमि जननी शत बार प्रणाम,
अमर कथा इतिहास अमर है तेरा मातृ महान।

प्रिय पाठक गण, अपनी धरती का द्वितीय-खन्ड आपके हाथों में देते हुए मुझेअपार हर्षहो रहा है। प्रथम खन्ड में आप पढ़ चुके हैं कि किस विकट परिस्थिति में मुझे अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ी थी। पड़ोसी देश पाकिस्तान के मदान्ध कर्णधारों ने हमारी शान्ति प्रियता पर निर्लज्जता पुर्वक ठोकर मार कर हमारे उपर वलात् युद्ध लादा और हमें हथियार उठाने को वाध्य किया ऐसी स्थिति में मुझे अपनी सद्भावना यात्रा बीच में ही रोकनी पड़ी और मन मार कर वापस आना पड़ा। वांग्ला देश की निरीह जनता के प्रति मेरी सहानुभूति और भी गहरी हो गई। अपनी अधूरी यात्रा को पूरा करने की मुझे कितनी आतुर प्रतीक्षा थी इसे मैं ही ज़ानता हूं। विश्व के मान चित्र पर वांगला देश के उदय के साथ ही मेरे मन में भी नवीन आशा का उदय हुआ और आवश्यक तैयारियों के वाद आज मैं अपनी चिर अभिलषित यात्रा पर प्रस्थान करने के लिए प्रस्तुत हो सका।

ॐ नमः शिवाय

मूकं करोति वाचाल पंगु लंघयते गिरिम,

यत्कृपा तमहं वंदे परमानन्द माधवम ॥

# ११ (द्वितीय यात्रा प्रस्थान)

२१-१०-७२

अन्ततः वह दिन भी आ गया जब मुझे दूसरी यात्रा के लिए प्रस्थान करना था उस दिन को याद सदा रहेगी। मैं परिवार वालों तथा गांव के स्नेही बन्धुओं से घिरा हुवा था। मौसम बड़ा ही सुहावना था, आकाश मेघाच्छन्न था पर दिन एक दम साफ। परिजनों तथा पुर जनों की भाव-भीनी विदाई लेकर मैंने अपने वाहन पथ चेतक की ओर अनुराग पूर्वक देखा जिसे अब एकदम चल पड़ने की आतुर प्रतीक्षा सी थी। अवरुद्ध गले तथा अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने सहयोगियों के स्नेहाशीर्वाद का मौन उत्तर देते हुए मैंने साइकिल संभाली और मेरे पांव मंज़िल की ओर चल पड़े। श्री आश नारायण सिंह ने बहुत दूर तक मेरा साथ दिया।

गोरखपुर तक हल्की फुल्की फुहारे मेरा स्वागत करती रही। मार्ग में चौरी चौरा में मेरे क्षेत्र ग्राम खरदहा के श्री राज किशोर जी (नेता जी) से भेंट हुई जिनके सहयोग से मैं महाजन कालेज चौरी चौरा के आचार्य जी से मिल सका जिन्होंने मुझे आशीर्वाद पत्र भी दिया। प्रथम रात्रि गोरखपुर में श्री सत्यदेव लाल जी के यहां बीती। आप अपने समय में स्पोर्ट्स मैन रह चुके हैं अतः आपने मेरी इस यात्रा की विशेष सराहना की।

दूसरे दिन सुबह उठने में कुछ देर हो गई। यह प्रथम रात्रि थी अतः थकावट का होना स्वाभाविक ही था वहां से चला तो मगहर पहुंच कर ही दम लिया। आमी नदी के किनारे संत कबीर की याद में एक मन्दिर तथा

एक मसजिद का निर्माण किया गया है जो आज भी उस महान सन्त को हिन्दू–मुस्लिम ऐक्य की भावना को उजागर कर रहे हैं। साम्प्रदायिकता के दलदल में फंसे हुए हिन्दुओं और मुसलमानों की समस्याओं का एक मात्र समाधान कबीर ही हैं जिन्हें भूल कर हम अपना बेड़ा गर्क कर रहे हैं। यहां के वातावरण में आज भी सन्त की वाणी गुंज रही है, "साधो एक रूप सब माहीं"।

यहाँ पर राज्य का प्रमुख गांधी आश्रम भी है जो खादी वस्त्र के लिए विख्यात है। बस्ती जिलान्तर्गत कप्तान गंज कस्बे के इण्दिरा गाँधी इन्टर कालेज में मेरा भव्य स्वागत हुआ। वहां के लोगों ने मेरी यात्रा में खूब रुचि लिया। रात्रि विश्राम मैंने वहीं किया।

—:★:—

ॐ

# १२ खास अपने लोग

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, भार्यागृह द्वारि जनः स्मशाने।
देहः श्चितायां परलोक मार्गे, कर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

३१–१०–७२

प्रातः जब मैं कप्तान गंज से चलने लगा तो वहां के एक क्षेत्रीय मंत्री ने जिनका मुझे काफी सहयोग मिला था, मेरी यात्रा में सुविधा दिलाने के उद्देश्य से कुछ अपने खास लोगों के नाम पत्र देने की इच्छा प्रकट की। 'खास' शब्द सुनकर मेरा मन वितिष्णा से भर उठा। अपने

खास लोगों का मुझे बड़ा कटु अनुभव मिला था। देवरिया अपना जनपद है और वहां कुछ अपने लोग हैं जो 'खास' कोटि में है। उन लोगों ने पहले मुझे 'अपनी धरती' पुस्तक के सम्बन्ध में बहुत अधिक सहयोग का आश्वासन दिया था और पुस्तक छपने के बाद उसकी सैकड़ों प्रति लेकर रख लिए थे कि उन्हें बिकवा कर उनकी कीमत मेरी दूसरी यात्रा आरम्भ होने के पूर्व ही मुझ तक पहुंचा देंगे। (अपने खास जनों से आशा करना स्वभाविक है) मैंभी आस्वस्त था कि समय पर सहायता मिल जायगी ठीक समय पर उनका जवाब मिला कि उन्हें किसी से कहने का अवसर ही नहीं मिला इत्यादि। अपनी यात्रा की पूर्व सूचना देकर जब मैं उनके पास पहुंचा तो वे लोग कहीं बाहर जा चुके थे। अपनी पुस्तकों की जो दुरवस्था मैंने उनके यहां देखीं उससे मेरी आंखों में आंसू आ गए। ऐसे खास लोगों से जहां भी मेरा पाला पड़ा वहीं मुझे हतोत्साहित होना पड़ा। अपने यात्रा पथ में अपने खास लोगोंके पास सहयोग के लिए जहां जहां (अपनी धरती प्रथम खन्ड) पुस्तकें भेजी थीं उनमें से अधिकांश स्थानों से मुझे निराशा मिली--सहयोग की तो बात ही छोड़ दें। कहीं कहीं तो मेरी यात्रा को 'फालतू यात्रा' जैसा सम्बोधन भी मिला जिसे मुझे बहुत धैर्य पूर्वक पीना पड़ा। बाद में मैंने उन खास लोगों को इस प्रसंग की याद दिला कर उनके सुख चैन में बाधक बनना उचित नहीं समझा। इसके विपरीत उसी देवरिया में संत विनोबा डिग्री कालेज के सुयोग्य एवम् प्रधान आचार्य कार्य कर्त्ता श्री निवास यादव जी हैं जिनके सहयोग से मैं प्राचार्य श्री रा शास्त्री जी से साक्षात्कार कर सका। शास्त्री जी का मैं छात्र भी रह चुका हूं। उन्होंने अपने पुस्तकालय के लिए मेरी १०० पुस्तके तत्काल लेकर मेरी अपूर्व सहायता की और मुझे उत्साहित किया। नवल प्रिन्टिंग प्रेस के श्री जोशी जी ने भी मुझे प्रोत्साहन दिया। बुद्धा इन्टर कालेज ने पुस्तकालय हेतु पुस्तकें लेकर हार्दिक शुभ कामना दरसाया भगवान की दया से सहयोगियों की कमी नहीं रही।

यही सब सोचते सोचते मैं राष्ट्रीय पथ २८ पर बस्ती से लगभग ४८ किलों मीटर आगे निकल आया था ।

ॐ

# १३. पावन अयोध्या पुरी में

**★ प्रत्येक महान कार्य पहले असम्भव होता है "कार्लाइल" ★**

भगवान राम की पावन जन्म भूमि अयोध्या पहुंचते–पहुंचते दिन के २ बज गए । अभी खानापीना बाकी ही था पर साकेत पुरी के दर्शनीय स्थानों को देखने का मोह रोक नहीं सका। ।सर्व प्रथम हनुमान गढ़ी गया। बिना हनुमान को प्रसन्न किए राम को पाना संभव नहीं है । "राम दुवारे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।" तत्पश्चात नागेश्वर महादेव का दर्शन किया क्यों कि, "सिवपद-कमल जिनहि रति नाही, रामहि ते सपनेहु न सोहाही, ।"जिस पुरी को युग पुरुष राम की जन्म भूमि होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उसकी शोभा का क्या कहना । नागेश्वर महादेव के भव्य एवम् विशाल मंदिर को देख कर मन आह्लाद से भर उठा । कहा जाता है कि इस मन्दिर को स्वयम् महाराज लव ने स्थापित किया था । प्राचीन भवनों को अभी तक सुरक्षित रखा गया है । ऐसे ही भवनों में से एक है कनक महल जो सीता जी को मुहं दिखाई में मिला था । श्री राम के "जन्म भूमि" की तो छटा ही निराली थी । वहाँ पर विगत १५ वर्षों से वहाँ के

भूतपूर्व डिप्टी कलेक्टर नायर साहब के सहयोग से अखन्ड मानस पाठ च रहा है। उस पौराणिक भूमि की धूलि उठाकर अपने मस्तक से लगाया। मन में गीता के श्लोक गूँज रहे थे, "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थान धर्मस्य, तदात्मानं श्रृजाम्यहम्। परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम, धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे।" भगवान् यदि तुम्हारे अवतरित होने की यही परिस्थितियाँ हैं तो अब विलम्ब क्यों है।

अयोध्या के स्टेट बैंक की अपनी ही शान है। अपने ट्रैवलर-चेक से सम्बन्धित काम से वहाँ गया तो तीन विशाल सिंह-द्वारों से होकर अन्दर जाना पड़ा। वहां के अधिकारी मुझे बहुत प्रभावित दिखे। "अपनी धरती" की दस प्रतियां खरीदे

इधर के लोग अभिवादन स्वरुप प्रायः जै गुरुदेव का उच्चारण करते हैं जो सुनने में बहुत भला लगता है स्थान स्थान पर गुरु जी का साहित्य भी देखनें को मिला। पतित पावनी सरयू के तट पर एक बड़ी ही रमणीक कुटी दिखी। पूछने पर पता चला कि उसमें एक सन्त रहते हैं जो अपनी युवावस्था में विभिन्न विद्यालयों में आचार्य रह चुके हैं। अब सरकार से पेंशन लेकर यहां पर सन्यासी का जीवन बिता रहे हैं और जनता की सेवा कर रहे हैं। सन्त से मिल कर चित्त को बड़ी शान्ति मिली।

बस्ती से फैजाबाद तक खेत बड़े चौरस थे पर प्लाट बहुत छोटे छोटे थे जिनमें कहीं छोटे छोटे ट्रैक्टर चल रहे थे। अधिकतर हल भी चल रहे थे जिनके बैल भी बहुत छोटे छोटे थे। हलों का भी छोटा होना स्वाभाविक था। सब चीजे छोटी छोटी थी, मन में सोचा कि हलवाहे भी छोटे छोटे होते तो अच्छा होता।

रात्रि विश्राम मैंने सोहावल इन्टर कालेज में किया। वहां के प्रधानां चार्य तथा उपप्रधानाचार्य ने मेरा बड़ा सत्कार किया।

ॐ

# १४. प्रगति के चरण

**तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।**
**असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥**

१-११-७२

आज मौसम बड़ा ही सुहावना था। मार्ग में कई ग्राम प्रधानों ग्रामीणों से मिला। कृषि शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में हमने इधर जो प्रगति किया है उसके लक्षण सब जगह मिले पर सब कुछ होते हुए भी एक सामान्य असन्तोष की भावना सर्वत्र मिली। एक सज्जन मिले वेष भूषा से अध्यापक से लगे। साईकिल पर ही थे अतः कुछदूर तक साथ रहा। मैंने उत्सुकता बस पूछा तो पता चला कि वे समीप के ही एक गांव में प्राइमरी पाठशाला में प्रधानाध्यापक थे। खादी की धोती किंचित मैली सी, खादी का ही उसी से मेल करता हुआ कुर्त्ता तथा पैरों में हवाई चप्पल। बाल बेतरतीब और आंखों में गहरी निराशा। ये थे मास्टर साहब। आयु कुछ खास नहीं थी यही ३५ से ४० के अन्दर, पर कुछ थके से लगते थे। जब मैंने उनसे अपना

उद्देश्य बताया तो उनके होठों पर मुस्कान की एक किरण बिखर गई लगा जैसे दर्द मुस्कराया हो। उन्होंने कहा आप बड़े ही भाग्य शाली है कि आपको इतना समय मिल जाता है कि यात्रा पर निकल सके। आप सचमुच बड़े भाग्य शाली हैं। हम लोग तो गृहस्थी के जंजाल में ऐसे फंस चुके हैं कि इस दिशा में सोच भी नहीं सकते।" और मास्टर साहब ने अपना किस्सा बताया जो संक्षेप में इस प्रकार था। आप बी० ए० पास करके नौकरी ढूंढ़ने निकले पर कई जोड़ा चप्पलें खराब कर के भी जब सफल नहीं हुए तो स्कूल में मास्टर बने। हाल ही प्रधानाध्यापक बने हैं। शादी शुदा हैं, बीबी और चार बच्चों की गृहस्ती है। छोटी तनख्वाह में इस महगाई में गुजर होना कठिन हो रहा है। अपनी कहानी सुनाते२ मास्टर साहब की आंखे नम हो चली थीं। उनकी पाठशाला वाला गांव करीब आ गया था अतः वे एक उदास सा नमस्कार कर पगदंडी पर उतर गए पर मैं भारी मन से ही आगे बढ़ सका।

सामने एक खेत में एक आदमी ट्रैक्टर चला रहा था। रबी की बोवाई आरंम्भ हो गई थी। मैं साइकिल एक तरफ खड़ी करके उससे कुछ बात करने की इच्छा से उसकी ओर चला। मुझे अपनी ओर आते देख कर ट्रैक्टर ड्राईवर ने ट्रैक्टर बन्द कर दिया और उत्सुक निगाहों से मेरी ओर देखने लगा मेरे पहनावे मेरी टोपी आदि से कुछ प्रभावित सा जान पड़ा। मैंने शिष्टाचार वश जब उसे नमस्कार किया तो वह और भी अकचका गया पर जब मैंने अपना परिचय उसे दिया और अपना उद्देश्य समझाया तो वह प्रकृतिस्थ हो गया। कुछ इधर उधर की बातों के बाद मैंने उससे उसके छोटे ट्रैक्टर के बारे में भी जान कारी लिया। अबतक वह मुझसे काफी खूल चुका था। बातें घूमफिर कर घर गृहस्थी और जमाने की हवा के उपर आगई। और फिर वहीं महंगाइ वाली बात बीच में आकर अटक गई। तीन साल हुए शादी हुई है भगवान की विशेष कृपा स्वरूप दो बच्चे

हो चुके हैं। माँ बाप हैं। दिन भर हाथ-पैर मारने के बाद भी पूरा नहीं पड़ता है। इसी बीच उसकी पत्नी उसका खाना लेकर आई। मैंने उसे देखा, गाँव का रूप उसे रूपवती कहा जा सकता था पर गृहस्ती के बोझ ने रूप को तोड़ दिया था। साड़ी में कई पैवन्द लगे हुए थे। मैंने एक बार उसे तथा एक बार ड्राइवर को देखा। कितना अच्छा जोड़ा था पर जमाने की बेरहमी ने उन्हे अन्दर-अन्दर कहीं बिखरा दिया था और भविष्य की कल्पना को मन में संजोये वे दोनों ही समय की धार में बहते चले जा रहे थे। ड्राइवर जी ने मेरी ओर आग्रहपूर्ण निगाहों से देखकर कहा, "आइए भाई साहब, कलेवा किया जाय। 'मैंने क्षमा मांगते हुए चलना चाहा तो उसने अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा, "भाई साहब को हाथ जोड़ो, तुम्हारे ही तरफ के हैं।" अच्छा रिश्ता जोड़ा। युवती किंचित शरमाते हुए बोलीं, "इन्हें रोकिए मैं खाना लगाती हूं।" जब मैंने फिर भी क्षमा चाहा तो युवती ने स्नेहपूर्ण स्वर में कहा, "भइया कभी-कभी गरीबों के यहां भी साग-सत्तू खाना चाहिए।" अब मैं उनके आग्रह को नहीं टाल सका। वहा से चलते हुए मुझे लगा कि अपने परम आत्मीयों से विदा ले रहा हूं।

आगे कुछ ही दूर चला था कि देखा कि एक लड़का लगड़ाते हुए जा रहा था। बीच-बींच मे वह कराहता भी था। मैंने पास पहुंचकर देखा तो उसके कपड़ों में खून के धब्बे लगे हुए थे। पूछने पर उसने बताया कि वह बस से उतरते समय लुढ़क गया और उसे चोट लग गई। घुंटने छिल गये थे तथा हाथ की कुहनियों में भी चोट लगी थी। उसने बताया कि उसका गांव यहां से करीब ही है पर चलने में उसे काफी कष्ट हो रहा था। मैंनें उसके घावों पर डेटाल लगाकर उसपर रूई देकर पट्टी बाध दिया (हमेशा फस्ट एड की सामग्री पास रहती थी) और उसे साइकिल पर बैठाकर उसके गांव की ओर चल पड़ा। जब मैं उसके घर पहुंचा तो वहाँ का दृश्य देखने लायक था। उसका पिता एकदम अभिभूत सा लगा और मुझे बहुत आशीर्वाद दिया। वहा लोगों से बातें

हुई तो उनमें भी गरीबी और मंहगाई की ही गन्ध मिली।

वहाँ से चला तो मेरे मन में बहुत से विचार उठ रहे थे। मंहगा सचमुच कितनी बढ़ती जा रही है। मुह के आकार का सबसे बड़ा पैमाना हमारे सामने सुरसा है पर इन मंहगाई के मुंह ने तो सुरसा को भी पीछे छोड़ दिया है। आज सुरसा जीवित होती तो शर्म से उसका सिर झुक जाता। हमने विशाल योजनायें बनाईं, बड़े-बड़े कार्यक्रम पूरे किए जिन्हें लेकर हम दुनियां के सामने सचमुच अपना सर ऊंचा कर सके पर क्या कारण है कि इन सबका लाभ गरीब तक नही पहुंच पाया और आज भी मंहगाई की दुहाई देते हुए वह अभिशप्त सी जिन्दगी बिता रहा है। स्वतन्त्र आकाश के नीचे स्वतन्त्र हवा में पलते हुए भी उस निरीह स्कूल मास्टर, उस ट्रैक्टर ड्राइवर, उसकी युवती पत्नी और उस घायल लड़के के बाप की मासूम आंखों में क्यों घनी निराशा तैर रही है यह एक प्रश्न है। एक विकासशील देश मे कीमतों का बढ़नां बुरा नहीं हैं पर ऐसा भी क्या बढ़ना कि उस पर कोई लगाम ही न हो। किसी भी सरकार के लिए कीमतों का इस प्रकार बढ़ना एक चुनौती है। प्रगति में हम पीछे नहीं हैं पर लाभ सामान्य जन तक नहीं पहुच पा रहा है गरीब और गरीब होता जा रहा है। कहीं कुछ खोट अवश्य है। क्या पूरी व्यवस्थापर नए सिरे से विचार करने की आवश्यकता नहीं है ?

शाम होते होते मैं रसौली ग्राम पहुंच गया। यहा मेरी मुलाकात रसौली ग्राम के आर्य समाजी भक्त श्री भगवानदास जी से हुई जिन्होंने मेरा बड़ा सत्कार किया। रात्रि विश्राम मैंने वहीं किया। रात को जब सोने लगा तो आज दिन की घटनायें मानस पटल पर आती रहीं। श्री पटेल इन्टर कालेज रामसनेहीघाट (बाराबंकी) में भी मेरा बड़ा सत्कार हुआ था। वहां के प्राचार्य ने अपने छात्रों को मेरी यात्रा का उद्देश्य समझाया तथा चाय और उम्दा बिस्कुटों से मेरा स्वागत किया। दूसरे दिन मुझे अपने प्रदेश की राजधानी लखनऊ पहुंचना था जिसकी सुखद कल्पना करते हुए सो गया।

ॐ नमः शिवाय.

# १५. लखनऊ का स्वागत

संसार दीर्घ रोगस्य सुविचारो महौषधम ।
कोऽहं कस्यच संसारो विवेकन बिलियते ।।

२–११–७२

प्रातः काल सन्त भगव न दास जी के वेद मंत्रों के सस्वर पाठ से नींद खुली । ऐसा लगा जैसे कानों में अमृत घोलकर डाला जा रहा हो । लखनऊ पहुंचने की जल्दी थी अतः संक्षिप्त सा जलपान करके चल पड़ा । लखनऊ पहुंचते-पहुंचते दिन के ग्यारह बज गए । सर्व प्रथम मुझे आकांश वाणी ले जाया गया जहां मेरा वड़ा अच्छा सत्कार हुआ । वहां मेरे प्रोग्राम को टेप भी किया गया । आकाशवाणी के कर्मचारियों ने बहुत सहयोग किया । इसके पश्चात मैं अपने पार्श्ववर्ती ग्राम खेमादेई के श्री केदार नाथ सिंह से मिल। जो आज कल उत्तर प्रदेश सरकार विद्युत वोर्ड में सचिव के पद पर हैं । आपने मुझे वहुत प्रोत्साहन दिया तथा हर सम्भव सहयोग देने का आश्वासन भी दिया । शाम को अपने क्षेत्र के विधायक श्री शिवाजी से मिलने दारुल-सभा गया । वे कहीं बाहर चल गए थे पर वहां के लोगों ने मेरे साथ वड़ा ही अच्छा व्यवहार किया रात को मैं वहीं रहा ।

दूसरे दिन मेरी मुलाकात मेरे क्षेत्र के कर्मठ समाज सेवी श्री वृजा नन्द सिंह से हुई। आप गोरखपुर के पक्कीबाग अखाड़े के प्रसिद्ध पहलवान रह चुके हैं जिनकी गणना प्रदेश के नामी पहलवानों में थी । इस समय आप जिला सहकारी बैंक देवरिया के उपाध्यक्ष तथा मेरे क्षेत्र के ब्लाक प्रमुख हैं, एवं अपने समाजिक दायित्वों के प्रति शुरु से ही सजग रहे हैं । मेरी यात्रा में विशेष रुचि दिखलायी इनके अग्रज श्री राजा नन्द सिंह भी मेरी यात्रा में आरम्भ से ही शुभेच्छा रखते हैं ।

यहीं मेरी मुलाकात मेरे समीपवर्ती ग्राम पिन्डी के एक उत्साही

युवक श्री सचिन्द्र पति त्रिपाठी से भी हुई। इनके हृ
में अपने क्षेत्र के प्रति अपार श्रद्धा है। आपने मेरी सद्भाव
यात्रा में बहुत उत्सुकता दिखाई तथा मुझे बहुत उत्साहित किया। इस
पश्चात मैं स्वतन्त्र भारत प्रेस के श्री कपूर जी से मिला जो अपने युग
एक स्पोर्टस मैंन रह चुके हैं और कई पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं। इ
समय ये प्रेस में स्पोर्टस विभाग के प्रमुख हैं। राजधानी में ही मेरी
मेरे सहपाठी श्री परसुराम जी तथा इनके एक अभिण्न मित्र से हुई: इ
मित्र युगल ने मेरी यात्रा में विशेष अभिरुचि दिखाई और मैं जब
राजधानी मे रहा, उनका हार्दिक सहयोग पाता रहा।

लखनऊ की अपनी अलग किस्म की हीं तहजीव है। नवावों त
रईसों की नगरी लखनऊ में पहुंचकर कोई भी प्रभावित हुए विना न
रह सकता। यहां की इमारतें तथा वाजार आज भी अपने प्राचीन गौर
की गाथा कहते हुए से लगते हैं। अव तक मुझे जो भी सहयोग त
सदभाव यहाँ के लोगों से मिला था उससे मेरे मन में यहां की मेहमा
नवाजी के प्रति अपार श्रद्धा हो चुकी थी और इसी मनस्थिति में मैं अप
एक खास आदमी श्री गौरीशंकर त्रिपाठी से मिलने चला जो एक उ
पद पर थे। आप के माध्यम से कुछ महानुभावों से मिलने की इच्छा थी
पर लखनऊ में रहकर भी इनकी तहजीब अनूठी सी लगी। खैर एक आ
व्यक्ति अपवाद भी होते ही हैं। कर्ण को भी सल्य जैसा सारथी मिला
जो कर्ण को निरन्तर हतोत्साहित करता रहता था।

## १६ कानपुर की ओर

**आदमी लाख सभलने पै भी गिरता है मगर।**
**झुक के जो उसको उठा ले, वो खुदा होता है।**

३-११-७१ '—दोषी'

आज सुवह उठकर सर्वप्रथम मैंने अपने प्रिय हमसफर हरकुलिस साइकिल की सफाई की जो पहली यात्रा मे ही मेरा साथ निभा रही है तत्पश्चात स्नानादि से निवृत होकर कानपुर के लिए चल पड़ा। रास्ते में चारों ओर धान के खेत फैले हुए थे। धान कटने में लगभग १५–२० दिन की देर थी। वालियाँ पककर झुक गई थीं। हवा के साथ धान के खेतों में उठती हुई लहरों और वालियों की खसखसाहट की ध्वनि ने लखनऊ की विषादमयी याद को भुलाने में बहुत योग दिया। कहीं–कहीं बाजरे और अरहर के भी खेत थे। हलों मे बैलों की जगह भैंसे जुते हुए थे। दीवाली का त्योहार निकट ही था। अतः स्कूल आदि वन्द थे। चार बजते बजते मैं कानपुर पहुच गया। यहाँ मेरी मुलाकात मेरे पुराने मित्र श्री बांके बिहारी सिह से हुई। वे आग्रह पूर्वक मुझे अपने घर ले गए। कानपुर मेंमैं उन्ही के यहां ठहरा। श्री बांके बिहारी सिह ने मेरा जो सत्कार किया तथा मुझे जो सहयोग दिया उसे में कभी नहीं भूल सकूंगा। उनकी शुशीला पुत्री तथा जमाता भी मेरी यात्रा से बहुत प्रभावित हुए। पुत्री वहीं पर बी० ए० कर रही थी तथा जामाता डाक्टर थे। इन दोनों के व्यवहार से मैं अभिभूत हुए विना नहीं रह सका। मिलों, फैक्टरियों तथा अन्यान्य व्यापारिक प्रतिष्ठानो के कोलाहल भरे नगर में जुग्गीलाल कमला पति सेठ के बनवाए हुए भव्य मदिर को देखकर आंखें जुड़ा गईं।

—:०:—

ॐ

## १७. एक सच्ची प्रेम गाथा

तुम्हारे दिये की उमर सौगुनी हो,
पड़ोसी का दीपक भी साथी जलादो।
तुम्हारी दिवाली अमर आरती हो,
जरा उसकी लौ सबकी लौ में मिला दो ।।

'नील कंठ'

५-१९-७२

अपने मित्र बांके विहारी सिंह से भावभीनी विदाई लेकर मंजिल की ओर चल पड़ा। इधर का इलाका प्रायः वीरान था। गांव बहुत दूर दूर मिलते थे। एक जगह कुछ आदमी साइकिल पर एक मृत व्यक्ति का शव ले जा रहे थे। साइकिल पर शव ढोना यहीं देखा। वैसे इधर औरते भी साइकिलों के पीछे बैंठ कर निसंकोच आ जा रही थीं। अब तक मैं ५०० किमी चल चुका था और यहा से दिल्ली पहुंचने के लिए लगभग ५०० कि० मी० और चलनां था। सामने खोजाफूल गांव था जहां एक पुराने किले के भग्नावशेष दिखाई दे रहे थे। जन श्रुति है कि मुगल सम्राट अकबर के दरबारी ख्वाजा साहब ने इसे बनवाया था। उनकी मजार भी इसी किले में है। औरैया पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। मैं वहां के बीडीओं के आफिस में रात्रि विश्राम करने के उद्देश्य से गया। वहां एक ए. डी. ओ. मिले पर उनमे मेरे प्रति कुछ विशेष रुचि नही जग सकी। पास ही में स्थानीय माध्यमिक विद्यालय के उपआचार्य श्री अखिलेश चतुर्वेदी जी भी बैठे हुए थे। वे मुझे आग्रह पूर्वक अपने घर ले गए। वहां पहुंच कर सर्व प्रथम उन्होंने घर वालों से मेरा परिचय कराया। अपनी पुत्री चन्द्रा का परिचय देते हुए उन्होंने [illegible] का अनुभव किया जब उन्होंने बताया

कि वह एम. ए. की छात्रा थी। उम्र यही कोई १८-१९ साल की होगी। आकृति सामान्य ही थी पर आंखों में विशेष दृढ़ता की छाप थी।

इसी समय उसकी ही उम्र का एक लड़का आया जिसका परिचय चतुर्वेदी जी ने राजेश तिवारी कह कर कराया और बताया कि वह एक प्रकार से उनके परिवार का ही सदस्य था। वह भी इस साल बी. ए. फाइनल कर रहा था। दीवाली का दिन था। चन्द्रा तथा राजेश बड़े उत्साह के साथ दीपकों की कतार सजा रहे थे। मुझे अतिथि के रुप में पाकर बच्चों में अपार खुशी थी। जलपान में मिठाइयों से भरी प्लेटें आई चतुर्वेदी जी के दो और छोटे बच्चे भी थे जो हाथों में फुलझड़ियां लेकर इधर उधर कूद रहे थे।सारे घर में एक उल्लास पूर्ण वातावरणथा तथा। राजेश तिवारी बच्चों के साथ बहुत घुला मिला था। पता नहीं क्यों मुझे उसके बारें मे विशेष जानकारी लेने कीउत्कंठा हुई और मैंने चतुर्वेदी जी से उसके बारे में पूछ ही दिया वे मुझे लेकर ऊपर छत पर चले गए और जब हम लोग आराम से कुर्सियों पर बैठ गए तो उन्होने कहा,

"पान्डेजी, आप अपनी धरती के महापुरुषों मे से है। आज मैं......

मैंने उन्हे बीच मे रोक दिया और कहा कि महापुरुष की संज्ञा देकर वे मुझे शर्मिन्दा कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि.

"कोई बात नही-आप जिस मिशन पर निकले हैं उस पर कम लोग ही निकलते हैं-खैर............मैं कह रहा था कि मेरे सामने एक समस्या है और मुझे आशा है आप मुझे कुछ उचित राय दे सकेंगे।"

यह कह कर उन्होंने मेरी ओर आशापुर्ण नेत्रों से देखा। इसके बाद उन्होंने अपनीजो समस्या मेरे सामने रखी वह राजेश तिवारी की कहानी थी जो कुछ इस प्रकार थी।

राजेश के पिता पड़ोस मे ही रहते थे। वह उन काइकलौता लड़का था। अतः उसे आदमी बनाने की उनमें विशेष लगन थी पर आर्थिक दशा खास अच्छी नहीं थी। तीन वर्ष पूर्व जब चन्द्रा बी. ए. मे थी और राजेश इन्टर मीजिएट मै तबकी बात है। राजेश की पढ़ाई अर्थाभाव के

कारण लड़खड़ाने लगी। पड़ोसी का पुत्र गरीबी के कारण पढ़ाई छोड़ दे यह मुझसे सह्य नहीं हो सका। बच्चों का आना जाना था ही, मैंने चन्द्रा के माध्यम से पुस्तकों आदि के रूप में उनकी सहायता करना आरम्भ किया। चन्द्रा उसे समय समय पर पढ़ा भी दिया करती थी। नतीजा यह हुआ कि राजेश की पढ़ाई चलती रही और वह अच्छे नम्बरों से पास भी हो गया। पिछले दो तीन वर्षों में इनकी मैत्री भी प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होती गई और अब इन दोनों का प्रायः साथ ही रहना चर्चा का विषय बन गया। मैंने एक बार दबी जबान से चन्द्रा को समझाया भी कि बेटी तुम, दोनों अब सयाने हो चुके हो, जरा समाज का भी ध्यान रहे तो उसने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया कि पिताजी आप निश्चिन्त रहें आपकी चन्द्रा कोई गलत कदम नहीं उठाएगी, और वह चुप हो गया। इस बीच राजेश के पिता जी की हालत काफी सुधर चुकी थी। उनकी अपने विभाग में एक ऊंचे पद पर तरक्की हो गई थी। एक माह पहले की बात है वे यहां आए थे और बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि राजेश और चन्द्रा का ज्यादा मिलना-जुलना ठीक नहीं था। उन्होंने यह भी कहा कि राजेश को उन्होंने मना कर दिया था और मुझे भी हिदायत कर गए कि मैं चन्द्रा को मना कर दूं तथा अच्छा हो उसका विवाह अपनी बिरादरी में कहीं कर दूं क्योंकि इन दोनों के सम्बन्ध में अफवाहें जोर पकड़ती जा रही थी। उनके जाने के बाद मैंने चन्द्रा से सारी बातें बता दीं। वह बोली तो कुछ नहीं पर उसकी आंखों से आंसू चू पड़े। दो दिन बाद की बात है मेरी तबीयत कुछ खराब थी, अतः मैं अपना कमरा बन्द करके अन्दर लेटा हुआ था। चन्दा का पढ़ने का कमरा मेरे कमरे से लगा हुआ ही है। उस कमरे से बातचीत करने की आवाज आ रही थी। मैंने ध्यान लगाकर सुना। चन्दा और राजेश बातें कर रहे थे। उन्हें मेरी उपस्थिति का ज्ञान नहीं था। चन्दा ने कहा —

"राजू अब समय आ गया है कि हम लोग अपना कर्तव्य निश्चित कर लें। मेरे पिताजी देवता हैं और मेरे ऊपर उन्हें भरोसा है। मैं उनके विश्वास पर किसी भी कीमत पर कोई आघात नही सह सकूंगी · तुम्हारे बाबूजी हम लोगो के सम्बन्ध से प्रसन्न नहीं हैं। मेरी तो समझ में नही आ रहा है कि क्या किया जाय।"

राजेश खामोश था। कुछ देर बाद उसने खामोशी भंग किया—

"चन्दू, तुम निश्चिन्त रहो। मैंने अपनी माँ को समझा दिया है। उन्हें भी वे दिन अच्छी तरह याद है जब चन्दा ने उनके लाड़ले को हर सम्भव सहायता देकर खड़ा किया था। मैंने उनसे स्पष्ट कह दिया है कि मेरा विवाह होगा तो चन्दू से ही। मेरे जीवन में कोई और लड़की नहीं आ सकती।"

राजेश का स्वर आवेशपूर्ण था।

अब मुझसे चुप नहीं रहा गया। मैंने आवाज देकर उन्हें अपने कमरे में बुलाया। पहले तो वे बुरी तरह घबरा गए पर मेरी आंखों में तिरती हुई स्नेह की छाया ने उन्हें किंचित आश्वस्त कर दिया। मैंने राजेश के सर को प्यार से सहलाते हुए उससे पूछा,

"राजू, तुम चन्दा से विवाह कर सकोगे? तुम्हारे पिताजी अब ऊंचे ओहदे पर पहुंच गए हैं। क्या तुम उन्हें मना सकोगे? घबराओ नहीं मैंने तुम लोगों की बातों को सुन लिया है। सच सच कहो, समाज का सामना कर सकोगे?

राजेश कुछ देर सोचता रहा और फिर चन्दा की ओर एक बार देखकर बोला,

"चाचाजी, मैं स्वयम् ही आप से मिलने वाला था पर साहस नही होता था। मेरे ऊपर आप लोगों के बहुत एहसान हैं। आज मैं जो भी

हूं आप लोगों की बदौलत हूं। मैं आप से चन्दा का हाथ मांगने का दुस्साहस कर रहा हूं। चन्दा ने मेरा साथ दिया तो मैं किसी की परवाह नहीं करूंगा।'

यह कहकर उसने चन्दा की ओर याचना भरी दृष्टि से देखा। चन्दा जो अबतक लज्जावनत खड़ी थी, किंचित आगे बढ़ आई। उसने अपना सारा साहस बटोर कर कहा,

"पिताजी, आज हम लोग आपके सामने प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि हम लोग जियेंगे तो साथ-साथ और मरेंगे तो साथ-साथ"।

यह कहकर वह मेरे पैरों पर झुक गई।

मैंने उसे उठाकर उन दोनों को आश्वासन दिया कि इस मामले पर गहराई से विचार करूंगा। इसके बाद वे दोनों कमरे से बाहर हो गए। तब से मेरे दिल पर एक भारी बोझ सा रहा करता है। अब आप ही बताए पान्डे जी, इस स्थिति में मुझे क्या क्या करना चाहिए।

चतुर्वेदी जी इतना कहकर चुप हो गए। मैं विचारों मे खो गया। इतने ही में खाने का बुलावा आ गया। हम लोग खाने बैठे उस समय भी मैं राजेश और चन्दा के बारे में ही सोच रहा था। खाना राजेश और चन्दा दोनों मिलकर ला रहे थे। मैंने चतुर्वेदी जी से कहा।—

"चतुर्वेदी जी, राजेश और चन्दा दोनों ही सयाने हो चुके हैं। जिन परिस्थितियों मे इनकी मित्रता हुई है उनसे लगता है कि भगवान की यही मर्जी है कि ये सारा जीवन साथ रहें। आपको इन्हें आशीर्वाद देना ही चाहिए।"

चतुर्वेदी जी की मुद्रा स्वीकारात्मक लगी। जब मैं भोजनोपरान्त सोने लगा तो सोच रहा था कि मेरी यात्रापथ की दीवाली भी अच्छी रही। सोने से पूर्व मैं चन्दा और राजेश के सुखद भविष्य के लिए भगवान से प्रार्थना करना नहीं भूला।

६-११-७२

दूसरे दिन जब मैं चतुर्वेदी जी से विदा लेकर चला तो चन्दा ने रास्ते में खाने के लिए पुरियों तथा मिठाइयों का एक पैकेट दिया जिसे मैं इनकार नहीं कर सका। इस समय मैं राष्ट्रीय पथ २ पर अर्थात जीटी रोड पर चल रहा था। दोनों तरफ उत्तम किस्म के बाजरे के प्लाट लहलहा रहे थे। सामने पन्तनगर का बोर्ड लगा था। लोगों ने बताया कि धान और गेहूं की फसलें अच्छी नहीं हो सकी थीं जिसका कारण यह था कि नहर विभाग की लापरवाही से किसानों को समय से पानी नहीं मिल सका। अपनी उच्च कोटि की योजनाओं के दोषपूर्ण कार्यान्वयन के प्रति मन एकबार फिर वितृष्णा से भर उठा। आखिर हमारी नैतिकता कबतक सोई रहेगी ? मोथ और बखारी अरहर के खेतों के बीच-बीच में कहीं कहीं ढेंचा के खेत भी थे जिन्हे देखकर अरहर का ही भ्रम होता था। ढेंचा पशुओं के खाने के काम आता है इसका पौधा जलाने के भी काम आता है। यशवन्तगढ़ पहुचते-पहुचते शाम हो गई। एक सज्जन जो एक ही साथ डाक्टर, अध्यापक पोस्टमास्टर और पता नहीं और क्या क्या थे मिले जो मुझसे पहले तो बहुत प्रभावित से दिखे पर जब मैंने उनसे रात्रि में विश्राम करने की कोई व्यवस्था करने को कहा तो बड़ी कठिनता से एक आलू के गोदाम मे मेरे रहने का प्रबन्ध कर कहीं खिसक गए। रात भर माल उतरना चढ़ना रहा और मेरी नींद तथा ट्रकों की घरघराहट में रस्साकशी चलती रही। बीच-बीच में गोदाम के एक कर्मचारी श्री यादव जी की बकरी भी अपनी बारीक परन्तु कर्कश मिमियाहट तथा कानों की पटपटाहट का ताल देती रही।

यशवन्तगढ़ एक दर्शनीय स्थान है। यहां जैनी लोगों का एक बड़ा ही भव्य मंदिर है। एक मठ भी है जो विनीयग मठ के नाम से विख्यात हैं तथा अपने साथ अंग्रेज महाप्रभुओं की यादगार समेटे हुए है। कहा जाता है कि १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के समय बहुत से अंग्रेज इस मठ में आकर आश्रय लिये थे। यह भी कहा जाता है कि अंग्रेज यात्री आज भी इसे देखना नहीं भूलते। मठ की हालत अभी भी अच्छी है। यशवन्तगढ़ महाराजा यशवन्त का बनाया हुआ है। यहा के विशाल दरवाजे आज भी अपनी प्राचीन गरिमा की याद दिला रहे हैं।

## १८. ताज के नगर में मैं बेताज हो गया।

सुख को ही एक मात्र ध्येय बना लेने से दुख कीप्राप्ति होती है।

शेनस्टोन,

७-११-७२

आगरा अभी ११२ कि. मी. था। राजस्थान की धरती १५ कि.मी. की दूरी से समानान्तर चल रही थी। चूड़ियों तथा काँच के वर्तनो के लिए प्रसिद्ध नगर फिरोजावाद में रंग विरंगी चूड़ियों तथा काच के भांति भांति के वर्तनो की चका चौंध से आखें चुंधिया गई। फिरोंजावाद के वाद हिम्मत नगर आया। यहां पर आदम युग की एक गुफा है और पास ही योगाभ्यास करने का एक आश्रम भी है। शहर के अन्दर एक तालाब के वीच में एक खूबसूरत मदिर है जिसमें जाने के लिए झूले का पुल बना हुआ है। आगरे पहुंचने की जल्दी थी अत: मैंने जल्दी हिम्मत नगर को तो छोड़ दिया पर हिम्मत नहीं छोड़ीऔर साढ़े छ: वजते वजते आगरा पहुंचही गया। । एक आर्य समाज मदिर में टिकाना मिल गया इतना थक चुका था कि गिरते ही नींद आगई।

८-११-७२

आगरे का प्रसीद्ध किलां और किले की दीवार के पास अमर सिंह राठौर के घोड़े की प्रतिमा। मनश्चक्ष के सामने इतिहास के पन्ने उड़ने लगे। जब अमर सिंह किले के अन्दर चारों ओर से घिर गया तो उसके सामने एक ही रास्ता था किले के कंगूरे से नीचे कूद जाना। जानकी जोखिम पर शान में बट्टा कैसे लगेगा। अमर सिंह ने अपने प्यारे घोड़े की गर्दन थपथपाई। चतुर पशु ने सवार के इशारे को समझ लिया और छलांग लगाही तो दिया। मुगल सैनिक देखते ही रह गए। वफादार पशुने जान गंवा दी पर अपने मालिक की आन रख ली। पशु आदमी से ऊंचा उठा गया।

किले का अधिकांश हिस्सा मिलेट्री वालों के कब्जे में है पर फिर भी कुछ भाग दर्शकों के लिए खुला रहता है।। यहीं पर शाहजहा को कैद कर के रखा गया था जहाँ से वह एक शीशे की खिड़की के ज़रिये हसरत भरी

निगाहों से ताज की छवि निहारा करता था। किले की वाहरी दीवार से ताज सीधा दिखाई देता है। एक समय था जब उनने इस प्रसिद्ध मकबरे का निर्माण कराया और एक ऐसा भी समय आया जब उने इसको देखने का एक अवसर भर दिया गया बड़ी मेहरबानी करके और वह भी अपने पुत्र के हाथों। आखिर आदमीं किस पर भरोसा रखे। वहां से निकल कर मैं ताज कीं ओर जा रहा था। मार्ग में कहीं कहीं पुरानी इमारतों के खंडहर दिख जाते थे। अपनी धुन में मस्त मैं चला जा रहां था कि एकाएक मुझे ऐसा लगा कि मेरे सरपर कोई चीज सरक रही हो। सरपर हाथ लगाया तो मेरी टूरिस्ट टोंपी गायब थी। ऊपर आंख उठाया तो देखा वह धीरे धीरे ऊपर जा रही थी। मैं तो हैंरान हो गयां। बाद में बात समझ में आई। एक धागे में कांटा बधां हुआ था और वह बिजली के तांरों के सहारे बीच सड़क पर लटक रहा था। दूसरा सिरा बगल के बारामदे में खड़े एक सज्जन के हाथ में था जो उसे खीच रहे थे और उन्होंने ही मेरा तमाशा बनाया था। मैं उनके हाथों बेवकूफ बन चुका था और मेरी इस बेवकूफी का आनन्द लेने के लिए चारों ओर भीड़ लग गई थी। मैंने हंसते हुए सबको सम्बोधित किया और कहा की वह भी कैसी विडम्बना है कि ताज की इस महान नगरी मे मैं बेताज हो गया। यह सुनकर सभी हंसने लगे और बरमदे वाले युवक ने कहा कि 'साहब आप बेताज नही होगे। आंपका ताज आप के सर पर सहीसलामत पहुंच जायगा। जिधर से आप गए हैं उधर ही से एक बार फिर घूम कर जाइए।" मैंने वैंसा ही किया और उन्होंने धागे को ढ़ील देकर मेरी टोपी को पुनः मेरे सर पर पहुंचा दिया। मैंने उसमें फसा हुआं कांठा अलग किया और उसे ठीक से पहन लिया। मुस्कराते चेहरों का मुस्कराहट से ही जवाब देते हुए मैं आगे बढ़ गया।

अब मैं ऐतिहासिक और महान कृति ताज के बाहरी गेट पर था चमकती धूप में ताज की छवि निहार कर भावुकता का बांध टूट चला और मैं कल्पना कर रहा था कि कैद खाने में रहते हुए ताज को एक नजर देख कर शाहजहां के [illegible] तसल्ली होती होगी।

शाहजहां और मुमताज के प्रेम का प्रतीक ताज जिसके अन्दर चिर-निद्रा में सोयी हैं प्रेमी युगल की आत्माएँ कमरे के ठीक बीच में मुमताज की कब्र और उसकी बगल में शाहजहाँ की। बाहर आकर मैंने कई फोटो लिया। वहां खड़ां होकर एक चित्र अपना भी खिचवायां । सोचा कि यदि मुझे जन्नत नसीब हुआ और वहा शाहजहां तथा मुमताज से भेंट हुई तो उन्हें वह चित्र पेश करुंगां कि यही है तुम्हारा ताज जो आज भी वैसे ही चमक रहा है। इसके पश्चात मैं दयाल बाग का मन्दिर देखने गया । निर्माण कार्य अभी चल ही रहा है और लगा कि मन्दिर पूरा होने में अभी बहुत समय लगेगा। निर्माण कार्य पूरा हो जाने पर यह मन्दिर स्थापत्य कला का एक नमूना होगा।

## १९. ब्रज दर्शन

**अहो भुवः सप्त समुद्र वत्याःद्वीपेषु वर्षेष्वधिपुण्य मेतत् ।**
**गायन्ति यत्र त्यजना मुरारेः कर्माणि भद्राण्य वताखन्ति ।।**

मथुरा वृन्दावन तथा आस पास के चौरासी कोस का क्षेत्र ब्रजभूमि के नाम से जाना जानां हैं। आज इधर नगर बस गए हैं पर आज से ५००० वर्ष पूर्व यह सारी धरती आदि पुरुष लीला मय पुरुषोत्तम श्री कृष्ण की लीला भूमि थी। आगरे से २०-२२ कि० मी० के बाद ही ब्रज भूमि के दर्शन होने लगे। मथुरा से पहले ही सूरवन मिला जिसमें सूरकुटी आज भी दर्शनीय है। यहीं पर सुर वल्लभाचार्य से मिले थे । आस पास के लता बृक्षों तथा कुंजों को देख कर आदि वृन्दावन की कल्पना की जा सकती है। श्री कृष्ण की लीला से सम्बन्धित मुख्य स्थान आज भी सुरक्षित रखे गए हैं। कंसवध स्थल एक टीले के रुप में सुरक्षित है जहां कई मन्दिर बन गए हैं। एक विशाल गेट से होकर मथुरा नगर में प्रवेश किया। सर्व प्रथम यमुना तट पर गया। वहाँ गन्दगी तथा बड़े बड़े कछुओं के बावजूद दर्शनार्थियों तथा स्नानार्थियों की काफी भीड़ थी। वहां से नौका द्वारा उस पार गोकुल जाना होता है। तट से थोड़ा हट कर कोलाहल भरे बाजार के बीच

द्वारकाधीश का विशाल एवम् भव्य मन्दिर हैं जिसमें श्री कृष्ण तथा राधा कीं मूर्तियां सुशोभित है। मथुरा से वृन्दावन तक पक्की सड़क वन गई है जिसपर सवारियों की सुविधा सुलभ है। मथुरा वृन्दावन रोड पर बिरला जी का वनवाया हुआ आधुनिक ढंग का बड़ा ही सुन्दर मन्दिर है जिसमें श्री कृष्ण की आदमकद प्रतिमा स्थापित है। यहां से थोड़ी दूर आगे ही वृन्दावन है। अवतो यह घनी आवादीं वाला एक नगर वन गया है पर कुछ स्थानो को अभी भी सुरक्षीत करके रखा गया हैं जिन्हे देख कर प्राचीन वृन्दावन की याद ताजी हो जाती है। इनमें प्रमुख स्थान है रासमंडल वंशीवट, कुंजवन, कालीदह तथा चीर घाट आदि। इन स्थानौ पर पहुंचकर लीला विहारी की वरवस याद आ जाती है। मेरा गाइड एक वारह तेरह वर्ष का लड़का था मेरी आँखों मैं आंसू देखकर उसने कहा था कि वहुत से लोग तो यहां आकर हिचकी वाध कर विलख पड़ते हैं। मेरा मन अतिशय भावुक हो चला था और इस परिस्थिति में मैं गुनगुना उठा,

"यही वो जगह है जहां श्याम सुन्दर, गैया चराया करते थे।
यही वृंदावन है जहां मुरारीं वाले, मुरालीं वजाया करते थे।
यही कुंजवान है यही वंशीवट है, यहीं कालीदह है यहीं रासन्डल,
यही है वो पथ जहां नटखट कन्हैया, माखन चुराया करते थे।
हैं धन्य व्रज के वासी निवासी है धनाधन्य हैंधन्यजीव सारे जो जननें यहां पे।
विमलवर दो केशव यहीं मैं जनम लूं, जहां कृष्ण, रास रचाया करते थे।"

वरसाने, गोकुल गाव तथा गोवर्धन पहाड़ अव केवल नाम के ही रह गए हैं। मन्दिर अवश्य दर्शनीय हैं। वृन्दावन में दक्षिण भारतीय शैली में वना श्री रंगनाथ जी का मन्दिर विशेष रुप से दर्शनीय है। दर्शनार्थियों द्वारा दिए गए दान से यहां एक आश्रम चल रहा है जहां पर चार-पांच सौ विधावाओं का खर्च चलता है। यहां वहुत से वगाली परिवार वस गए हैं धर्मशालाओं तथा सेवा संस्थाओं की वहुलता है।

देर तो वहुत हो चुकी थी पर कृष्ण की याद ने इतनी शक्ति भर दी कि वृन्दावन से चलकर मैंने छाता नामक कस्बे में आकर ही दम लिया।

वहां एक धर्मशाला में रात बिताकर दुसरे दिन दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में हरियाणा की प्रगति के शुभ लक्षण हर तरफ दृष्टिगोचर हो रहे थे। स्त्री पुरुष सभीं वड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। शिक्षा संस्थांओं ने वड़े उत्साह के साथ मेंरा स्वागत किया। खेतों के प्लाट वहुत वड़े २ थे तथा प्राय. प्रत्येक प्लाट में पानी की व्यवस्था थी।

दिल्ली पहुंचते २ शाम के सात वज गए। जव मैं अपने चि

शुभचितक वौद्ध विहार इन्स्टीट्यूट के प्रोफेसर श्री राधेश्याम द्विवेदी के यहाँ पहुंचा तो वे अपनी पत्नी की वीमारी के कारण वहुत व्यस्त थे पर उनके छात्रों ने उस रात्रि मे भी मेरे रहने खाने पीने आदि की उचित व्यवस्था कर दी जिससे मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ। इस वौद्ध विहार में लद्दाख के वहुत से निवासी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

दिल्ली मे श्रीं रामराज जी एवम् राष्ट्रपति भवन के श्री सिनहा जी ने मेरी यात्रा में वहुत रुचि लिया। आप लोगों के सहयोग से राष्ट्रपति निवास की शुभकामना भी मिली। रामराज एवं सिनहा जी का आशीर्वाद तथा सहयोग मैं भूल नहीं सकूगा।

—:०:—

★ आदमी को आदमी का प्यार ही वरदान है।
देवता तो दूर पहले राह में इन्सान है। ★ —कुसुम
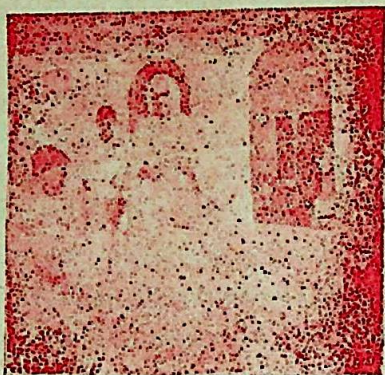
माता श्री ललिता शास्त्री का आशीश
लेते हुए पर्यटक, (नई दिल्ली
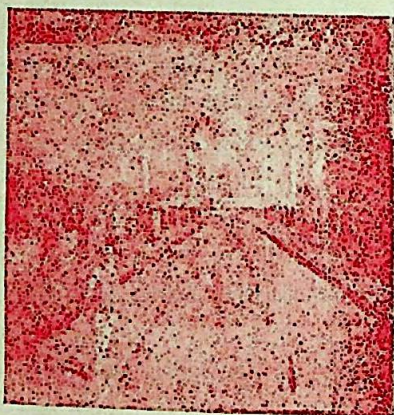
आगरे के ताजमहल में पर्यटक
श्री विमल कुमार पांडेय

## २० दिल्ली तथा शास्त्री सेवा निकेतन दर्शन

गुनाह छिपा नहीं रहता वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। --गांधी

दिल्ली में इस समय अन्तर्राष्ट्रीय मेला १९७२ लगा हुआ था। विज्ञान तथा टेक्नालाजी के क्षेत्र में आज का विश्व कितना आगे बढ़ा हुआ है इसका प्रत्यक्ष दर्शन इस मेले में हुआ। रूस के पवेलियम में चन्द्र तल भ्रमण तथा लूना खोद की सफलताओं की झाकीं दिखाई गई थी। जितनी चीजें इस प्रदर्शनी में एक साथ देखने को मिली उतनी शायद पूरे विश्व का भ्रमण करने पर भी न मिले। मेला देखने के वाद मेरा मुख्य कार्यक्रम शास्त्री सेवा निकेतन जाने का था। पूज्य शास्त्री जी की स्मृति में संचालित इस सेवा निकेतन को देखकर वर्धा के पवार आश्रम तथा संत विनोवा की याद ताजी हो गई। शास्त्री जी का दैनिक जीवन कितना साधारण था, इसकी कल्पना इस सेवा निकेतन को देख कर की जा सकती है। संत शास्त्री जी की कुटी देखकर आँखें नम हो गई। माता ललिता शास्त्री से मिलने की वड़ी उत्सुकता थी जिसका सुयोग शीघ्र ही मिल गया। मै लगभग एक घन्टा सेवा निकेतन में रहा। यहां का जीवन एक आश्रम जैसा था। अनेक दर्शनार्थी माता जी से मिलने आते थे और उनका असीम प्यार पाकर सन्तुष्टमन वापस जाते थे। माता ललिता शास्त्री की देख-रेख में सेवा निकेतन का कार्य बड़े ही सुचारु रूप तथा सुव्यवस्थित ढंग से चल रहा है। उनके सहयोगी बड़े ही निःस्वार्थ भाव और उच्च विचार वाले हैं। इन्हीं में एक श्री इन्द्रमणि सिह हैं जो स्वभावतः दलित तथा मजदूर वर्ग के समर्थक हैं। बी० कांम० करने के वाद ये कई अच्छे-अच्छे पदोंपर कार्यरत रहे पर इनके मानस में जो

सेवा भावना आन्दोलित हो रही थी उसकी तुष्टि इन नौकरियों मे सम्भव नहीं हो सकी और अन्ततः उन्है छोड़कर ये इस सेवा निकेतन में आ रहे जनसेवा मे इनकी अगाध रुचि है अतः यहां इन्हें पूर्ण संतोष है। जन सेवा करने वाले ऐसे ऐसे कर्मठ युवकों की आज समाज को वहुत जरूरत है।

इण्डिया गेट पर शहीदों की याद में ज्योति जलाई गइ थी। वहा से सचिवालय का दृश्य वड़ा सुन्दर लग रहा था। नई दिल्ली की तड़क-भड़क और शान शौकत को देखकर कोई नहीं कह सकता कि यह देश गरीव है। पुरानी दिल्ली में अव पुरानी यादे ही है। लालकिला तथा ज मा मस्जिद वीते युग की कहानी कह रहे है।

११-११-७२

आज श्री राधेश्याम जी के यहां जहां मैं टहरा हुआ था, प्रथम पुत्री पैदा हुई। मैं खुश था कि इन लोगों की खुशी में शामिल हो सका। सुवह जव उन लोगों से विदा लेकर चला तो उनके कनिष्ट भ्राता श्री रामसनेही जी की पत्नी ने रास्ते के लिए भी भोजनादि को व्यवस्था कर दी। वे ग्रैजुएट तथा एक विदुषी महिला हैं। उनकी निरभिमानता से मुझे वड़ा सन्तोप हुआ।

मैं राष्ट्रीय मार्ग १ पर चल रहा था। मीलों तक दिल्ली नगर परिषद के व्यापारिक संस्थान मिलते रहे। उसके वाद एक वार फिर हरियाणा की भूमि मिली जहां के निवासी उलहास में होड़ लगाते हुए से लगे। राष्ट्रीय पथ से गावों का सम्वन्ध जुड़ा हुआ था। खेतो मे दस से पचास हार्स पावर तक के ट्रैक्टर चल रहे थे।

—★—

# २१. पानीपत की अलिखी लड़ाई

अंधानुकरण से आत्म विकाश के बजाए आत्म संकोच होता है। 'अरविंद'

नगर में किलों के भग्नावशेष बता रहे थे कि यह एक ऐतिहासिक स्थान है। इतिहास साक्षी है कि यह नगर कितना अभिशाप्त रहा है जिसकी भूमि में एक से एक भयंकर युद्ध हुए हैं। पर यहां प्रचलित एक जन श्रुति के अनुसार इस स्थान पर एक और भयंकर युद्ध हुआ था जिसका उल्लेख इतिहास के पन्नों पर नहीं मिलता। यहा एक विशाल मसजिद है जिसे सिकन्दर शाह नामक एक जमीदार ने बनवाया था। मसजिद के नीचे एक बहुत बड़ा हाल नुमा तहखाना है जिसमें लगभग ५०० व्यक्ति छिप सकते हैं। सिकन्दर शाह के युग में यमुना नदी इस मसजिद से सटकर बहती थी। एक पार्श्ववर्ती बादशाह ने सिकन्दर पर आक्रमण कर दिया। सिकन्दर शाह अचानक हमले को सभाँल नहीं सके और उनका पलड़ा हल्का पड़ने लगा। उनके हारते सिपाही भाग कर मसजिद के नीचे वाले तहखाने में पनाह लिए। वे जरा साही दम ले सके थे कि किसी भेदिये के द्वारा सूचना पाकर दुश्मन की फौज एकदम तहखाने में पहुंच गई और सिकन्दर शाह के एक एक सिपाही कत्ल कर दिए गए। यमुना नदी से यह भीषण हत्याकान्ड नही देखा जा सका और कहते हैं कि उसी समय से वह मसजिद से बहुत दूर हटकर बहने लगी। यहां के लोगों की धांरणा है कि इस मसजिद में सच्चे दिल से मन्नत मागने पर मुराद निश्चय ही पूरी होती है।

इस समय शाम के चार बज रहे थे। सोचा था कि १०–१२ मिल और चलकर रात्रि विश्राम करूंगा पर इसी बीच दो युवक मिल गए जो एक हीं साइकिल पर करनाल जा रहे थे, जो लगभग ३० कि० मी० और आगे था। ये दोनो व्यक्ति किसी सरकारी संस्था में सेवारतथे और पानीपत घूमने आए थे। वे मुझसे बड़े प्रभावित हुए इन्होने मुझसे करनाल तक चलने का आग्रह किया। उनकें साथ यात्रा कुछ विशेष उत्साहपुर्ण हो गई और आठ बजते बजते हम लोंग करनाल पहुंच गए। दिल्ली यहां से १२८ कि० मी० पीछे छूट चुकी थी। हरियाना के इन उत्साही युवकों के साथ रात बड़ो सुखकर बीती।

★★★

# २२. धरती पंजाब की

**मानस भवन में आर्य जन जिसकी उतारें आरती,**
**:गवान भारतवर्ष मे गूंजे हमारी भारती**

१२-११-७२

पिछली रात अंधेरे मे चलते समय चेतक का एक चक्का पंक्चर हो गया था। उसे ठीक कराकर हम लोग (दो मित्रों के साथ) स्वधम् पास ही मे स्थित) हरियाणा सरकार का एक डायरी फार्म देखने गए जिसमे ३३ किलो दूध देने वाली गायें भी थी। अम्वाला नक हरियाणा प्रदेश ही है। उसके वाद पजाव की धरती शुरू हो जाती है। उस पंजाव की धरती जिसके वारे में राजेन्द्र सिंह वेदी के उपन्यास 'एक चादर मैली सी' मे करोंगी मैत्री और कपीत प्रवोध कहते हैं

"वही तो एक देश है जिसकी धरती में से आठों पहर लोवान की महक उठती रहती है... ............

"उसके पर्वत आकाश के पड़ोसी है और धरती की हरी ओढ़नी पर बोरानी रंग का एक भी तो छींटा नहीं...... .....

"जहां के पुरुष अक्खड हैं और स्त्रियां झक्खड़......... इत्यादि।

सचमुच पंजाव की धरती में यह जादू है। प्रगति के लक्षण चतुर्दिक दृष्टिगोचर हो रहे थे। दूसरे दिन अर्थात १३-११-७२ को मैं चन्डीगढ़ पहुच सका। चन्डीगढ़ की वनावट सजावट देखते ही वनती थी। हर तरफ एक ही प्रकार के मकान तथा मार्ग वने हैं। आधुनिकता की दृष्टि से चन्डी गढ भारत के गिने गिनाए शहरों में से एक है।

कुछ समय वाद मैं फतेहगढ़ में था जहां पर औरगजेव ने गुरु-गोविन्द सिंह तथा फतेहसिंह को दीवार मे चुनवा दिया था। अमनी ससझ से उसने इन वीरवालकों की आवाज को सदा के लिए वंद कर दिया

था पर क्या सचमुच उनकी आवाज बंद हो सकी ? आज भी यहां आने वाले हर आदमी को इन अमर शहीदों की मौनवाणी सुनाई देती है और उसका सिर श्रद्धापूर्वक झुक जाता है। इस स्थान पर रोजाशरीफ नामक एक दरगाह भी है जो इतनी पवित्र मानी जाती है कि विदेशों के मुसलमान भी यहां दफन होने के लिए पहले से स्थान सुरक्षित कराते है।

वर्फ शुरू होने से पहले ही काश्मीर से वापस आ जाना था अत: पैरों में अधिक शक्ति आगई थी। लुधियाना पहुंचने की जल्दी थी। वहां पहुचते पहुचते शाम हो गई। यहां पर हमारे चिर शुभचिंतक रामसनेही जी रहते हैं जिनका जिक्र मैं पिछले पन्नों मे कर आया हूं। थे पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी में है। आरम्भ से ही इनके द्वारा मुझे पूरा प्रोत्साहन मिलता रहा है। यहां मैं इन्ही के यहां ठहरा। ये जिस मकान में रहते हैं उसके गृहस्वामी बड़े प्रेमी सज्जन हैं।

दूसरे दिन हम लोग यूनिवर्सिटी देखने गए। वहां पर एग्रीकल्चर के प्रोफेसरों से पंजाब की कृषि की प्रगति के बारे में विशेष जानकारी मिली। हरियाणा की तरह यहां पर भी खेत बड़े लम्बे लम्बे थे और पानी की हर तरफ उचित व्यवस्था थी। हर तरफ बड़े २ ट्रैक्टर चल रहे थे। इस समय मैं जालन्धर के मार्ग पर था। सतलज पर बने एक मील लम्बे पूल से गुजर रहा था। दानों तरफ का दृश्य बड़ा ही मनोरम था। जालन्धर में प्रेस वालों ने मेरे साथ बहुत सहयोग किया। इधर जहां कही मुझे कोई परिचित नहीं मिलते थे तो मैं गुरुद्वारों में ठहर जाया करता था। यहां भी एक गुरुद्वारे में ही ठहरा। पंजाब के गुरुद्वारो में एक विशेषता दिखी कि वहां हर यात्री को भोजन तथा आवास की सुविधा बिना किसी हिचक के मुफ्त मिल जाया करती है।

१५-१२-७२

गुरुद्वारे में ८ बजे प्रातः से ही पाठ आरम्भ हो गया। आज किसी गुरमाता का जुलूस निकल रहा था। मैंने मीलों तक जुलूस का साथ

दिया। सभी लोग मेरी यात्रा में रुचि ले रहे थे तथा मेरे अनुभव के बारे में पूछताछ कर रहे थे।

कृषि के क्षेत्र में पंजाब की प्रगति का रहस्य धीरे-धीरे खुल रहा था। एक दिन गुरुदासपूर के राजकीय अन्न गोदाम को देखा तो लगा कि पूरे पंजाब का अन्न यहां जमा है पर जब वैसे-वैसे कई गोदाम स्थान-स्थान पर दिखे तो लगा कि पूरे देश का गल्ला केवल पंजाब में इकट्ठा कर दिया गया है। मैंने पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर से कौतूहलवश पूछा कि आप की कृषि के विकास का रहस्य क्या है तो उन्होंने बताया कि इसके कई कारण है। प्रथम, हर पंजाबी किसान अपनी फसल से इतना प्यार करता है जितना अपने बेटे से। अपनी फसल को लहलहाते देखना उसके लिए परमानन्द का विषय है। दूसरी बात यह है कि पंजाब के किसान एक दूसरे की फसल को देखकर ईर्ष्या नहीं करते बल्कि उनमें आपस में स्पर्धा है आगे बढ़ने की। कृषि विभाग से सभी किसानों का सतत सम्पर्क बना रहता है फसलों में जहाँ कहीं भी जरा शिकन लगी कि यहां के किसान कृषि विभाग वालों की नाक में दम कर देते है। मिट्टी बालू मिली है पर किसानों का पसीना इसमें बहुत अधिक मात्रा में मिल जाता है जो अन्न की विशाल राशि के रूप में निकलता है। धनी तथा गरीब हर कोटि के किसान अपने खेतों में स्वयम काम करते हैं। एक बात और है यहाँ मालिक और नौकर की भावना बहुत कम है। इसका मुझे प्रत्यक्ष प्रमाण भी मिला। एक जगह एक सरदार जी ट्रैक्टर चला रहे थे। मैं यों ही उनसे कुछ बातें कर रहा था तब तक देखा एक संभ्रांत से सरदार जी कार से आए और आते ही ट्रैक्टर ड्राइवर सरदार जी से पूछा कि तुम खाना खाए कि नहीं। ड्राइवर सरदार जी ने बड़ा बेतकल्लुफी से कहा, "मैं तो समझा कि तुम मेरी रोटी लेकर आ रहे हो। "कार वाले सरदार जी ने कुछ

लज्जित सा होकर कहा' "माफ करना भाई, ऐसा करो तुम कार लेकर जाओ और खाना खाकर आ जाओ। तबतक मैं ट्रैक्टर चलाता हूं। "इसके बाद ट्रैक्टर वाले सरदार जी, कार में आगए तथा कार वाले सरदार भी मस्ती भरा गीत गाते हुए ट्रैक्टर पर आ विराजे और थोड़ी ही देर बाद उनके गीतो के बोल ट्रैक्टर की भड़भड़ाहट में खो गए। ड्राइवर सरदार जी ने बताया कि ये सरदार जी उसके मालिक थे। हम लोगों के यहां जितने हल हैं पंजाब में ट्रैक्टरों की संख्या उससे कुछ ही कम होगी। पक्की सड़कें गांव तक गई हैं। अधिक परिश्रम और कृषि के प्रति अगाध मोह ही पंजाब की प्रगति का रहस्य है। पंजाबी किसान बड़े जीवट वाले होते हैं। आलस्य इनमे नाम मात्र का भी नहीं है और अपनाकाम स्वयम् करने की एक अद्भुत लगन इनमें है जो औरों के लिए उदाहरण स्वरुप है। शाम तक मैं पठान कोट पहुंच जाना चाहता था लुधियाना से पठान कोट प्राय. २०० कि० मी० है। आज पता नहीं क्यों पैर आगे बढ़ रहे थे पर मन अपने प्रिय जनों की याद में पीछे खिच रहा था।

☆ॐ☆

## २३. अभिशप्त कुशेसर बन

दर्द बढ़ता है तो बढ़ जाये मुझे डर क्या है।<br>
रात घिरती है तो घिर आये मुझे डर क्या है॥<br>
हाथ में डांड है जब, हौसला दिल में बाकी।<br>
फिर ये मझधार, ये तूफां ये भंवर क्या है॥

'दोपी.

हिमांचल प्रदेश के एक गांव के पास एक मन्दिर और समीप ही बनी एक कुटी देख कर वहीं पर स्नान-भोजनादि के लिए रुका। कोई पांच एग्ड़ का यह प्लाट था। जसमे मन्दिर तथा कुटी थी। लोगों ने बताया

कि पहले यहां जंगल था। आभया नन्द नामक एक साधू ने इसे आबा
कराया। वे इसी कुटी में रहते थे। गांव वालों की श्रद्धा के पात्र थे। ईश्व
की महिमा बड़ी विचित्र है। इससे वही बचा सकता है जिसे वह स्वयम् बचा
इसी लिए तो सुग्रीव ने राम से कहा था कि, "अतिसय प्रवल देव तव माया
छूटहि राम करहु जो दाया।" जब विश्वामित्र और नारद जैसे महर्षि
माया के चक्कर से नहीं बच सके ओ सामान्य जन की क्या विसात
अन्तत: बाबा जी को भी नारि नयन सर लग ही गया। जंगल की
जमीन को उन्होंने गांव के जाट को देदी, जिसकी बड़ी आलोचना हुई औ
उनके चरित्र पर आक्षेप किए गए पर बाबा वेखबर रहे। कुछ दिन बा
वहीं के एक समर्थ व्यकि श्री पूरन सिंह ने उस जमीन को लिखा लि
और यहीं से उसके अभिशाप की कहानी आरम्भ हुई। वरसों तक पू
सिंह और साधू में मुकद्दमा चलता रहा और अन्त में समझौता हो
जिसके परिणाम स्वरुप वह जमीन कई व्यकियोंनें बट गई। कहते हैं
जिस जिसको वह जमीन मिली उसमें से कोई भी उसका ठीक से उपयो
नहीं कर सका और सबका कुछ न कुछ अनिष्ट हुआ साधू आभयानन्द
दयनीय तथा कष्टकर अवस्था में मरे। इसके बाद सभी लोगों ने
अभिशप्त जमीन को छोड़ दिया जिसमें अब गांव के पशु चरते हैं। इस क
ने मुझे बहुत प्रभावित किया क्यों कि इसी से मिलती जुलती एक कथा से
स्वयम् भी सम्बन्धित हूं पर भगवान की कृपा है कि यह जमीन अभि
मुक्त है। क्यों कि पांच वर्ष से अधिक हो गए किसी भागीदार का अनि
नहीं हुआ।

हिमाचल प्रदेश की बात चली है तो भाखरा नंगल योजना की च
कर देना उचित होगा। भाखरा कस्बे से ८ कि० मी० दूर दो पहाड़ि
के बीच में एक सरोवर है जिसका नाम गोविन्द सागर है। इसकी ऊं
७४० फीट है। विश्व में इतने ऊंचे बांध कम ही होंगे सरोवर में म
पालन तथा नौका विहार होता है तथा इसके पानी से इतनी बिजली

की जाती है जिससे सारे हिमाचल प्रदेश की ही जरूरत पूरी नही होती वल्कि पंजाब, हरियाना तथा राजस्थान का भी काम चलता है और लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई भी होती है यहां से नंगल हैंडिल कैनाल निकाली गई है जो पूरी तरह पक्की है। आवश्यकता से अधिक पानी के लिए इस नहर का उपयोग होता है। हिमाचल प्रदेश का यह क्षेत्र व्यापारिक दृष्टि कोंग से महत्व पूर्ण है। इधर की धरती प्रायः ऊंची नीची है तथा निर्माण कार्य द्रुत गति से चल रहा है।

—:★:—

## २४. अपने जवानों के बीच

असम्भव शब्द मुर्खों के शब्द कोश में होता है। 'नैपोलियन,

पठान कोट पहुंचकर हनुमान मन्दिर में ठहरा। यहां के पुजारी जी ब्रह्मचारी जी के नाम से जाने जाते हैं। ये स्वतन्त्रता संग्राम के एक कर्मठ सेनानी के रुप में वरसों तक जेल में रह चुके हैं। सत्याग्रह में इनको गोली लगी थी। जब गुलजारी लाल नन्दा ने साधु समाज की स्थापना की तो उसमें ब्रह्मचारी जी वहुत दिनो तक जिम्मेदार पद पर रहे। बाद में नेताओं ने इन्हें वृद्धावस्था के कारण अवकाश देना चाहा और इनके लिए पेंशन की व्यवस्था की तो इन्होंने विनय पूर्वक पेंशन लेना अस्वीकार कर दिया। अकेले आदमी के लिए पेंशन लेना इन्हें गवारा नही हो सका हाला कि अब इन्हें कष्ट हो रहा है। जल्द ही ब्रह्मचारी जी से मिलने का सुयोग प्राप्त हो गया। जैसा सुना था वैसा ही पाया-एक दम निश्छल और निस्वार्थ। वातों वातों में उन्होंने वताया कि वे वक्सर में गंगाघाट पर वहुत दिनों तक रह चुके हैं यहां पर मिलेट्री के अधिकारियों के सहयोग से इन्होंने हनुमान जी का मन्दिर बनवाया है और अधिकारियों तथा जवानों का सहयोग इन्हें बराबर मिलता है। पास ही में पहाड़ो से एक नदी गिरती है जिससे वहां का वातारण काफी ठंठा रहता है। ब्रहमचारी

जी के साथ रह कर बड़ी तसल्ली मिली ।

दूसरे दिन सुबह ब्रह्मचारी जी का आशीर्वाद लेकर जम्मू के लिए चला । आज फिर अपने प्रियजनो की याद मन में हिलोरे ले रही थी । मैं अब काश्मीर की धरती पर था, अपनो से बहुत दूर । रावी का पुल पार करने के बाद काश्मीर घाटी के लुभावने दृश्य दिखाई देने लगे थे । हिमालय के उत्तुंग शिखरों की आभा झलकने लगी थी पर फिर भी मन कहीं पीछे छुटता सा लग रहा था । एक बार तो मन में आया कि वापस लौट चलूं क्यों कि घर के प्रबल मोह ने मुझे विह्वल सा कर दिया था पर दूसरे ही क्षण दृढ़ निश्चय ने जोर मारा कि जब निकल गया हूं तो बिना यात्रा पूरी किए वापस नहीं लौटूंगा मार्ग में यदि सांस भी टूट जाय तो कोई बात नही।

मुरली वाले तेरी दुहाई है. मैंने बढ़ने की कसम खायी है,<br>
क्यों तड़पता है जिगर, क्यों ये दर्द दिल है उठा।<br>
आज क्यों फिर से मेरी आखें भर आई है,<br>
ये दिलकशी से नजारे मन बहला नही पाते ।<br>
मेरे प्रभू - तूं बता ये कैसी याद आई है ।<br>
भलेंही रावी के तट पै मेरो चिता जले,<br>
मैं न लौटूंगा। मैंने तेरी कसम खाई है ।। 'मुरली वाले।

आखें खूब बरसीं । वेदना जब आंसू बनकर आंखों के रास्ते निकल गई तो दिल कुछ हल्का हो गया । जम्मू क्षेत्र शुरु हो गया था । यह इलाका प्रायः पहाड़ी है पर कहीं कहीं बांध बना कर सिंचाई की व्यवस्था कर ली गई है जहां कुछ फसलें हो जाती है । जगह २फौजी अड्डे दिख रहे थे तथा हर क्षेत्र में सैनिक ड्यूटी पर मिल रहे थे । उन लोगों की बातों से बड़ा उत्साह मिलता था । जवानों का मनोबल बड़ा ऊंचा था । उनकी हर चेष्टा में एक विजेता की आभा थी । मेरी यात्रा में वे बड़ी रुचि ले रहे थे । पहले पठान कोट से जम्मू तक रेल लाइन नहीं थी पर अब जम्मू तक रेल लाइन बिछ गई है जिससे जनता के लिए बड़ीं सुविधा हो गई है। ऊंचे नीचे राष्ट्रीय पथ १ अ पर चलते हुए मैं जम्मू के प्रसीद्ध रघुनाथ

मंदिर में पहुच कर ही रुका। मार्ग में कई स्कूलों में मेरा स्वागत हुआ तथा मेरी सदभावना यात्रा एवं इसके उद्देश्यों की सराहना की गई। इधर स्कूलों में प्राय: कृष्ण को लक्ष्यकर के प्रार्थना के गीत सुनने को मिले। एक गीत के बोल मुझे अभी तक याद है, "हे कृष्ण तुम्हारी उल्फत में, गुलजार भी है और प्यार भी है" इत्यादि मार्ग में कहीं कहीं स्कूलों मन्दिरो या ऐसे अनेक असैनिक संस्थानों के भग्नावशेष मिल रहे थे जो हाल के युद्ध में पाकिस्तानियों द्वारा किए गए अत्याचार की कहानी कह रहे थे।

१७-११-७२ जम्मू का रघुनाथ मन्दिर बड़ा विशाल तथा भव्य है। इसमें अनेक देवी देवताओं की असंख्य बड़ी बड़ी मूर्तियां हैं। इतनी बड़ी मूर्तियां मुझे दक्षिण भारत में ही देखने को मिली। इस मन्दिर का निर्माणकर्ण सिंह को माता जी ने कराया था। मन्दिर के प्रांगण में उनकी एक बड़ी ही खूबसुरत एवं विशाल प्रतिमा स्थापित है।

अखनूर के पास चिनाव नदी को पार किया। सैनिक दृष्टि कोण से अखनूर का विशेष महत्व है। यहां से लगभग ५ मील की दूरी पर चिनाव नदी के किनारे सोहवाल नाम का एक गांव है जहां सोहनी और महीवाल का अमर प्रेम पनपा और पला था। इसी दरिया चिनाव ने इन दो अमर प्रेमियों को अपने अंक में समेट लिया था। चिनाव की लहरों में आज भी सोहनी और महीवाल के प्रेम गीत गूंज रहे हैं।

अखनूर के फौजी चेक पोस्ट के बाद बड़ी विकट चढ़ाई है। इधर आम लोगों का आना जाना वर्जित है। जम्मू के पास से पाकिस्तान के सियालकोट का इलाका करीब ही पड़ता है। इस क्षेत्र में मीलों लम्बा शरणार्थियों का कैम्प फैला था, मैं जहां चल रहा था वहां से सीमा इतनी करीब थी कि कभी कभी फायरिंग की आवाज स्पष्ट सुनाई दे जाती थी। अखनूर के चेकपोस्ट के बाद सेना के जवानों ने मुझे आगे बढ़ने से रोकदिया पर बाद में जवानों की ही सहायता से मैं पश्चिमी क्षेत्र के रजौरी कैम्प में पहुंचा। रास्ते में जवानों ने मेरे साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। मुझे ५२५ बटालियन में हवलदार श्री राजदेव के पास पहुंचना था जिन्हें मेरे यात्रा के प्रति रुचि रही है। जब

मैं श्री राजदेव के यहां पहुंचा तो वहां मेरा बड़ा शानदार स्वागत हुआ। श्री राजदेव का अपनी कार्य कुशलता के लिए वहां अच्छा मान है। उन्होंने अपने साथियों से मेरा परिचय कराया। मुझे एक बार ऐसा लगा कि इतनी दूर आकर भी मैं अपने घर जैसे वातावरण में हूं।

१८–११–७२ आज सुबह श्री राजदेव मुझे अपने कार्यालय में ले गए और वहाँ के कर्मचारियों से मेरा परिचय कराया। कार्यालय के इंचार्ज सूबेदार श्री चौहान जी ने बड़े उत्साह से हाथ मिलाया। उन्हें मेरे बारे में पहले से ही सूचना थी। इसके पश्चात मुझे कमान्डिग अफीसर श्री टी. एस. ढिल्लन से मिलाया गया जो बड़ी ही सहृदयता पूर्वक मिले। कई घंटे तक वहाँ रहा और जवानों तथा अन्य कर्मचारियों की कार्य प्रणाली देखता रहा। अधिकारी से लेकर छोटे कर्मचारी तक सभी अनुशासन बद्ध थे और अपना काम बड़ी द्रुतगति से सम्पन्न कर रहे थे। चौहान जी की कार्यक्षमता मुझे विशेष जची जवान अपनी समस्या लेकर उनके पास आते और सन्तुष्ट मन चले जाते थे। मुझे और भी सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयों में जाने और वहां का काम देखने का अवसर मिला है पर जो चुस्ती और कर्तव्य परायणता की भावना यहां देखी वह कहीं भी देखने को नहीं मिला था। विशेष कर सरकारी कार्यालय की सुस्ती के बारे में तो कुछ कहना ही व्यर्थ है। हर स्तर पर लापरवाही और अक्षमता के बावजूद इन सरकारी कार्यालयों में काम करने वालों को कितनी सुविधाएं मिलती हैं? पर मिलेट्री वालों को, जिनके ऊपर अपने राष्ट्र की रक्षा की गम्भीर जिम्मेदारी है, हम उचित सुविधाएं नहीं दे पा रहे। यह एक गम्भीर प्रश्न है। जिस पर हमें ध्यान देना ही होगा। लगभग ५,००० फीट की ऊंचाई पर स्थित रजौरी कैंप में बर्फीली सुबह में भी जवान बड़ी ही मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी पर जम जाते थे। एक बात ने विशेष प्रभावित किया। जवानों में विभिन्न प्रान्त के लोग थे पर आपस में सभी हिन्दी मे ही बात करते थे। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा थी जिसे उन सबको एक सूत्र में बांधरखा था।

हिन्दी का विरोध करने वालों को कभी मिलेट्री वालों से मिलना चाहिए अहिन्दी प्रान्त के सैनिक भी वड़ी सुविधापूर्वक हिन्दी बोल रहे थे। जवानों के साथ ही मैं रास्ते को काटती हुई पहाड़ी नदी पर बने हुए झूले के पुल को पार कर रजौरी बाजार देखने गया। पनचक्की के बारे में सुना अवश्य था पर देखने को यहीं मिला की पानी की तेज धारा बड़े बड़े पंखों पर गिरती थी जिसके सहारे पर चक्की चलती थी। पहाड़ी पर सीढ़ी नुमा छोटे छोटे खेत हैं जिसमें धान तथा गेहूं की फसलें हो जाया करती है। इस क्षेत्र में गुज्जर जाति के आदि वासी हैं। ये खाना बदोश हैं। वर्फ गिरने के पूर्व ये लोग अपनी भेड़ बकरियों को लेकर मैदानी इलाकों में उतर जाते हैं। बकरीयाँ आदमी के बराबर ऊंची होती हैं। भेड़ां तथा बकरीयों के ऊन पर ही इनकी जीविका चलती है। इनके झुन्ड के झुन्ड अपना सामान खच्चरों पर लाद कर नदियों के किनारे किनारे मैदानों की ओर बढ़ते जाते हैं। कुछ आदमी भेड़ बकरियों को घाटियों में चराते हुए चलते हैं और शाम को निश्चित स्थान पर अपने गिरोह वालों से मिल जाते हैं। छोटे छोटे तम्बुओं में रात विताकर सुबह फिर डेरा पीठ पर लाद लेते हैं और चल देते हैं। सर्दी के मौसम में मैदानों में रहते हैं तथा गर्मी शुरु होने पर अपने स्थानों को लौट आते हैं। यही इनका जीवन है। स्त्री पुरुष दोनो का पहनावा प्राय: एक सा होता है सलवार और लाल रंग की कुर्ता। स्त्रियों के कानो में बड़े बड़े झुमके लटकते रहते हैं। शादी ब्याह बड़े सादे ढंग से होता है शाम को वरपक्ष कन्यापक्ष वालों के घर से दुल्हन को वास के डोले में बैठाकर वापस चला जाता है। ये लोग रात को प्राय: निवस्त्रही सोते हैं।

१९–११–७२ सबेरे जवानों और अधिकारियों से विदा लेते समय दिल भरा हुआ था। कई दिन तक इनके बीच रहने से इनके साथ गहरी आत्मीयता हो गई थी और सच्ची बात तो यह है कि इनके कठोर जीवन को देखकर मेरे अन्दर काफी उत्साह भी भर गया था और इससे मिली प्रेरणा मेरे लिए पर्याप्त सम्बल का काम कर रही थीं। आगे लगभग १५ माल की बीहड़ घाटी थीं जिसे साइकिल से पार करना बड़ा कठिन था।

बड़ी तेज ठंडी हवा चल रही थी। पहाड़ियों पर बरफ का गिरना, बड़ा मनोहारी लग रहा था। तवी नदी को पार कर मैं जम्मू के गांधी कालोनी पहुंचा और वहां के जन प्रिय नेता क्षेत्रिय कांग्रेस प्रेसीडेन्ट और एम० एल० सी० श्री सरदारी लाल महाजन से भेट हुई। महाजन जी उत्साह पूर्वक आतिथ्य किया। दूसरे दिन उन से विदा लेकर चला तो मानस पटल पर जम्मू के मधुर अनुभव एक के बाद एक आजा रहे थे। रास्ते में कई जगह दुर्घटना ग्रस्त ट्रक पड़े हुए थे जो इन भागों की बीहड़ चढ़ाइयों तथा घुमावों की गवाही दे रहे थे। हिमाचल प्रदेश से पूरे काश्मीर तक कई जगह घरों के छत मिट्टी केबने हुए थे। लोग बताते थे कि बरसात में ये छत चूते नही। चलते चलते एक बार फिर रावी के तट पर आगया था।

—:★:—

## २५. रावी तट की कुटी

अब तक कोई भी व्यक्ति गलतियां किये बिना महान नहीं बन सका।

'ग्लेडस्टन,

रावी के किनारे किनारे चलते हुए शाम हो गई। पास ही में एक मिलेट्री कैम्प था और उससे कुछ दूर पर एक छोटी सी कुटी थी। कुटी से हट कर एकाध दूकाने भी थी। कुटी प्रायः खाली थी न बहुत साफ न बहुत गन्दी। देखने से ऐसा आभास होता था कि इसमें कोई रहता है। यहां का एकान्त मन को भा गया अतः मैंने वहीं रात बिताने का विचार कर लिया सोच। कोई साधू महात्मा रहते होंगे, आने पर उनका सत्संग भी हो जायगा। कुटी के आगे सड़क बन रही थी और आस पास अलकतरा के ड्रम बिखरे हुए थे। वहां से मिलेट्री कैम्प की झिलमिल रोशनी तथा दूकानो के दिए

दिखाई दे रहे थे मैंने अपना छोटा सा विस्तर फैला लिया तथा मोमवत्ती जलाकर अपनी डायरी खोल कर बैठ गया। ठायरी लिखते लिखते रात के ९वज गए कुटी के पीछे एक पहाड़ी सोता था। जिसकी कलकल की मद्धिम ध्वनि कुटी तक आ रही थी अवतक कोई नहीं आय। तो मैं सोने का उप क्रम करने लग। । मुझे ऐसा लगा कि कोई आदमी 'ओम' का उच्चारण कर रहा है कुछ देर बाद ऐसा लगा कि सोते के किनारे कोई सस्वर मंत्र पाठ कर रहा है । अव मुझे सन्देह नहीं रहा कि यह कुटी किसी साधु की है जो वाहर में मन्त्रोचार कर रहें हैं और थोड़ी देर में कुटी में आएगें । मैं यूँहि विना किसी से पूछे यहां जम गया था अतः उनके आने तक जगना और उनसे वात करलेना आवश्यक था। साधु बाबा के आने में देर हो रही और इधर मुझे नींद आ रही थी मैंने भी मन ही मन गायत्री मंत्र का जाप किया और वास की किवाड़ को वन्द कर सो गया । रात को साढ़े बारह बजे थे कि बाहर से आवाज आई, "सो गए बच्चा, कोई बात नहीं मैं बाहर ही सो जाऊंगा।" मैंने उठ कर मोमवत्ती जलयी औरबाहर देखा। वहां कोई नहीं था। मोमबत्ती को जलता हुआ छोड़ कर तथा किवाड़ को खुला छोड़ कर मैं फिर सो गया। ४वजे के लगभग फिर आवाज आई उठ जाओ सवेरा हो गया।" मैं उठा और फिर वाहर आकर देखा वहां कोई नहीं था अतः मैंने अपना विस्तर समेंट लिया और चलने की तैयारी करने लगा। पास की दूकान वाला भी जाग चुका था। मैं दूध लेने के लिए उसकी दूकान मे गया। उसने मुझे कुटी मे से आते देख तो विस्मय पूर्वक पूछा।

"क्या आप रात कुटी में ही सोए थे ? आपको डर नहीं लगा ?" मैंने कहा।—"नहीं तो। पास ही कोई महात्मा जी देर रात तक मंत्र पड़ते रहे थे।"

दूकान वाला एक दम आश्चर्य चकित था। उसने वताया कि १९६५ भारत पाक युद्ध के पहले इसमे एक माहत्मा जी रहा करते थे।

यहां के लोग उनके खाने पीने का प्रवन्ध कर दिया करते थे । दूकान वाला भी प्रायः उन्हें खाना पहुंचाया करता था । वैसे उन्होने कभी किसी से कुछ मांगा नहीं पर फिर भी उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं हुआ । श्रद्धा पूर्वक जिस किसी ने उन्हें कुछ दिया उसे इन्होंने स्वीकार कर लिया । युद्ध के दौरान यहाँ के पूरे लोग क्षेत्र छोड़ कर चले गए थे । युद्धोपरान्त लोग धीरे धीरे आने लगे पर महात्मा जी नहीं लौटे । जब वहुत दिनो तक उनका पता नहीं चला तो लोगों ने समझा कि उनका देहान्त हो गया वैसे कुटी अभी भी वैसी की वैसी है केवल महात्मा जी नहीं. हैं लोगों को कुटी के आस पास उनकी आवाज सुनाई देती है । कई लोग तो सच या झूठ यहां तक कहते हैं कि उन्होंने महात्मा जी को कभी कभी वहुत सवेरे कुटी से निकलते भी देखा है । लोगों का विश्वास है कि उनकी आत्मा अभी भी कुटी में विराज मान है । दूकान दार की वातें सुनने के वाद मैं यही तय नहीं कर सका कि रात की घटनाएं स्वप्न थीं अथवा सत्य ।

—:★:—

## २६. स्वर्ण मन्दिर से लेकर जालियाँ वाला बाग तक

अनेकों प्रश्न ऐसे हैं जो दुहराये नही जाते ।
वहुत उत्तर भी ऐसे हैं जो वतलाए नहीं जाते ।।
हुआ क्या आंख से आंसू अगर वाहर नहीं निकले ।
वहुत से गीत भी ऐसे हैं जो गाये नहीं जाते ।। "रंग"

महात्मा जी की वात सोच कर मन में एक सुखांनुभूति हो रही थी । अव मेरा लक्ष्य अमृतसर का प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर था । चार वजे शाम को मैं अमृतसर पहुंचगया । दो सिख युवकों के सहयोग से स्वर्ण मन्दिर देखने का सहयोग मिल गया । एक वहुत वड़े सरोवर के वीच में वना हुआ यह मन्दिर शाम की रोशनी में चमक रहा था । और सरोवर के पानीमें रोशनीकी छाया झिल मिला रही थी । मन्दिर के संग्रहालय में एक से वढ़कर सजीव चित्र सजाकर रखे गए हैं । ऐसे चित्र मैंने आज तक

नहीं देखा था । पँजाबिओं ने तथा बिशेष कर सिखों ने दुश्मनो के कैसे कैसे जुल्म सहे है इसकी कल्पना उस संग्राहालय में रखी वस्तुओं तथा चित्रों को देखकर की जासकती है । मन वेदना से भर गया । सिख धर्म के दश गुरु ओंका इतिहास तथा उनके वलिदान की अमर गाथाओं से सम्बन्धित दुर्लभ चित्र तथा वस्तुए यहां संग्रहीत है । जितनी सुन्दर व्यवस्था स्वर्ण मन्दिर की है । उतनीशायद ही किसी और मन्दिर में हो । यहाँ सदा सदाव्रत चलता रहता है तथा विना जातिप्राति के भेद्र भाव के रहने, खाने, तथा विस्तर और रजाई तक की मुफ्त व्यवस्था है । मन्दिर का लंगर सदा चलता रहता है ।

इनके बाद मैं जांलियां वाला वाग गया । इस वाग के सम्बन्ध में मैं वचपन से ही पढ़ता आ रहा हूं पर वहा जो कुछ देखा उससे यही लगा कि इतिहास के पन्नों पर अग्रेजों के तत्याचार के इस ज्वलन्त उदाहरण के सम्वन्ध में वहुत कम लिखा गया है । डायर द्वारा किए वीभत्स नरसंहार का चित्र आंखों के सामने सजीव हो उठा । वह कूआं आज भी वैसा ही है जिसमें गोली के शिकार सैकड़ों निरपराध व्यक्ति गिरे थे और दूसरे दिन उसमें से उनकी लाश ही निकली थी । पहले यह जमीन के बरावर था अव थोड़ा ऊंचा बना दिया गया है । उस गलियारे का फाटक भी वैसा ही सुरक्षित है जहां से डायर ने फायरिंग कराया था । दरवाजे से घुसते ही शहीदों के प्रति श्रद्धा से सर झुक जाता है । दीवारों पर गोलियों के निशान अभी तक डायर के वर्वर अत्याचार की कहानी कह रहे हैं स्वतंत्रता का जो महल आज हमारे सामने खड़ा है उसकी नीवं में शहीदों का कितना खून लगा है, इसका अन्दाजा यहीं आकर लगाया जा सकता है ।

—.—:—

## २७. पुजारी की कैद में

**उठा दिया तो है लंगर हवा के झोंको में।**
**किधर सफीना है, साहिल कहां नहीं मालूम ।।** "जलील

२२-११-७३ अमृतसर से अपने मित्र सिख युवकों से विदा लेकर जालंधर के लिए चल पड़ा। यहां से जलन्धर ९० कि० मी था। कुछ ही दूर गया था कि देखा कि एक मोड़ पर अच्छी खासी भीड़ जमा है और लोग हंस रहें हैं। बात यह थी कि एक सरदार जी के ट्रैक्टर में एक कुत्ता फंस गया था और मुसीबत यह थी कि जो कोई भी उसे निकालने की कोशिस करता था उसे वह काटने लगता था। सरदार जी की परेशानी देखने लायक थी। उन्हें अपने खेत में पहुंचने की जल्दी थीं और इधर कुत्ते को जीवित निकालने की चेष्टा चल रही थी। लोगों को एक अच्छा मसाला मिल गया था। जालन्धर पहुंचा तो देखा कि वहां पर पिछले युद्धों में जीते हुए एक पैंटन टैंक पर बच्चे खेल रहे थे। पैंटन टैंक, जिसकी अजेयता पर पकिस्तान एवं अमेरिका को नाजथा आज इनदशा में यहांपड़ा था और उसपर पंजाबी बच्चे खेल रहे थे। पंजाब के अधिक हिन्दू मन्दिरों में जातपात के सम्बन्ध में बड़ी पूछताछ होती है। अनजान व्यक्तियों को विशेषकठिनाई होती है। आज एक ऐसे ही मन्दिर में पनाह मिली पर इसके लिए मुझे अपने ब्राह्मण होने का विश्वास दिलाने के लिए बड़ा कठिन प्रयास करना पड़ा। इस यात्रा में अबतक मैं २५०० की मी की दूरी तैकर चुका था। कल लुधियाना के लिए चलूंगा। पर पुजारी जी ने मेरी परेशानी बढ़ा दी। हुआ यह कि सवेरे जब मेरी नींद खुली तो मैंने अपने को कमरे में बन्द पाया। पुजारी जी बाहर से दरवाजा बन्द करके कहीं चले गए थे नित्य कर्म करने की जल्दी थी पर मैं वेबस था। कोई चारा नहीं था। पास में कोई नहीं था जिसे आवाज लगाई जाय और फिर बाहर से यदि ताला लगा हो तो कोई आकर भी क्या करेगा। अब तो पुजारी जी शायद भूल ही गए थे कि उन्होंने मुझे मन्दिर में कैद कर रखा

है। साढ़े सात बजे आए और दरवाजा खोलते हुए बोले कि जरा मैं स्नान करने लगा इसी लिए देर हो गई। गुस्सा तो बहुत आया था पर चूंकि मैं अनजान जगह पर था और फिर सद्भावना यात्रा पर था अतः कोशिस पूर्वक स्वर को संयत कर बोला कि मैंने तो आप से रात मे ही कह दिया था कि मैं बहुत सवेरे ही निकल जाऊंगा। पुजारी जी पर कोई खास असर नही हुआ। उन्होंने केवल इतना ही कहा, चलो कोई बात नहीं।" वे मुझे बन्द क्यों कर गए थे इसका कारण उन्होंने तो कुछ नही बताया पर मैं आपको बता दूं, उसका एक मात्र कारण यही था कि उन्हें डर था कि मैं उनका दो तीन पुराना बर्तन, एक टूटी चार पाई, एक फटा गद्दा तथा एक पुराना कलेन्डर लेकर चलता बनूंगा। बाहर बादल घिर रहे थे और पानी आने ही वाला था पर मुझे वहां और नहीं रुका गया और पुजारी को धन्वाद देकर चल पड़ा। थोड़ी ही देर में बारिस आगई। देर तक छिपने का कोई स्थान नहीं मिला और मैं बुरी तरह भीग गया। ११ बजे दिन को मैं लुधियाना पहुंचा यहां मुझे अपने चिर स्नेही रामसनेही जी के यहां ठहरना था। वहां जाने पर पता लगा कि वे एक सेमिनार में रांची चले गए थे पर उनके मकान मालिक श्री यश बिन्दर सिंह ने मेरी सुविधाओं का बहुत ध्यान रखा तथा मुझे लुधियाना शहर भी घूमाए। यशविन्दर सिंह कीं माताजी ने बड़ें स्नेह से खाना खिलाया।

लुधियाना से संगरूर तक जमीन ऊसर-बूसर मिली। कपास की खेती अच्छी थी झुन्ड कीं झुन्ड औरते खेतों में कपास चुन रही थीं संगरुर के किसान एग्री कल्चरल इन्स्टी टयूट में मेरा विशेष स्वागत किया गया।

२५-११-७२ आज सुबह सुबह पाताण कस्बे के मोंड पर एक हृदय विदारक दृश्य उपस्थित हो गया। दो दिन पूर्व समीप के एक सिनेमा हाल कीं कमजोर दीवाल गिर जाने से ४० आदमी दब कर मर गये थे और अनेक घायल हो गए थे। प्रत्यक्ष दर्शियों का तो कहना थाकि मरने वालों की संख्या ४० से अधिक थीं। घायलों में से एक युवक की आज

मृत्यु हो गई थी। युवकका मृत शरीर वहां पर पड़ा था और उसकी युवा पत्नी अस्तव्यस्त अवस्था में ढाढ़ें मार कर रो रही थी। पास में ही उसका ६ माह का वच्चा विलख रहा था। दर्शकों की आंखे भी नम थीं। सुवह सवेरे यह कारुणिक दृश्य देखकर मन विषाद से भर गया।

इधर सिंचाई के साधन के रूप में प्रायः रंहट दीखते थे। कुछ जगह रंहट से लग भग ढाई हार्सपावर इंजिन के वरावर पानी निकल रहा था वाल्टियां वहुत वड़ी वड़ी थी। एक विचित्रता और थी कि इनमें ऊंट जोते जाते थे जिनके आँखों पर पट्टी वधी रहती थी। लोग वताते थे कि एक वार हांक देने पर ऊंट अपने आप चलते हैं। वहां किसी के रहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हिसार के कुछ पहले ही एक वहुत वड़ा भेड़ प्रजनन केन्द्र है जो आस्ट्रेलिया के सहयोग से चलता है। हिसार पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। इस समय वारिस हो रहीं थी और अचानक ओले भी पड़ने लगे पर किसी तरह मैं अपने प्रिय जनों तक पहुंच हीं गया।

हिसार टेक्सटाइल मिल में मेरे समीप के गांव मजिराव के वहुत से युवक काम करते हैं। श्री चन्द्र देव तथा श्री राम अवध ने मेरे साथ हार्दिक सहयोग किया। यहीं मेरी मुलाकात साम्यवादी नेता श्री गुप्ता जी से हुई जो क्षेत्रीय साम्यवादी दल के मंत्री भी हैं। उनकी मजदूर वर्ग की निस्वार्थ सेवा भावना के वारे में कई जगह सुना था। उन्हे वैसा ही पाया। यहां एक और सज्जन श्री रामदेव पान्डें मिले जो वड़े ही शान्त तथा देवी भक्त थे। उन्होंने तथा उनकी धर्म पत्नी ने वड़ी श्रद्धा पूर्वक मेरा सत्कार किया।

हिसार तक आते आते मेरे पथ चेतक की दशा कुछ ढीली हो चली थी। घर से चलने के पूर्व अपने समीप के ग्राम पिन्डी के मास्टर नूरआलम ने इसका इतनी अच्छी सर्विसिंग की थी कि यह अवाध गति से चलता रहा। आज यहां के नवल कुमार नामक युवक ने फिर इसकी सेवा की और अव यह आगे वढ़ चलने के लिए विलकुल तैयार था।

## २८ बटमारी

जब दुष्ट लोग गुट बनालें तो सज्जनों को भी संगठीत हो जाना चाहिए, नहीं तो एक २ करके उन सब की बलि चढ़ जायेगी । "वर्क"

२७–११–७२ हिस्सार से कुछ मिल चलने के बाद हीं ऊंची-निची अनुपजाऊ भूमि शुरु हो गई । सारा इलाका एकदम विराना था और आस-पास बालू के ढूह थे । तीन-तीन चार-चार मिल तक कहीं गांवों के निशान नहीं थे । दूर ववूल की झाड़ियों में कहीं-कहीं ऊंट चरते दिख जाते थे, जो इस विराना वातावरण में जीवन के एक मात्र लक्षण थे ठंडी हवा चल रही थी अतः मैंने अपने नये मफलर को उस दिन पहली बार कान तथा गले में लपेट रखे थे । इसे मैंने काशमीर में बड़े शौक से खरीदा था । वातावरण की खामोशी खल रही थी । और इमानदारी की बात बताऊं, कुछ-कुछ डर भी लग रहा था । । ऐसी ही स्थिति में सड़क से कुछ दूर कम्बल से ढकी तीन मानव आकृतियां दिखी और उनके हावभाव कुछ संदिग्ध से लगे । मैं तेजी से बीहड़ को पार कर जाना चाहता था पर सामने बड़ी ऊंची चढ़ाइ थी अतः साइकिल से उतरना ही पड़ा । इतने हीं में एक आदमी मेरे करीब आगया और मुझे रुकने का संकेत किया । उसके दूसरे दो साथी भी थोड़ी ही दूर पर थे । जिस रुप में मुझसे रुकने को कहा गया तथा जिस प्रकार वे लोग मुझे देख रहे थे उससे इन लोगों की दुष्चरित्रता पर अब मुझे रंच मात्र भी संदेह नहीं रह गया । ढलान अब कुछ ही दूर आगे थी और मेरा प्रयत्न था कि जल्दी वहां पहुंच कर एक बार साईकिल पर बैठ जाऊं तो इनकी पहुंच से बाहर हो सकूंगा पर सफल नहीं हो सका । जिस व्यक्ति ने मुझे रुकने का संकेत किया था वह अब बिल्कुल मेरे पास था और इससे पहले कि हैं उससे कुछ पूछूं उसने मेरा मफलर पकड़ लिया । एक पल के लिए तो मैं एकदम किंकर्तव्य विमूढ हो गया पर दूसरे ही क्षण पता नहीं कैसे मेरी सारी ताकत मेरी बाजुओं में केन्द्रित हो गई और मैंने एक हाथ से साइकिल का हैंडिल संभालते हुए दूसरे हाथ का पूर जोर घूंसा उसके मुहपर दे मारा । वह इस अप्रत्याशित आक्रमण को झेल नहीं सका और

मेरा मफलर लिए दिए भरभरा कर गिर पड़ा। मैंने मफलर का मोह छोड़ा और भाग कर ढ़लान पर पहुंच गया। उसके दोनो साथी भी दौड़ कर समीप आ चुके थे पर तब-तक मैं साइकिल पर बैठ चुका था। मैंने बिना देखे भागना ही उचित समझा। ये दुष्ट लोग भी मानने वाले नहीं थे। उन्होंने मुझे पत्थरों तथा ढेलों से मारना शुरु कर दिया। मेरे उपर पत्थरों की बोछार हो रही थी पर भागने के सुर में मुझे होस नहीं रहा कि कितने पत्थर मुझे और कितने मेरी साइकिल को लगे। बहुत दूर जाकर मैं रुका और वहां से पीछे घूम कर देखा। वे तिनों अभी भी टिले पर खड़े मेरी ओर देखते थे। अब मैं उनकी पहुंच से एक दम बाहर था अतः अब कुछ चैन की सांस लिया तो मुझे महसूस हुआ कि मेरी गर्दन तथा घूटने पर काफीं चोट था। उस समय तो कुछ मालुम नहीं हुआ पर चलना कठिन होने लगा। मैं यही सोच रहा था कि यदि वे तीनो इकट्ठे हो गये होते तो मेरी क्या दशा होती। यह सारा कान्ड कुछ क्षणों के अन्दर ही हो गया। अब मैं उनकी पहुंच से काफी दूर था और खतरा टल चुका था पर गर्दन तथा घुटने की चोट का असर शुरु हो गया था। पैडिल चलाते कष्ट हो रहा था फिर भी मैं चलता रहा और सात मिल के बाद राजस्थान की सीमाचौकी पर ही आकर रुका। वहां मैंने अपनी आप बीती लोगों को सुनाई पर लोगों ने इसे बिलकुल ही महत्व नहीं दिया। इस समय मुझे अन्य किसी भी चीज से अधिक जरुरत सहानुभूति की थी पर वह नहीं मिला खिन्न मन से मैंने अपने झोले से नुरानी तेल की शीशी निकाली और चोट पर मालिस किया। पास की एक चाय दूकान से दूध लेकर उसमें ग्लूकोज डालकर पिया और जब कुछ शक्ति आ गई तो पुनः चल पड़ा।

राजस्थान की धरती आरम्भ हो गइ थी। मेरा मन इस धरती के ईतिहास के पन्नों में भटकने लगा। साहस तथा शौर्य की गाथाओं की याद में दर्द कहीं घुल मिल गया।

" है शतबार प्रणाम तुझे हे धरती राजस्थान की,
है प्रसिद्ध इतिहास तुम्हारे रजपूतों के आन की।
इसी भूमि में राणा सांगा औ प्रताप से वीर हुए,
हनीवाल गोरा बादल से यहां बहुत रणधीर हुए।
दान वीर भामां ने रक्षा की प्रताप के मान की ॥ है......
अमर सिंह और जै सिंह जैसे हुए अनेकों वीर यहां,
हाड़ी रानी सती पद्मनीं, नाम अमर हो गए यहां।
अकथ नीय है 'विमल, कहानी इस धरती के शान की ॥ है......

राजस्थान का प्रथम जनपद चुरु पूर्णतया अकाल ग्रस्त लगा। फसल नाम मात्र की ही थी। मीलों तक पानी का नाम निशान नहीं था कुछ किसानों से बात चीत के सिल-सिले में पता चला कि यहां बड़े-बड़े करोड़ पति लोग भी हैं। यह बात बड़ी विचित्र लगी। एक तरफ गरीबी का नंगा नाच और दूसरी तरफ करोड़पतियों की भरी हुई तिजोरियां- कहीं कोई सामंजस्य नहीं। आखिर यह असमानता कब तक दूर होगा।

## २६. मेरी शर्मनाक अवस्था

मनुष्य को उसका अपना धैर्य ही संकट मे उबार सकता है। "वशिष्ठ"

२८-११-७३ रात्रि विश्राम के पश्चात दर्द कुछ कम हो गया था। रात को नूरांगी तेल की खूब मालिश किया था। अपने साथ प्राथमिक चिकित्सा की सामग्री लेकर चलने की आवश्यकता मुझे आज ही मालुम हुई। यहां मैं मेरठ जिला के श्री रतन सिंह शर्मा के यहां ठहरा था। उनसे विदा लेकर चला तो मन बड़ा प्रसन्न था पर पैर में कुछ कष्ट था हीं पर फिर भी चलने पर कष्ट कम हीं महसून हुआ। विरला लोगों के जन्म स्थान पिलानी (जिला झुंझुनू) पहुंचते पहुंचते बारह बज गए। पिलानी मार्ग के समीप एक हाथी देख कर मैं सहम कर खड़ा हो गया था। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि यह तो मात्र प्रतिमा थी। इसे रंगनी की हस्ती के नाम से जाना

जाता है। पिलानी का विरला कालेज तथा म्यूजियम दर्शनीय हैं। म्यूजियम में आदमी के बैलगाड़ी युग से लेकर राकेट युग तककी अवस्था दिखाई गई है। संगमर्मर की नक्काशी से युक्त सरस्वती मंदिर शिवगंगा तथा पंचवटी आदि देखने में काफी समय लग गया अतः जल्दी ही आगे के लिए रवाना हो गया और इस जल्द बाजी में अपने थर्मस में पानी लेना भूल गया। चिड़ावा से करीब दस ग्यारह कि० मी० आगे जाने पर मुझे दीर्घ शंका की अनुभूति हुई। पानी तो पास में था नहीं अतः सोचा कि आगे जहां भी पानी दिखेगा निवट ही लूंगा परन्तु बहुत दूर तक पानी का अतापता नहीं मिला। इधर स्थिति धीरे धीरे असहय होने लगी। दीर्घशंका का सामाधान एक दम आवश्यक हो गया सो मैंने कर लिया पर अब पानी कहां पाऊं' एक हाथ से पायजामें की रस्सी पकड़े हुए था और आंखे दूर दूर तक पानी खोज रही थीं। आप सोच सकते हैं कि उस समय मेरी क्या दशा हो रही होगी। अपनी दशा पर शर्म भी आरही थी और अपनी बेबसी पर तरस भी क्यों कि पैदल चलने में पैरों में काफी कष्ट हो रहा था और साइकिल पर बैठे तो कैसे। सबसे ऊपर एक और कठिनाई थी कि मैं ठहरा ब्राह्मण मेरा जनेऊ कानपर लिपटा हुआ था और मैं तबतक कुछ बोल नहीं सकता था जब तक कुल्ला न कर लूं। एक मील से भी अधिक चलने पर सड़क से दूर एक झोंपड़ी दिखी। बालू में साइकिल ठेलना भी एक समस्या ही थी अतः उसे एक जगह खड़ा करके मैं झोंपड़ी के पास पहुंचा। वहां कोइ दिखाई नहीं दे रहा था। मैं कान पर जनेऊ लपेटे एक हाथ में गिलास लिए तथा दूसरे हाथसे पजामा संभाले खड़ा था। आवाज तो दे नहीं सकता था क्यों कि बोलना मना था। इतने मे झोपड़ी में से ६-७ साल की बच्ची निकली और उसने मुझे देखकर एक-दम रोना शुरु कर दिया। शायद मेरी अवस्था, वेष भूषा आदि को देखकर डर गई थी। उसका रोना सुनकर एक औरत पीछे से दौड़ी हुई आई और मुझे खा जाने वाली दृष्टि से घूरने लगी। मैंने वहां से हटना उचित

नहीं समझा क्योंकि चोर, उचक्का समझा जाने का डर था। मैंने उसे इशारे से अपनी परेशानी बताई। मेरी पोशाक तथा मेरे जनेऊ को देखकर उसने शायद कुछ समझा और फिर मुझे थोड़ा पानी दिया। मैं झोपड़ी के पीछे चला गया और उधर से निवृत्त होकर आया तो मैंने उस औरत को पूरी बात समझाया। वह किञ्चित मुस्कुराने लगी और अब उसने घूँघट कर लिया। मैंने उसे और भगवान को भी धन्यवाद दिया तथा अपना रास्ता लिया। उसके बाद मेरा थर्मस कभी खाली नहीं रहा।

इधर सड़क प्राय पतली थी और जब कोई कार या ट्रक आदि आता था तो सड़क से उतरना पड़ता था। सड़क से नीचे केवल बालू था और चक्के बालू में धंस जाते थे। ऊंट इधर का मुख्य निर्भर करने योग्य जानवर है। ऊंट से प्रायः प्रत्येक काम लिया जाता है चाहे चढ़कर चलना हो मोट खींचना हो या टायर खींचना हो हर जगह ऊंट उपस्थित रहेगा। कहीं कहीं छोटी छोटी गाड़ियों में गधे भी जोते जाते हैं।

झुँझनू में रानी सती का प्रसिद्ध मंदिर है। प्रत्येक राजस्थानी माता रानी सती के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखता है। इस मन्दिर के विभिन्न भागों को अलग अलग व्यक्तियों ने बनवाया है और अपना नाम भी खुदवाया है। रानी सती दादी की लोमहर्षक कथा भी प्रचलित है जिसे यहाँ मुद्रित करना सभव नहीं हो सका। रास्ते में जगह जगह प्याऊ मिलते रहें जिनमें अधिकांश टूटे और बेमरमत थे। कुछ की हालत ठीक थी। इन प्याउओं पर भी किस न किसी का नाम खुदा हुआ रहता है। झूँझूनू के फौजी विश्राम गृह के प्रबन्धक ने मेरा बड़ा सत्कार किया तथा रहने की व्यवस्था भी कर दी।

★★★

# ३० जैपुर तथा अजमेर में

२९--११--७२ वक्त के हाथों हजारों कारवां,
मंजिलें अपनी बदल कर रह गये।

आज प्रातः चना तो पैरों में चोट का असर थोड़ा - थोड़ा था ही पर कुछ दूर चलने पर ठीक हो जाता था। मैं जैपुर के मार्ग पर था। जमींन इधर भी अनुपजाऊ ही है। कूएं इधर बहुत गहरे हैं। मोंट खिचते हुए ऊंट को बड़ी विचीत्र आवाज में हांकते हैं प्रायः एक जैसी ही आवाज हर जगह कुछ – कुछ अजान देने जैसी आवाजें "खींची ऽ ऽ ऽ ...... हुड़ ... ... ड़ी ड़ी ............डी डी............ आदि। सुनसान वातावरण में यही आवाज गुंजती रहती है जिसे सुन कर हंसी आए बिना नहीं रह सकती। इस आवाज के द्वारा कूएं पर खड़ा व्यक्ति ऊंट के हांकने वाले व्यक्ति को संकेत करता है कि कब मोट पानी में डूब गया तथा कब पानी के ऊपर आ गया। कहीं-कही मोरों के झुन्ड के झुन्ड दिखते हैं वैसे ही जैसे अपने यहां कौवों के। मोरों के मारने पर इधर प्रतिबन्ध है।

सीकर पहुंच कर ही भोजन किया। मार्ग में नवलगढ़ पोद्दार कालेज के प्रिन्सिपल ने मेरे कार्य-क्रम की बड़ी सराहना की। इधर देहातों में साइकिलें बहुत ही कम दीखती थी -- शहरों में कुछ संख्या में दिखती थी।

३०–११–७२ गत रात टिकरा ग्राम के धर्मशाले में व्यतीत किया। यहां के श्री शिवदयाल शर्मा जी के पुत्रों ने मेरी बड़ी खातिर की। आजकल नींद कम ही आती थी पर फिर भी सुवह उत्साह में कमीं नहीं रहती थी। जैपुर यहां से अभी ७५ कि० मी० है। आज सुवह एक गूंगे दूध वाले से दूध लिया जो हर बात लिख कर ही बताता था। उसकी समझदारी तथा साहस को देखकर मन प्रसन्न हो गया। मनुष्य यदि हिम्मत से काम ले तो शारीरिक विकलांगता उसके मार्ग में बाधा नहीं बन सकती।

अभी मैं १०--११ कि० मी० चला होऊंगा कि एक लड़का अचानक मेरी साइकिल से टकरा गया। उसके पैर का अंगूठा फूट गया। और उससे रक्त बहने लगा। गलती उसकी थी पर मैं डर गया कि लोग मुझे हीं दोषी समझेंगे और अब मुसीबत खड़ीं होने में देर नहीं है। मैंने उतर कर उसके घाव को साफ कर दिया तथा उसपर डेटाल लगाकर एक पट्टी बांध दिया। अबतक दो चार आदमी इकट्ठे हो गए थे। कुछ लोगों की दृष्टियां मेरी ओर थी जिनमें झगड़े के साफ लक्षण थे पर तभी एक वुढ़िया सामने आ गई जिसने बच्चे की गलती को देखा था । उसने मुझे सहमा हुआ देखा तो मुझे लक्ष करके बोली "थारो दोस कोनी जी, छोंरे ने गलती की हैं।" मेरी तो जान में जान आ गई। लड़का भी अबतक प्रकृतिस्थ हो चुका था। मैंने बुढ़ी अम्मा को धन्यवाद दिया। और जल्दी से चल पड़ा।

जैंपुर से ३० कि० मी० पूर्व हाड़ोता ग्राम में एक विद्यालय में शिक्षकों ने लड़कों को मेरे बारे में बताया। वहां जलपान आदि कर के ही मैं आगे वढ़ सका और शाम को चार बजे जैंपुर पहूंचा। जैंपुर राज्स्थान की राजधानी है पर यहाँ पर गगन चुम्बी इमारते न बना कर यहाँ के ऐतिहासिकता की रक्षा की गई है। आमेर के किले का शीस महल दर्शनिय है। मुगल -- ए -- आजम फिल्म में इस महल को दिखाया गया है। राम बाग पैलेस पहले राज परिवार का था पर आजकल यह विदेशीयों के लिए एक अच्छे होटल का काम देता है। यहाँ मेरी मुलाकात श्री रेवती रमण शर्मा तथा मूल चन्द सेबक (सुर्य पुत्रों) से हुइ जिन्होंने मेरे साथ बड़ा सहयोग किया।

१--१२--७२ शर्मा जी तथा सेवक जी के सहयोग से आज मैं स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी तथा उच्च कोटी के लेखक श्री सुमनेश जोशी जी से मिला। जोशोजी ने अपने आर्शीवाद तथा शुभ कामनाओं से मुझे विशेष रुप से प्रोत्साहित किया। राष्ट्रिय पथ ८ से अजमेर की ओर चल रहा था। जैंपुर से अजमेर १३५ कि० मी० है। दूदू पहुंचते

पहुंचते शाम हो गई। जमीन इधर चौरस पर एकदम विरानी है। इस पर घास भी उगी हुई थी। मैं सोच रहा था कि इस प्रकार की मीलों चौरस भूमि को अछूता क्यों छोड़ा गया है ? इसका उपयोग होता तो कितना अच्छा होता ? बाद में ज्ञात हुआ कि इस जमीन का अब सर्वे चल रहा है। १५-२० दिन में ही रिपोर्ट आ जायगी। एक राजनयिक संस्थान में वहां के एक अधिकारी से मेरी बातें हो रही थी। पहले तो मेरी कोई सहायता अथवा मेरे साथ कोई सहयोग करने में बड़ी अनिच्छा प्रगट किए पर जब उन्हें मेरे स्वावलम्बी होने का विश्वास हुआ तो मुझे भोजनादि केलिए आग्रह करने लगे जिसे मैंने सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया।

आज रात ठंढी थी। घर से चलते समय मेरी श्रीमती ने सौ रुपए मेरे पाकेट मे डाल दिया था और वादा कराया था कि इसका मैं अपने लिए एक काश्मीरी दुशाला खरीदूंगा। वह मैंने खरीद लिया था। उसकी उपयोगिता आज मालुम हुई और साथ ही स्त्रियों की व्यवहारिक बुद्धि के प्रति श्रद्धा भी।

## ३१ मजदूर की करूण कहानी

२-१२-७२ गरीबों, बेबसों, के दर्द से जो बेखबर हैं,
उन्हें है आरजू मेरी गले बढ़ कर लगा लेवें।

पिछली रात एक मजेदार बात हो गई थी। मैं एक होटल नुमां दुकान में भोजन आदि के लिए कुछ सामान लेने गया और थोड़ी देर वहां बैठ गया। उसी समय वहां एक मजदूर आया और अपने खाने के लिए रोटी लिया। मैंने देखा कि उसने सबकी आंख बचाकर दो रोटी अपनी मिर्जई में छुपा लिया। मैं चुप-चाप देख रहा था और सोच रहा था कि जब पैसा देना ही है तो इस प्रकार चोरी क्यों किया ? जब वह उठने लगा तो दूकानदार से [illegible] स्वर में बोला कि आज पैसे

नही है, कल ले लेगा । दूकानदार राजी नहीं हुआ और उसके कपड़े उतरवाने लगा । इस धक्कम धुक्की में उसकी मिर्जई में छिपी रोटियां नीचे गिर गई । अब तो दूकानदार ने दो एक थप्पड़ भी लगा दिया । बेचारा मजदूर केवल रो कर रह गया । उसकी आंखों में इतनी करूणा थी कि मैं प्रभावित हुए विना नहीं रह सका । मैंने दूकानदार से पूछ कर रोटियों की कीमत दे दी । मजदूर मेरी ओर आभार पूर्ण नेत्रों से देखते हुए बाहर जा रहा था । मैं भी अपन सामान लेकर दूकान से बाहर आ गया और उसके साथ हो लिया । मैंने उससे यों ही पूछ दिया कि उसने चोरी क्यों किया तो वह फुट पढ़ा । उसने बताया कि जिस ठिकेदार के यहां वह काम करता था उसने उसे निकाल दिया है । चार दिन हो गये कहीं काम नहीं मीला हैं । पहले का बकाया पैसा भी नहीं मिला है । इस स्थिति में करता भी क्या ? "बुभुक्षितः किं न करोति पापं" । पेट की ज्वाला को तो शान्त करना ही पड़ेगा । मैंने उससे काम से अलग करने के कारण पूछा तो उसने कहा। "बाबुजी, गरीब की कोई इज्जत नहीं होती है । मैंने अपनी इज्जत चाही तो उसी का नतीजा है कि आज मुझे चोरी करनी पड़ी । सरकार सड़कों की मरम्मत करा रही है। बड़े--बड़े ठिकेदारों को ठीके मिले हुए हैं । आस पास के गरीब मजदूर इन ठीकेदारों के यहां काम करते हैं और पास ही झोपड़िया बनाकर सपरिवार रहते भी हैं । मैं भी उन्हीं बदनसीबों में हूं । ठीकेदार के मुन्शी की नजर मेरी बहु पर थी । मैंने इसकी शिकायत ठिकेदार से की तो उसने गोल मटोल शब्दों में मेरी मजदूरी बढ़ाने का आश्वासन दिया । मैं इस संकेत को समझ गया। कोई भी समझ लेगा बाबूजी, ऐसी बातें समझने में देर नहीं लगती है । मैं चुपचाप चला आया । हम लोग पत्थर तोड़ने से लेकर मिट्टी ढोने तक पता नहीं कितना काम करते हैं पर यह सब भी करना पड़ेगा, यह मुझे मंजुर नहीं था । दूसरे दिन पत्थरों की आड़ में मुंशी ने मेरी बहू का हाथ पकड़ लिया । मैं इसे सहन न कर सका और जाकर मुंशी के बच्चे को . . . . मैं उसे मारने ही वाला था,

कि बहुंत से लोग इकट्ठे हो गए और बीच बचाव कर दिए । तभी से ठीकेदार ने हम लोगो को अलग कर दिया । अब आप ही बताएं हमारा कसूर क्या है ?

आज हम आजाद हवा में सांस ले रहे हैं और प्रजातन्त्र में जी रहे हैं पर गरीब आज भी गरीब हैं और उसकी इज्जत आज भी केच्चे धागे में झूल रही है । इनका क्या होगा ?

मजदूर ने फिर कहा "बाबू जी, मैंने ठीकेदार से हिसाब मांगा तो उसने बाद में आने को कहा । आज चार दिन हो गए । आज मेरी बहू रो रही थी आप ने कभी भूखी आखों का रोना देखा है ? आप देख नहीं सकेगे बाबू जी ।"

मैंने उसे रोक दिया । मैंने पूछा कि अब क्या करोगे तो उसने कहा कि किसी और ठीकेदार के यहां काम ढूढेगा पर क्या भरोसा है, वहां भी तो यही सब कुछ होगा मैंने उससे कहा कि बहू को घर भेज दो तो उसने कहा कि हम लोगों का घर कहां हैं बाबू जी, हम लोग जहाँ काम करते हैं वहीं हमारा घर होता है । मेरे बापने मेरीं शादी करदी तो बहू की जिम्मेदारी मेरी ऊपर सौंप कर निचिन्त हो गया ।वह उदयपुर कीं ओर कहीं काम करता है । मुझे उसका पता भी मालूम नहीं है ।मैंने उसे दो रुपये दिए जिसे उसने झिझकते हुए ले लिया । उसके चेहरे पर सन्तोष था पर ऐमे कबतक निभेगा ? गरीबी कितना बड़ा अभिशाप है ?

आज दूकानदार बोल रहा था कि रात आपने एक गरीब की सहायता कर दी पर यहां तो ऐसे सैकड़ों गरीब हैं । आप कितनो की सहायता कर सकेगें । बात सच थी । मैं कुछ उत्तर नहीं दे सका ।

आगे चला तो मन पर मजदूर की करुण कहानी की छाप थी । दूदू से सांभर झील लगभग २० कि० मी० है । यहां का नमक विश्व प्रसिद्ध है । अजमेर अबनिकट ही था । प्रसिद्ध सन्त निजामुद्दीन औलिया की दरगाह यहीं है । सन्त की सिद्धि तथा खुदापरस्ती की गाथाएं बहुत सुन चुका

था। अत: सर्वप्रथम में उनको दरगाह पर ही गया और सर झुका कर प्रार्थना किया,

अजमेर वाले ख्वाजा, तुमको मेरा सलाम ।
सारे जहां में मौला, रोशन है तेरा नाम ।।
जिसने भी दुआ मांगी, तूने मुराद दी ।
मुझको भी शक्ति देना, मैं भीं तेरा गुलाम ।।
अवतक तो निभाया है आगे भी निभा देना ।
सिजदा किया करुंगा तेरा मैं सुबहो शाम ।।
कितनी मुसीवतों से मुझे तूने बचाया ।
तुझसे न कुछ छिपा है, तू है शाहे जहान ।। 'अजमेर वाले ख्वाजा ।

वहाँ के पंडा शेख साहब ने मुझे हिन्दू ब्राह्मण जान कर विशेष सुविधा दिया । वहा के मौलवी लोगों ने मेरा वड़ा स्वागत किया । शेख साहब ने कहा कि आप अपनी मनमानी मुराद मांगिये, अवश्य पाएंगे । मैंने मन ही मन सन्त से मन्नत मांगी कि मेरा मिशन निर्विघ्न पूरा हो जाय । शेख जी ने बताया कि दरगाह के ऊपर का सोने का छत्र रामपुर के राजा ने बनवाया था । दरगाह में कई मजार हैं जिसमें औरनजेब कीएक पुत्री जहान आरा का भी मजार है जिसने अपनां अन्तिम जीवन फकीरोंके साथ वड़ी सादगी से बितायां था । उसका मजार संत के पास ही हैं । थोड़ी दूर पर ढाई दिन का झोपड़ा हैं जो वास्तव में एक वहुत वड़ा मकान है जिसमें एक वहुत ही विशाल हाल है । इसमें स्थान स्थान पर हिन्दू संस्कृति की भी झलक देखने को मिलती है । कहा जाता हैं कि किसी वादशाह ने इस विशाल भवन का निर्माण केवल ढाई दिनों में कराया था अतः आज भी यह 'ढाई दिनका झोंपड़ा के नाम से विख्यात है ।

अन्नां सागर झील के किनारे एक वारादरी है जिसे मुगलों ने वनवाया था । वारादरी संगमर्मर का वनवाया हुआ एक सुन्दर महल है । यहां पर सोने की मूर्तियों वाला एक बड़ा ही खूबसूरत जैन मन्दिर है । आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण स्थल भी यहीं है ।

अजमेर से ६ मील दूर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ पुष्कर क्षेत्र है। वहां की पहाड़ियों पर ब्रह्मा मन्दिर तथा ब्रह्मा कुन्ड हैं। यहां का जल भी मैंने अपने बोतल में लिया। मैं भारत के किसी भी तीर्थ स्थल पर गया। वहां जल संग्रह किया। इस क्षेत्र में एक दर्शनीय स्थान है, तारागढ़ का किला। कहा जाता है कि पृथ्वीराज ने अपनी पुत्री के नाम पर इस किले का निर्माण कराया था। यहां मेरी मुलाकात एक बहुत उत्साही युवक श्री देवेन्द्र कुमार श्रेष्ठ से हुई जिन्होंने मेरा बड़ा सत्कार किया।

## ३२. वाणासुर का शोणितपुर

३-१२-७२ 'इतिहास की पुनरावृत्ति हुआ करती है।'

आज प्रात देवेन्द्र जी से विदा लेकर चला तो मन बहुत प्रसन्न था। उनकी श्रीमती जी ने रास्ते का भोजन भी बांध दिया था। ब्यावार तक राष्ट्रीय पथ ८ पर चलता रहा। अब मेरा लक्ष्य आबू था। अजमेर से आबू की दूरी ४०१ कि० मी० है। आबू पहुंच जाने पर मेरी इस यात्रा के ३५०० कि० मी० पूरे होने को थे। इधर का इलाका कुछ पहाड़ी था और १५ कि० मी० तक चढ़ाई उतराई मिली। मार्ग में स्थान स्थान पर पूरी तरह लकड़ी के बने रेस्टोरेंट मिले एक दम देशी रेस्टोरेंट। बाल्टियों के स्थान पर मिट्टी के पात्र लगे हुए थे। पानी खूब आता था। इधर रेस्टोरेंट में बैंच तथा ऊंट तो होते ही जाते जाते हैं। कुछ और आगे आने पर एक सूखी नदी मिली, एक नदी पर सूखी हुई। इसमें पीच रोड बनी हुई है। अरावली की एक विचित्र नदी जो नदी होकर भी जल रहित है, बरसात का पानी भी मुश्किल से ठहरता है। नाम है लूनी नदी। इसके बाद आया सोजत सिटी। इसे सोजतपुर के नाम से भी जाना जाता है। यहीं पर किसी युग में महाप्रतापी वाणासुर रहा करता था। उस समय इसका नाम शोणितपुर था जो आज अपभ्रंश होकर सोजतपुर या सुजत पुर हो गया है। इसी नगर में कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का ब्याह वाणासुर की पुत्री के साथ हुआ था। कई पौरणिक भग्नावशेष आज भी यहां विदयमान हैं

जो इस नगर की प्रचीन गरिमा की कथा कह रहें हैं।
यहाँ की मेंहदी बड़ी प्रसिद्ध है। इस इलाके में 'वावरी' जति के आदिवासी रहते हैं। इनका निवास स्थान यहां कीं पहाड़ियां तथा जंगल है और मुख्य पेशा चोरी है। चोरी भी विशेष कर जानवरों की। लगता है वाणासुर के रक्त का प्रभाव आज भी इस क्षेत्र में विद्यमान है। वैसे सरकार का ध्यान इनकी ओर विशेष रूप से गया है और इनके कल्याण से सम्बन्धित कई योजन एं चल रही है जिनसे इनके जीवन का सुधार हो रहा है।

## ३३ महंथ मंत्रीपुत्र बनाम फिल्म ऐक्टर

४-१२-७२ इच्छाओं के सामने आते ही सभी प्रतिज्ञायें ताक पर धरीं रह जाती है। "अज्ञांत"

आज प्रात मैंने एक दूकान से दूध लिया और पैसा देने लगा तो दूकानदार ने सधन्यवाद वापस कर दिया। इस छोटे से सदव्यवहार ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैं आज भी उस दूकानदार को भूल नहीं पाता हूं। आगे एक नहर मिली जो उदयपुर से आती है और सिर्फ जोधपुर वालों के उपयोग के लिए है। इस इलाके के लोग इस नहर को बड़ी हसरत भरी निगाहों से देखते हैं। उनके क्षेत्र से होकर जाने वाला जल उनके उपयोग में नहीं आ पाता है। यहां से कुछ आगे जाने पर संड़राव के मोड़ पर एक बड़े ही सजीले युवक दिखा जो आधुनिक बल्कि अत्याधुनिक वेशभूषा में सूसज्जित थे और मोटर साइकिल पर थे। इनका व्यक्तित्व किसी को भी प्रभावित कर सकता था। उन्हें देखकर आसपास के लोग बहुत झुक—झुक कर प्रणाम कर रहे थे और वे भी अपना हाथ हिलाकर अपना मौन अभिवादन देते जा रहे थे। उनके वारे में जानने के लिए स्वभावत जिज्ञासा उठी पर पूछूं किससे? सभी लोग तो बा अदब खड़े थे, एकदम मौन। इसी बीच महाशय ने साइकिल स्टार्ट कि और किंचित मुस्करा कर हमकीं ओर

देखकर चल दिए। अब मैंने एक आदमी से पूछ ही लिया। उसने बताया कि ये सबीर को ही एक मठिया के महन्थ के होने वाले युवराज महन्थ हैं. वर्तमान महन्थ जी के बाद गद्दी इन्हीं को मिलेगी। वाह, महन्थ के ये ठाट ? मुझे एक घटना याद आ गई। कुछ दिन पूर्व एक ऐसे ही और युवक के दर्शन का सौभाग्य मिला था। एक महल नुमा मकान में एक राजकुमार निकले और बाहर खड़े कई खद्दर धारी नेता टाइप लोगों के हाथ जुड़ गए। गांधी टोपियाँ झुक रही थीं। मुस्कराहटों में स्पर्धा लग रही थी। राजकुमार के कपड़ों पर आखें नहीं ठहर रही थी। गहरे रंग की कमीज, चुभते हुए रंग की पैंट और चमचमाते हुए जूते, सब मिलाकर एक प्रभावशाली व्यक्तित्व। मैंने जोर लगाकर सोचा पर मुझे एक दम याद नही आया कि यह कौन सा ऐक्टर हो सकता है। इसका चित्र तो कभी किसी पोस्टर में देखने को नहीं मिला। राजकुमार बड़ी शालिनता से चलकर एक लम्बी कार में बैठा और हवा हो गया। अभिवादन कर्ताओं के चेहरों पर अभी भी मुस्कुराहटें खिचीं हुई थी। वहाँ भी मैंने एक सज्जन से पूछा था, " ये कौन एक्टर हैं। " उन्होंने मेरी ओर घूर कर देखा, फिर मेरी पोशाक पर रहम करते हुए बोले, " आप को मालूम नहीं, ये अमुक मंत्री जी के सुपुत्र हैं। "

मेरा मन विषाद से भर गया था, क्या अब ऐसे हीं महंथ और मंत्री पुत्र हुआ करेंगे ? इन्ही के हाथों धर्म और समाज की रक्षा होगी ? यही सब सोचते—सोचते सुमेर पुर पहुंच गया। वहाँ सर्व प्रथम मैं एक शिक्षा संस्थान में गया पर उन लोगों ने इतनी अरुचि दिखाई कि मेरा मन और भी खिन्न हो गया। रात को ही आगे बढ़ गया और शिवगढ़ की एक धर्मशाला में शरण लिया।

*--*---*---*--*

# ३४ आबू

**पुर्ण सत्य की प्राप्ति के लिए तुम्हें सांसारिक इच्छाओं से छुटकारा पाना होगा। " रामतीर्थ "**

५--१२--७२ शिवगढ़ से भगवान शिव को नमन कर चला तो दृश्य वड़ा सुहावना था। । सैकड़ों की संख्या में ऊंट पहाड़ीं जंगलों से निकल रहे थे। ऊंट ही इधर के लोगों की समपत्ती है। जिसके पास जितने अधिक ऊंट होते हैं वह ऊतना ही धनवान समझा जाता है। इन ऊंटों के मालिक खारी जाति के आदिबासी होते हैं। ऊंट पालन ही इनका पेशा है एक--एक ऊंट की कीमत हजार -- हजार रुपए तक होती है। इन मालिकों के आदमी ऊंटों को जंगलों में चराया करते हैं और उनकी रखवाली करते हैं। शादी व्याह की इनकी वड़ी विचित्र रीति है। ३--४ माह की उम्र में भी वच्चों की शादियां हो जाती हैं।

ग्यारह वजते--वजते सिरोही पहुंच गया। सर्व प्रथम मैंने वहा के गवर्नमेन्ट कालेज के प्राचार्य से सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने मेरी यात्रा में वड़ी रुचि ली। वड़े स्वतंत्र विचार के व्यक्ति लगे। समाज की प्रगती की चर्चा चली तो उन्होंने कहा कि हम वेकार प्रगति कि वातें करतें हैं। प्रगति के साथ--साथ आदमीं स्वार्थी और हिंसक होता जाता हैं। आदमी जितना ही समपन्न होता जाएगा, उसके अंदर कुवृत्तियां विकसित होती जाएगी। इस लिए उनके अनुसार हम जैसे हैं, अर्थात हम गरीव और अज्ञान ही ठीक हैं। यह कोई विचार हुआ ?

आबू अभी बीस की० मी० था। सामने दो. पहाड़ों के वीच से निकली वनास नदी का दृश्य वड़ा लुभावना लग रहा था। आबू पहुंचते पहुंचते रात हो गई। यहां मुझे अपने गांव के समीप के ही एक गांव खरदहां के श्री सर्वजीत पाण्डे आबू के राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में हवलदार हैं। श्री पान्डे ने मेरा वड़ा हर्षपूर्ण स्वागत किया।

इन्हें अकादमी से कई पारितोषिक प्राप्त हुआ है ।

६--१२--७२ आज ९ बजे दिन में एक होनहार युवक श्री प्रभाकर राय के साथ, जो राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के इन्सपेक्टर श्री कैलाश राय के कनिष्ट भ्राता तथा श्री सर्वजीत पान्डे के शुभ चिन्तकों में से हैं, आबू के दर्शनीय स्थानों को देखने निकला । नकी झील की आभा देखकर मन प्रफुल्लित हो गया । यह झील आबू के बीच में स्थित है । ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय को देखने की बड़ी लालसा थी अतः सर्व प्रथम हम वहीं गए । ब्रह्माकुमारी आश्रम की संस्थाएं देश के कोने--कोने में हैं । आबू क्षेत्र के निवासियों में इस संस्था के प्रति श्रद्धा है । इन विद्यालय के उद्देश्य बड़े उत्तम हैं । इनकी प्रदर्शनियां आदमी के हृदय को छू लेती हैं । इसके बाद हम लोग विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिर दिलवाड़ा देखने गये । इन मंदिर में संगमर्मर पर की गई नक्काशी इनके निर्माण कर्ता के प्रति आदर श्रद्धा का उद्रेक करती है । इस मंदिर में इस पर लगी लागत अंकित है । लोग कहते हैं कि यह ताज महल की लागत से डेढ़ गुना अधिक है । थोड़ा ही दूर पर एक पहाड़ पर राणाप्रताप की गुफा है । जन श्रुति है कि अपने अज्ञात वास के दिनों में राणाप्रताप इन गुफा में रहते थे । समीप ही अधर देवी का मंदिर है । दक्ष प्रजापति के यज्ञ में सती ने जब शंकर का अपमान देखा तो जल मरी । उनके जले शरीर को लेकर शंकर पगलों की तरह दौड़ने लगे । जब विष्णु ने शंकर की इस दशा को देखा तो उनके पीछे अपना चक्र लगा दिया । यह चक्र सती के शरीर के टुकड़े--टुकड़े करता जाता था । सती के शरीर के टुकड़े जहां जहां भी गिरे वहां मन्दिर स्थापित हो गये । इस स्थान पर भी एक टुकड़ा गिरा था । यहां आज अधर देवी का मंदिर खड़ा है । नकी झील के उपर एक पहाड़ी का कुछ भाग इस प्रकार आगे निकला हुआ है कि लगता है कि एक विशाल मेंढ़क बैठा हुआ है ।

आबू युगों से तपोभूमि रहा है कहा जाता है कि यहाँ की गुफाओं में आज भी बहुत से साधु ( कुछ असाधु भी ) निवास करते हैं ।

आबू में मेरी भेंट राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के वरिष्ठ हिन्दी-अन्वेषक श्री आद्यानाथ पान्डे से हुई । इनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ । इनके विचारों में राष्ट्रप्रेम कूटकूट कर भरा था ।

७-१२-७२ आज आबू से प्रस्थान करना था । अपने प्रियजनों से विदा लेकर चला तो सुबह की हल्की रोशनी में आबू बड़ा भला लग रहा था । इस समय मैं काफी ऊंचाई पर था । सामने लम्बी ढलान थी । जब मैं रथ चेतक पर सवार हुआ तो मुझे बिलकुल स्कूटर का आनन्द मिला । एक खतरा अवश्य था । ब्रेक की जरा सी भी असावधानी से हड्डी पसली एक होने की सम्भावना थी इस आनन्द और जोखिम से भरे ढलान के बाद ही सोराष्ट्र (गुजरात) की सीमा मिली । अम्बाजी का प्रसिद्ध मन्दिर सामने झिलमिला रहा था । इसके बाद खेढ़ ब्रह्मा तक लग भग ५० मील तक इतना उतार चढ़ाव आया कि मेरा दम फूल गया । अब तक की यात्रा में इतना श्रम मुझे शायद ही कभी करना पड़ा था । सुनसान वीरान घाटी और कठिन चढ़ाइया इसी बीच जब साइकिल का एक चक्का पंक्चर हो गया तो मैं एक दम हतोत्साहित हो गया । सुलेशन भी एक दम सूख गया था । किसी प्रकार काम चलाया पर फिर भी लगभग १० मील तक साइकिल ठेलकर चलना पड़ा । जब अम्बा जी के गुजराती विद्यालय में पहुंचा तब जाकर जान में जान आई । वहां के विद्यार्थियों ने मेरे स्वागत में एक सभा आयोजित की जिसमें मेरे कार्य क्रमों की सराहना की गई ।

—:०:—

## ३५. कोल भीलों तथा अन्य वन्य जातियों में

**जाने किस वक्त शाम हो जाये, ये कहानी तमाम होजाये । 'राही'**

पहाड़ियों में कहीं कहीं गेहूं के खेत लहलहा रहे थे । इनकी सिचाई इधर रहट द्वारा होती है जिसे एक आदमी स्वयं बैठ कर चला लेता है। इसके वाद अहमदावाद तक कपास की खेतीं दिखीं। इन पहाड़ियों में रहने वाले हर व्यक्ति के हाथ में शस्त्र रहता है । शस्त्रों में लम्वे लम्वे तलवार तथा तीर धनुष मुख्य होते हैं जंगली जानवरों का खतरा वना रहता है अतः अपने वचाव के लिए पास में कुछ अस्त्र-शस्त्र रहना आवश्यक हो जाता है।

मैं चढ़ाई पर था । एकाएक एक युवक हाथ में तीर कमान लेकर पता नहीं कहां से प्रगट हो गया और उसने मुझे रुकने का संकेत किया। इलाका सुनसान था और कुछ ही दिन पूर्व मफलर छीने जाने की घटना अभी एक दम ताजी थी अतः मैं डर गया। हालां कि उसके रोकने के संकेत में मुझे एक ऐसा आग्रह दीखा जिसमें किसी खतरे की गुँजाइश नहीं हो सकती थी पर फिर भी डर साथ नहीं छोडा और मैं धीरे धीरे वढ़ता ही गया ताकि उसकी पहुच से वाहर रहूं। वैसे उसके तीरों की पहुंच से तो मैं विलकुल हीं वाहर नहीं था। वह भी धीरे धीरे पैर साध कर आगे वढ़ रहा था और लगातार मुझे रुक जाने का संकेत करता जा रहा था । मेरे नहीं रुकने पर उसे कुछ गुस्सा भी आरहा था क्यों कि उसकी मुखाकृति पर कुछ वैसा ही छाप आती जा रही थी जैसा किसी मछली मारने वाले के मुंह पर होती है जिसकी वंसी में मछली फंसने ही वाली हो तवतक कोई लड़का पास में आकर हल्ला करने लगे । मैं उसके संकेतों की परवाह किए विना धीरे धीरे आगे सरकता जा रहा था कि अचानक एक लकड़वग्घा वड़ी हीं द्रुत गति से एक खोह से निकला और प्रायः मेरी सायकिल के चक्के को छूता हुआ निकल गया । दूसरे ही क्षण प्रायः मेरी आखों से सटे मुश्किल से ५-६ इंच की दूरी से एक तीर सनसनाता हुआ उसी दिशा में गया और पलक झपते ही देखा कि लकड़वग्घा जमीन पर लोट रहा था।

अब सारी स्थिति मेरी समझ में आ चुकी थी। देखने ही देखते एक भयंकर भील आकृति खोह में से निकली। हाथों में कमान, कमर में एक विशेष प्रकार की वांड़ों से भरी पेटी और आँखों में सन्तोष की झलक, क्यों कि तीर निशाने पर लग चुका था और शिकार सामने छटपटा रहा था। उनके पीछे कुछ और भील आ जुटे जो लकड़बग्घे की दर्दनाक चीत्कार सुनकर तथा उसकी मर्मान्तक पीड़ा से प्रसन्न हो रहे थे। बड़ी भयप्रद स्थिति थी। मैं लगभग २०–२२ भीलों के बीच घिरा हुआ था। सभी शस्त्र धारी थे। इनमें दो युवतियां भी थीं जिन्होंने घांघरा तथा आधे बांह की कुर्ती पहन रखी थी। वे आपस में बातें कर रहे थे और बीच बीच में मेरी ओर भी देख लेते थे। पहले तो मैं बुरी तरह डर गया पर उनके हावभावों से पता चला कि वे इस बात पर सन्तुष्ट थे कि मैं उनके तीरों से बाल बाल बच गया पहले भील ने इसी लिए मुझे रुक जाने का संकेत किया था और सचमुच यह मेरा सौभाग्य ही था कि मैं बच गया अन्यथा यदि एक कदम भी आगे चला होता तो शिकारी के तीर ने अवश्य ही मेरे माथे में एक खिड़की खोल दी होती। अब मुझे साहस मिला और मैंने मुस्कुराते हुए नमस्कार की मुद्रा में हाथ उठाया। भीलों ने इसका जवाब हाथ उठाकर दिया और वे भी मुस्कुराने लगे। इसी बीच एक युवती चहकती हुई आगे आई और लकड़बग्घे को, जो दम तोड़ चुका था, घसीटते हुए पहाड़ियो की ओर चल दी धीरे धीरे और भील भी पहाड़ियों में गुम हो गए। मैंने भी भगवान को याद किया और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गया। खेड़ ब्रह्मा पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई। अम्बा जी के मन्दिर के धर्मशाले में शरण मिल गई। ६० पैसे देने पर रहने की जगह के अतिरिक्त एक मोमबत्ती भी मिली जिसकी मद्धिम रोशनी में मैंने अपनी डायरी लिखा।

८–१२–७२ चिड़ियों की चह चहाहट से आंख खुली तो देखा कि सात बज गए थे। जल्दी जल्दी तैयार होकर बिस्तर बांधा और अम्बाजी को प्रमाण कर चल दिया। यहां से द्वारका जाने का विचार था पर दूध तथा अन्य वस्तुएं इधर इतनी महंगी थी कि अपने पाकेट को देखते हुए

उधर बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। चूंकि मैं स्वरगम् सेवी हूं अतः अपने वजट को बरावर ध्यान में रखना पड़ता है।

"बनाना चाहता हूं स्वर्ग तक सोपान सपनों का।
मगर चादर से ज्यादा पांव फैलाये नहीं जाते।"

द्वारका धीश को मन ही मन प्रणाम करके ईडर नामक स्थान से मैंने अपनी साइकिल को मोड़ दिया। यहाँ से अहमदाबाद की दूरी १५ मील होती है। एक गुजराती स्कूल मे मेरा बड़ा सत्कार किया गया। जब मैं वहां पहुंचा तब प्रार्थना हो रही थी बच्चे बैठकर ही प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना य ब्रह्मा वरुणोन्द्ररुद्रमरुतः आदि से आरम्भ हुई उसके बाद 'वन्दे मातरम्' गाया गया। इसके पश्चात एक लड़का खड़ा हुआ और उसने 'सुविचार' पढ़ा। सुविचार अर्थात् महापुरुषों के विचार। इसके बाद दूसरा लड़का खड़ा हुआ और उसने समाचार पढ़ा। अन्त में मेरे मिशन के बारे में लड़कों को बताया गया और मुझसे आग्रह किया गया कि मैं भी कुछ कहूं मैंने अपनी यात्रा तथा इसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में हिंदी में कहना आरम्भ किया तो एक अध्यापक ने उसका गुजराती अनुवाद करके लड़कों को सुनाना चाहा। इस पर सभी लड़के चिल्लाने लगे, 'हम हिन्दी समझते हैं।- हम हिन्दी समझते हैं।" सच कहता हूं उस समय मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि उसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता। काश, निहित स्वार्थों से प्रेरित हिन्दी विरोधी इन बच्चों की बातें सुन पाते, इनकी भावनाओं को समझ पाते। मैंने बच्चों को बधाई दिया। अध्यापक फिर बीच में बोलने की कोशिस नहीं किए। यहां से मैं बहुत उत्साहीत हो कर आगे बढ़ा। खजूरी घाटी की पांच मील लम्बी चढ़ाई पर चढ़ने के बाद बड़ी थकान महसूस हुई। उस दिन बीछी वाड़ा में ही रुक गया।

९-१२-७२ बीछी बाड़ा के बाद स्थान-स्थान पर बन्य जातियों से भेट होती थी। इनके पास लम्बे लम्बे भाले तथा तलवार के साथ साथ बन्दूके भी थी। इधर मीड़ा जाति के लोग बसते हैं। ये लोग बड़े खूंखार होते हैं। पहाड़ों में किसी को लूट लेना, खून कर देना इनके लिए

बड़ी साधारण बात है। देखने में भी ये लोग बड़े खूखार लग रहे थे। इनकी बड़ीं बड़ी आंखों में काजल तथा बड़ी वड़ी घनी मूझे किसी को भी डरा सकती थी। औरतें घांघरा पहनती हैं और पूरी बांह में विचित्र किस्म के आभूषण। आज मार्ग में ऐसे ही लोगों का पूरा कारवां मिल गया। सभी लोग वन्दूकों तथा अन्यान्य अस्त्र शस्त्रों से सुजज्जित थे और पूरी सड़क पर फैलकर चल रहे थे। अब इन्हें कौन हटाए ? वीरान पहाड़ियों के बीच ये लोग मुझसे किस ढंग से पेश आएंगे कौन जानता है। घंटी वजाने की हिम्मत नहीं हुई। मैं चुप चाप कुछ दूरी वना कर इनके पीछे पीछे चल रहा था और वे लोग भी अपने में मस्तचले जा रहे थे। थोड़ी दूर चलने के बाद एक युवक ने पीछे घूम कर देखा और मुझें अपने पीछे आता देखकर गिरोह के सभी लोगों का ध्यान मेरी ओर आकृष्ट किया उसने उनलोगों से रास्ता छोड़देने का संकेत किया। उसके चेहरे की सरलता तथा प्रसन्नता देखकर मुझे वड़ा साहस हुआ। देखते ही देखते मेरे लिए रास्ता साफ कर दिया गया। मैंने उन्हें नमस्कार किया और आगे बढ़गया। बड़ी राहत महसूस हुई।

—:०:—

## ३६. वीर भूमि चित्तौड़

संसार इस बात की चिंता नहीं करता कि हमने यहां रह कर क्या किया पर वीरों ने जो कार्य किये हैं उसे वह कभी नहीं भूलता।" 'लिंकन,

प्रायः कई हफ्ते से बड़ी वड़ी चढ़ाइयों को पार करना पड़ रहा था अतः बड़ी थकान महसूस हो रही थी। चारों ओर जंगल और पहाड़ियों तथा बीच में सूनी सड़क कहीं कहीं बीच बीच में खेत भी दिख जाते थे। सिचाई इधर रंहट से होती थी। किसी किसी रंहट में चार चार भैंसे जुते हुए थे और वाल्टियों की जगह मिट्टी के बड़े बड़े घड़े जैसे बर्तन लगे हुए थे जिनसे ३-४ हार्सपावर के पम्प के बराबर पानी आ रहा था। छोटे छोटे खेतों में अच्छी फसल लगी हुई थी। शाम को पांच बजे उदय पुर पहुंचा।

नवजीवन पत्र के आफिस मे श्री मधुकर राजस्थानी से भेट हुई । प्रेस में मधुकर जी तथा उनके सुपुत्र श्री जगदीश जी ने मेरा भावपूर्ण स्वागत किया वहीं पर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी तथा हिन्दुस्तान टाइम्स के संपादक श्री शोभालाल गुप्त से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मधुकर जी तथा शोभालाल जी दोनों ही आज़ादी की लड़ाई के युग से ही मित्र हैं। इन दोनों ही सेनानियों को सरकार ने पुरस्कृत किया है । दोनो हों साहित्य कारों ने मेरे साथ ऐसा स्नेह पूर्ण व्यवहार किया कि मैं अभिभूत हो गया चलते समय इन दोनो महापुरुषों ने तथा मधुकर जी के परिवार वालों ने जो प्यार और आशीर्वाद दिया उसे भुलाया नहीं जा सकता ।

उदयपुर को झीलों का नगर कहा जा सकता है । फतह सागर झील की शोभा वड़ी मोहक थी । इसी झील के किनारे पहाड़ो पर वना हैं राणा का महल चेतक स्मारक और आगे सहेलियों की वाड़ी । सहेलियों की वाड़ी में इस समय किसी फिल्म की शूटिंग चल रही थी। उदय पुर के इस ऐतिहासिक नगर में आकर कोई भी अपने देश के स्वतंत्रता प्रेमी सपूतों को याद किए विना नहीं रह सकता ।

तुम्हें है वन्दगी शतशः अमर राष्ट्रीय सेनानी,
मिला भारत के जनगण का तुम्हे है प्यार सेनानी ।
अजव था वह समय जव कोई वन्दे मातरम कहता,
वो वन जाता था मेहमा जेल का, रक्षित नहीं रहता ।
किए दुश्मन से डटकर सामना हर वार सेनानी,
तुम्हारे खून से सींची गई भारत की आजादी ।
तुम्ही ने काटकर जंजीर दी हम सवको आजादी ।।
पहन ली देशहित काटो के चुभते हार सेनानी ।।
सुना सकता नही कोई तेरे वलिदान की गाथा,
तुम्हारे आन की, अभिमान की, और शान की गाथा ।
विमल चरणों का रज पाता रहूं हर वार सेनानी,
तुम्हे है वन्दगी शतशः अमर राष्ट्रीय सेनानी ।।

उदयपुर से ३० कि० मी० आगे जाने पर मैं रात्रि के साए में घिर गया। दुवोक नामकस्थान में वी० एड० कालेज के उत्साही युवक श्री कैलाश पुरोहित ने आश्रय दिया।

११-१२-७२ आगे चित्तौड़ तक विशेष चढ़ाई नही मिली पर हवा उल्टी वह रही थी अतः आगे वढ़ने में काफी कष्ट हो रहे थे। चित्तौड़ गढ़ का नाम स्मरण होते ही रक्त में वीर रस का संचार हो जाता है। यही वह वीरभूमि है जिसकी रक्षा के लिए बाप्पा रावल, राणा कुम्भा, महावीर साँगा, वाल वीर जयमल, फतह सिंह, प्रणवीर प्रताप, गोरा, तथा वादल आदि वीरों ने अपने आप को वलिदान कर दिया। इस वीर भूमि में पहुंचा तो रानी कर्मवती की वीरता पद्मिनी के जोहर व्रत के दृश्य मनश्चक्षुओं के सामने घूम गए। उदयपुर से चित्तौड़ १२५ की० मी० है पर इतनी दूरी तै करने के वाद भी कुछ श्रम महसूस नहीं हुआ यह चित्तौड़ की वीर-भूमि का प्रभाव ही तो था। शाम का धुँधलका फैल रहा था। राणा का विजय स्तम्भ आकाश की ऊंचाइयों तक शीस उठाए राणा के शौर्य की गाथा सुना रहा था। स्तम्भ के शीर्ष पर लिखा था, "ॐ नमः शिवाय" और पास ही स्वामीदयानन्द के रचे कुछ श्लोक भी आतताई अलाउद्दीन के अत्याचार की याद दिला रहे हैं। जल में वना पद्मिनी का महल जिसमें आदमकद शीशे लगे हुए थे, विशेष शोभायमान लग रहा था। चित्तौड़ गढ़ चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। लगता है प्रकृति ने इसकी रक्षा के लिए चारों ओर एक परकोटा वना दिया है।

रात्रि में चित्तौड़ के श्रेष्ट आर्य विद्यापीठ गुरु कुल के उपाचार्य श्री भीमसेन जी का मेहमान रहा। इस गुरुकुल तथा यहां के ब्रह्मचारियों को देख कर प्राचीन समय के गुरुकुलों की याद आ जाती है। श्री भीमसेन जी विद्वान तथा योग्य आचार्य हैं। इनके व्यवहार से मैं वहुत प्रभावित हुआ।

आचार्य जी ने मेरे उद्देश्यों की बड़ी सराहना की तथा ब्रह्मचारियों से मेरा परिचय कराया ।

१२—१२ —७२ सवेरे जब चलने लगा तो आचार्य जी ने दूध पीने को दिया । मैं मना करने वाला था पर तुरन्त उन्होंने कहा कि, " पान्डे जीं, मैंने यहां नेहरु जी तथा राजेन्द्र बाबू आदि को भी दूध पिलाया है । आप को बिना दूध पिलाए नहीं जाने दूंगा । " अब भला मैं कैसे मना कर सकता था । उनका आशिबाद लेकर ही आगे बढ़ सका वीरों के गढ़ चित्तौड़ में मैंने काफी साहस और शक्ति का संचय कर चुका था। अतः बड़े उत्साह के साथ आगे बढ़ा ।

## ३७ घूंघट का अभिशाप

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं है ,
परिस्थितियां मनुष्य की दास है । 'डिजरैली'

राजस्थान की सींमा समाप्त होने वाली थी और मध्य प्रदेश आरम्भ होने को था । इस समय मैं सीमावर्ती गाँव सिंगोली के निकट से गुजर रहा था। मेरे थर्मस का पानी समाप्त हो चुका था । खाली थर्मस के साथ आगे बढ़ने का खतरा लेना ठीक नही था क्यों कि इसके चलते एक बार बुरी तरह फंस चुका था पास में एक कूंआ था जहां बहुत सी औरतें पानी भर रहीं थीं । मैंने सोचा यही से पानी ले लूं पर सभी औरतों ने बड़ा लम्बा-लम्बा घूंघट खींच रखा था। और आस-पास कोई पुरुष नहीं दिखाई दे रहा था । मैं इसी आशा में खड़ा था, कि कोई पुरुष दिख जाय तो पानी मागूं तबतक एक घटना घट गई । कूंआ गहरा था और पानी खीचने के लिए चर्खी लगी हुई थी । एक घूंघट वाली का पैर ठीक स्थान

पर नहीं पड़ सका और इससे पहले कि वह चर्खी पर रस्सी ठीक करे फिसल कर कुएं में गिर पड़ी । अब तो औरतों में कुहराम मच गया। उन्होंने चिल्लाना शूरु किया तो दो तीन पुरुष भी आ गए। सभी लोग कूँए में झाँक कर देख रहे थे और समवेत स्वर से चिल्ला रहे थे , "रघू ने वू गीरगी रघू ने वू गिरगी" अर्थात, रघू सिंह की बहू गिर गई। दूर खड़ा तामाशा देख रहा था पर अधिक देर तक नहीं देख सका सभी लोग चिल्ला ही रहे थे पर कूँए में उतरने का साहस किसी को नहीं हो रहा था । जो दो तीन पुरुष खड़े थे वे भी केवल आईडिया ही दे रहे थे । ऐसी स्थिति में मैं कबतक खड़ा रहता । मैं तुरन्त कूँए पर पहुंच गया। झाँक कर देखा कूँआ काफी गहरा था और युवती शायद सदमें से सज्ञा हीन हो चुकी थी । उसका शरीर पानी में डूबता उतराता दिखाई दे रहा था । कुछ देर तक मैं सोच नहीं सका कि क्या किया जाय पर कुछ कर गुजरने की इच्छा हो आयी। चित्तौड़ के वीरों की याद अभी ताजी जो थी । मैंने उनका ध्यान किया और कूएं में डोरी लटका कर युवती से पकड़वाना चाहा पर वह होस में हो तब तो पकड़े । मैंने रस्सी को लकड़ी में कस कर बांध दिया और शिघ्रता पूर्वक कूएं में उतर गया। युवती को अंतिम बार डुबने के पहले ही पकड़ लिया वह विलकुल वेहोस थी और यदि थोड़ीदेर और हुई होती तो वह अवश्य चल बसती मैंने उसको सभांल लिया और ऊपर वालों को और मजबूत रस्सी बाधने को कहा। कुछ देर वाद ऊपर वालों ने हम दोनो को ऊपर खींच लिया। वहुत ऊपक्रम करने के वाद युवती को होश आया। मैंने अपना झोला मगाया और उसमें से प्राथमिक चिकित्सा का डब्बा निकाल कर युवती के चोटों पर दवा लगा दिया । देखते ही देखते मैं वहाँ का 'हीरो, वन गया। सभी की निगाहें मेरी ओर लगी हुई थी और मेरे साहस की सराहना हो रही थी। उसके घर वाले भी अवतक आ चुके थे । उनके लिए तो मैं एक दम देवता था । जब युवताप्रकृतिस्थ हो गई तो

उसने वताया कि घूंघट के कारण वह ठीक से देख नहीं सकी और फिसल गई। कोई उससे पूछे कि जव वहां केवल औरतें ही थीं तव उनके सामने भी घूंघट खींचने की क्या आवश्यकता थी। पता नहीं किसने इस प्रथा को चलाया था और इसके पिछे क्या रहस्य है। लगभग दो घंटे के वाद ही मैं वहाँ से चल सका।

१३--१२--७२ पिछली रात एक चाय की दूकात में बितानी पड़ी थी। आज सवेरे भैंसरोड नामक खंडहरों वाले नगर में पहुंचा। यह नगर चम्वल नदी के किनारे स्थित है और यहा पुराने किले के खड्डहर हैं। यहां से चम्वल को नाव से पार करना था। नाव लगी हुई थी और मेरे अलावे चार आदमी बैठे थे। जव वड़ी देर तक नाव नहीं चली तो मैंने पूछा कि आखिर वातें क्या है? मल्लाह ने एक वृद्ध की ओर इशारा करके कहा आधा घंटा हो गया न तो उतरता है और न दस पैसे निकालता है। सिर्फ दस पैसे के लिए इतती देर से नाव रुकी थी। मैंने उसे दस पैसे दे दिया और नाव चल पडी। मैं सोच रहा था कि इस नाव पर और आदमी बैठे हुए थे पर कोई कुछ बोल नहीं रहा है। क्या इन लोगों का समय दस पैसे से भी सस्ता है? फिर सोचा कि इस देश में इतनी गरीवी है कि दस पैसे की कीमत भी कम नहीं है। भैंसरोड के समीप ही राणाप्रताप सागर नामक वांध है इस वांध से १५ कि० मीं० दूर इसी चम्वल पर एक और वांध है। जिसे जवाहर वांध के नाम से जाना जाता है। इन्हीं दोनों वांधों के द्वारा इस क्षेत्र कि सिचाई की समस्या हल होती है। कोटा के पहले ६ मील की एक दुरुह चढ़ाई पड़ी। सोचा था कि आगे कुछ ढ़लान आएगा तो कुछ कम श्रम पड़ेगा पर उसके वाद समतल भूमि आ गई। इधर आदि वासियों की वस्ती थी। पहाड़ियों में रहने वाले इन आदि वासियों की दशा वड़ी दयनीय थी। कोटा में वड़ी देर के वाद मुझे ९ वजे गवर्नमेंन्ट कालेज के प्राचार्य श्री वनर्जी के सहयोग से रघुनाथ हास्टल में ठहरने की सुविधा मिल सकी।

# ३८. चंबल का बीहड़

समस्त भय और चिंता इच्छाओं का परिणाम है। 'रामतीर्थ'

१४-१२-७२ कोटा नगर में प्राचीन काल में हाड़ा राजाओ की राजधानी थी। किलों के भग्नावशेष आज भी है। यहां के वर्तमान महाराजा श्री भीमसेन हाड़ा हैं। राजस्थान से ही मार्ग में स्थान-स्थान पर खाना वदोशों के कारवां मिलते थे। इनमें गड़िया, लोहार तथा सेहरी जातियों के लोग हैं। फसलें अच्छी थी। पारवती नदी से नहरें निकाल कर सिचाई की व्यवस्था की गई हैं। मैं धीरे-धीरे शिवपुरी की ओर वढ़ रहा था। कोटा से शिवपुरी २५० कि० मी० है। रास्ता वड़ा खराव था। पर हवा पक्ष में थीं अत खराव रास्ते के वावजूद दिन भर में १२५ कि० मी० की दूरी तै कर लिया। केलवाड़ा पहुंचते पहुंचते रात हो गई अतः वहीं एक विद्यालय में रुक गया। केलवाड़ा के पास ही सीता वाटी है। प्राचीन समय में यहीं पर वाल्मीकि का आश्रम था। इसीं स्थान पर राम की आज्ञानुसार लक्षमण सीता को छोड़ गए थे। यहां पर लक्षमण सीता तथा वाल्मीकि का मंदिर है। यहां पर वान गंगा नाम की एक नदी भी है जो कभी सुखती नहीं है। कहा जाता है कि लक्षमण के वाण के द्वारा यह नदी पैदा हुई थी अतः इसे वान गंगा ( बाण गंगा ) कहते हैं। इधर किरात (किराण) जाति के लोग कधिक हैं। ये लोग वड़े अन्ध विश्वाशी होते हैं। किसी रोग को देवीं देवता का प्रकोप समझते हैं अतः दवा के स्थान पर पूजा ही अधिक करते हैं। हर गाँव का एक विशेष देवता होता है।

वास नामक स्थान पर ऊंटों का एक लम्वा कारवां मिला। ४,४ ५, ५ ऊंट आगे पिछे रस्सीयों द्वारा आपस में वंधे थे। मैं कारवां के पीछे-पीछे चल रहा था। एकाएक एक ऊंट को पता नहीं क्या हो गया था कि वह गने से भयंकर आवाज निकालने लगा और इधर

उधर कूदने लगा। उसके साथ बंधे हुए ऊंट भीं भागने लगे। बड़ी विचित्र समस्या खड़ी हो गई। कारवाँ के मालिक अपने परिवार के साथ पीछे ऊंट पर आ रहे थे। उतर कर अपने सेवकों के साथ दौड़े और सब लोग मिलकर पागल ऊंट को वश में करने लगे। ऊंट और भी हास्यास्पद हरकते करने लगा। इस भाग दौड़ में गिरोह की कई औरतें घायल हो गई। बड़ा देर के बाद ऊंट को वश में किया जा सका। रास्ते के दोनों ओर कई सवारियां बचाव की मुद्रा में दुबकी खड़ी थी। ऊंट राज ने कुछ देर तक ऐसा तमाशा खड़ा कर दिया कि सब लोग जहां के तहां रुक गए।

पास में एक नहर खोदी जा रही थी। मिट्टी खोदने का काम मशीनों से हो रहा था। सैकड़ों मनुष्यों का काम यह मशीन देखते--देखते कर देती थी। ड्राइवर के एक इशारे पर गहरांई तक मिट्टी खोद कर दोनों किनारों पर रख देती थी और अपने निकलने का मार्ग स्वयं बना लेती थी। सारा काम आनन फानन में हो जाता था।

१५--१२--७२ सुबह केलवाड़ा से चला तो रात की बातें दिमाग में घूम रही थीं। पिछली रात लोगों ने बताया था कि किस तरह आज से तीन दिन पूर्व पास के गांव में पुलिस के साथ फायरिंग करते हुए इस क्षेत्र का कुख्यात डाकू स्वर्ण सिंह बच निकला था। शिवपुरी तक का सारा इलाका बीहड़ों से भरा हुआ है। चम्बल का बीहड़ जिसमें केवल बंदूके ही पलती है। पता नहीं वह कौन सा अभिशाप है जो चम्बल के बेटों को चैन से नहीं सोने देता। बिहड़ो से बराबर पुकार आती रहती हैं और चम्बल के बेटे उसकी ओर खिच जाते है। एक बार जो बीहड में घुसता है वह फिर वापस नहीं आता उसकी लास ही वापस आती है। इधर तो सर्वोदयी नेताओं ने इस मान्यता को झूठला दिया है। पर क्या चम्बल चुप बैठ सकेगी ? कहा जाता है कि इस क्षेत्र में बेटे नहीं पैदा होते, बन्दूके पैदा होती हैं। इन्हीं बीहड़ों से होकर मुझे गुजरना था। मन में तरह--तरह के भाव आ जा रहे थे।

"यही चम्बल का बीहड़ है, जिसे दुनियां ने जाना है।
यहीं पर दस्युदल चम्बल के, बेटों का ठिकाना है॥

★ वर्ग नीति के अभी वही कुचक्र चल रहे,
शांति के लिए अभी वही दमन मचा रहे।
लुट रही मनुष्यता अभी यहां उसी तरह,
महान पेट आज भी गरीब को निगल रहे ॥ ★ 'चुबजी'
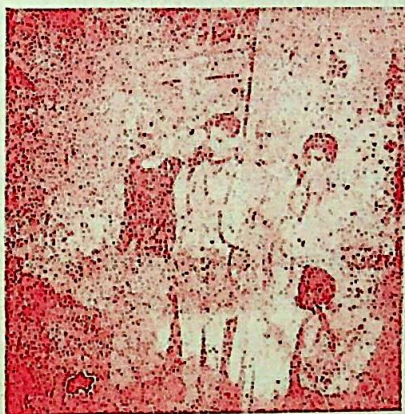
बायें-श्री शोभालाल गुप्त
(सम्पादक 'हिन्दुस्तान')
दाहिने-श्री कनक मधुकर
(सम्पादक नवजीवन)
मध्य– पर्यटक श्री पान्डेय
उदयपुर।

श्री एन० एस० रन्धवा

(पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, सोल विभागाध्यक्ष) एवं सायकिल पर्यटक श्री पांडेय
लुधियाना

दस्युराज मान सिंह (डाकू) रूपा और लुक्का आदि के बारे में सोचते हुए जा रहा था। शाहाबाद (राजस्थान) के कुछ दूर बाद एक चाय की छोटी सी दूकान पड़ी। वहा पर मैं रुक गया। दूकान में एक ओर एक लम्बे कद का स्वस्थ बूढ़ा व्यक्ति चद्दर से अपने सर को लपेटे बैठा था। सामने पूरा बीहड़ था अत. पता नहीं कबतक कोई ठिकाना मिले यही सोचकर मैं वहां चाय पीने के लिए गया था। मैंने उस व्यक्ति को साधारण दृष्टि से ही देखा पर उसने मुझे बड़ी खोजी दृष्ठि से देखा। बड़ी देर तक वह मुझे घूर घूर कर देखता रहा। मेरी पोशाक तथा मेरी साइकिल पर लगे बोर्ड को भी उसने गौर से देखा और जब मैंने दूकानदार की ओर चाय के लिए गिलास बढ़ाया तो उसने मुझे प्रणाम किया और पूछ बैठा "कहां कहां घूम आए पंडित जी ऽ" मैंने उन्हें अपनी यात्रा तथा इनके उद्देश्य के बारे में उन्हें जान कारी दी जिसे सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए। इस बीच मैंने देखा कि उधर से जो भी गुजरता था वह उन्हें अभिवादन अवश्य करता था परन्तु ये सज्जन किसी से भी बात नहीं करते। वस्तुस्थिति को देखते हुए अब मुझे उनके एक सन्देहास्पद व्यक्ति होने की पक्की धारणा हो गई। उन्होंने मुझे दुबारा चाय दिलवाया जिसे मैं अस्वीकार नही कर सका। मैंने उनसे कहा कि आप बुजुर्गो का आशीर्वाद चाहिए ताकि मैं अपने मिशन को पूरा कर सकूं। बात यह थी कि मुझे अब विश्वास हो गया था कि बीहड़ों में उनका आशीर्वाद मेरे साथ रहना ही चाहिये। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि निशंक जाइए-कोई भय नहीं है। मैं उनसे पूरी तरह प्रभावित हो चुका था अतः उन्हें एक लम्बा सा सलाम ठोंक कर दूकान से बाहर आ गया। बाहर भी कुछ आदमी खड़े थे। मैंने एक से धीरे से पूछा कि अन्दर वाले सज्जन कौन हैं तो उसने रहस्य पूर्ण ढग से कहा, "छोड़िये, अपना काम देखिये। क्या कीजिये गा उनका परिचय जान कर।" मैंने सचमुच ही छोड़ दिया। और आगे पूछने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने भगवान को स्मरण किया और बीहड़ों में हो लिया। प्रभू की कृपा तथा वृद्ध सज्जन के आशीर्वाद से मैंने बीहड़ों को तो निर्विघ्न पार कर

लिया पर बीहड़ के जीवन की छाप मस्तिष्क पर रह गई। पता नहीं चम्बल की रक्त पिपासा कभी शान्त होगी या नहीं। इस क्षेत्र के जन जीवन का अस्तर उठाने के लिए बहुत कुछ करना बाकी है। ऐसी कई संस्थाएं इधर लगी भी हुई हैं। पर अभी बहुत काम बाकी है। ऐसी एक संस्था शाहाबाद (राजस्थान) क्षेत्र में काम कर रही है। नाम है लोक सेवक संघ। यह संस्था आदिवासियों की खूब सेवा कर रही है। इसने आदिवासी बच्चों की शिक्षा आदि के क्षेत्र में प्रसंशनीय कार्य किया है।

शाम तक शिवपुरी पहुच गया। वहां गणेश आश्रम विद्यालय में ठिकाना मिल गया। वहां के व्यवस्थापक ने, जो शिवपुरी नगर पालिका के अध्यक्ष भी थे, मेरा भव्य स्वागत किया तथा अध्यापकों और विद्यार्थियों को मेरी सदभावना यात्रा के बारे में जानकारी दिया।

१६–१२–७२ आज सुबह झाँसी के लिए प्रस्थान किया। शिवपुरी छोड़ने से पूर्व मैं उस स्थान पर गया जहां ताप्या टोपे की प्रतिमा लगी हुई थी। शिवपुरी में ही इस महान सेनानी को फांसी दी गई थी। नगर से थोड़ी दूर राष्ट्रीय उद्यान के पास से राष्ट्रीय पथ २५ निकलता है जो झांसी की ओर जाता है। इसी पथ पर पथ चेतक दौड़ चला कुछ ही दूर पर अमोला घाटी की मजेदार उतराई पड़ी और उसके बाद आया करेरा कस्बा जहां पुलिस वालों का कैम्प लगा हुआ था और सूटिंग की ट्रेनिग दी जा रही थी। महुअर नदी के पश्चात मैंने उत्तर प्रदेश की सीमा में प्रवेश किया और शाम को मैं वीर मर्दानी लक्ष्मी बाई की झांसी में था। यह उस महान नारी लक्ष्मी बाई की झांसी है जिसके गीत आज भी मुर्दों में जान फूंक देते है, "बुन्देले हर बोलों के मुह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" यहाँ का किला आज भी देश की आन पर कुर्बान हो जाने वाली रानी की याद ताजी कर देता है।

१७-१२-७२ आज जब झांसी से आगे बढ़ते हुए मैं एक चौराहे पर लगे हुए बोर्ड के पास रुक कर बांदा जाने वाले मार्ग को ढूंढ़ रहा था तबतक वशीर अहमद नाम का एक युवक मेरे पास आया और मुझे सलाम कर के पूछा, "आप का ही प्रोग्राम इसमें छपा है ?" मैंने देखा, उसके हाथ में झांसी से निकलने वाले पत्र 'जागृति' की प्रति थी और उसमें मेरे बारे में समाचार छपा था। मैंने उसकी ओर मुस्करा कर हां सूचक सिर हिलाया। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और बड़ी देरतक मुझसे विशेष जानकारी लेता रहा। इसके बाद मैं बांदा के मार्ग पर बढ़ चला। बेतवा नदी पर बरुआ सागर बांध की झांकी बड़ी मनोहर लग रही थी। इसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश की भूत – पूर्व मुख्य मंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी ने किया था। रास्ता बड़ा अच्छा मिल रहा था अतः आज १३५ कि० मी० चला। झांसी से आगे बढ़ने पर बराबर मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की आंख मिचौनी चलती रही। इधर सिंचाई की व्यवस्था अच्छी नहीं दीख रही थी पर चूंकि बरसात समय से हो गई थी अतः फसलें अच्छी थीं। कुल पहाड़ गांव में आजादी की लड़ाई के एक पुराने सेनानी श्री लाल बहादुर चौबे से मुलाकात हुई। चौबे जी का स्पष्ट भाषी स्वभाव बड़ा अच्छा लगा। रात्रि विश्राम की व्यवस्था उन्होंने अपने यहां ही की।

## ३६. कालीं पहाडी का औघड़

पवित्र और दृढ़ इच्छा सर्व शक्तिमान है। 'विवेकानन्द'

१८-१२-७२ चौबेजी ने बहुत सवेरे ही जगा दिया। साढ़े पांच बजे प्रातः ही स्वयम चाय बनाकर पिलाए। यहां से मुझे महोबा जाना था। आल्हा अदल की

भूमि महोवा देखने की वड़ी उत्कट अभिलाषा थी । २५ की० मी० चल कर १० वजे मैं महोवा पहुंच गया पर वहा पहुंच कर निराशा ही हाथ लगी। पुरानी यादगार की कोई खास चीजे नहीं मिली । एक चौक पर ऊदल की घोड़े पर वैठी हुई प्रतिमा थीं और एक तालाव के वीच में वने महल में शस्त्रों के कुछ मलवे थे । यहां पर वहुत कुछ देखने की आशा वांधकर चला था। । महोवा नगर पालिका के अध्यक्ष श्री तिवारी जी ने मेरी यात्रा की वड़ी सराहना की तथा नगर पालिका की ओर से एक प्रशस्तिपत्र भी दिया ।

महोवा से १० की० मी० दूर एक पहाड़ी है जिसे काली पहाड़ी के नाम से जाना जाता है । मुख्य मार्ग से लगभग एक कीलो मींटर दूर यह पहाड़ी है । मैं उधर से गुजर रहा था कि देखा कि एक व्यक्ति जिसने अपनी आकृति को काफी भयंकर वना रखा था । एक मरे हुए जानवर की लाश के पास वैठा था और गिद्धों से मांस के टुकड़े छीनकर अपने मुहं में रख लेता था। और लाश के चारों ओर दौड़ता था। । वहा का दृश्य इतना वीभत्स तथा धृणा पूर्ण था कि देर तक देखना सम्भव नही, हो सका और मेरे मुंह से अनायास ही छी, छी, निकल गया । एक आदमीं जो पास में ही खड़ा था। , चेतावनी के स्वर में वोल उठा, "हां, हां, ऐसा मत कहिए ये औघड़ वावा है । 'औघड़ वावा अव मांस का एक वड़ा टुकड़ा मुंह में दवाए पहाड़ी की गुफां की ओर जा रहे थे । मैंने उनके वारे में जानना चांहा तो उस आदमीं ने कहनाशुरु किया, " एक रात की वात सुनिये । मैं अपने खेत में रखवाली करने के लिए सोया था । घनघोर अंधेरी रात थी। आधी रात का समय होगा । मैं किसी कारण वश जग गया था । मैंने देखा कि दो स्त्रिया जो एक दम नग्न थी , अपने हाथों में छोटे छोटे मशाल लिए हुएं तथा उसमे से एक विचित्र प्रकार का धूंआ निकालते हुए पहाड़ी की ओर जा रही थी । उनके वाल खुलेहुए थे और आकृति वड़ी डरावनी लग रही थी । वे दोनो ही एक प्रकार से नाचते हुए गुफा की ओर जा रही थी । गुफा के पास यह औघड़ वावा खोपड़ियों की माला पहने हुए एक

धूनी के पास बैठा था। इन औरतों के पास पहुंचने पर उसने अपनी धूनी से एक मशाल जलाया और रोशनी को तेज कर दिया। कुछ देर तीनो वहां खड़े विचित्र मुद्राएं बनाते रहे और फिर गुफा के अन्दर लुप्त हो गए। मेरी नींद एक दम उड़ गई थी पर फिर मुझे सन्देह लग रहा था कि मैं जो कुछ देख रहा हूं वह स्वप्न है अथवा सत्य। डर भी लग रहा था पर इसके बाद क्या होता है यह देखने के लिए वहीं दुबका पड़ा रहा। लगभग एक घंटे के बाद दोनो औरते बाहर आईं। इस समय उनके शरीर पर वस्त्र थे। अधेंरी रात में दूर से पहचानना कठिन हो रहा था पर जब वे औरते कुछ पास से गुजरी तो मैंने उन्हें पहचान लिया। ये दोनो ही हमारे पास के एक गाँव की थी जो निसंतान थी और सन्तान के लिए प्रायः पूजा पाठ किया करती थीं यह घटना आज से सात वर्ष पहले की है। ये दोनो औरतें आज भी निसंतान है। उस रात वाला सारा आयोजन संतानप्राप्ति के लिए किया गया था। यह औघड़ बाबा कभी कभी पता नहीं कहा लुप्त हो जाता है और फिर कुछ दिन बाद इस गुफा में आ जाता है। आप छी छी कर रहे हैं- हो सकता हैं आप का कुछ अनिष्ठ हो जाय।"

यह सब सुन कर मुझे कुछ दहसत अवश्य हुई और इस कहानी की सत्यता के बारे में सन्देह भी हुआ पर उस आदमी ने बताया कि उसने इस घटना को अपनी आँखों से देखा है किसी से सुना नहीं है। इस लिए वह इस औघड़ बाबा से प्रभावित है। मैंने मन में सोचा कि हो सकता है यह भी औघड़ बाबा से किसी दुख का निवारण चाहता हो।

आज के युग में जब मनुष्य चाँद पर पहुंच गया है, हम कितने अंधविश्वासों में जी रहे हैं। औघड़ बाबा के प्रति श्रद्धा की जाय या घृणा कौन कहे ? सन्तान देने के नाम पर रात के अंधेरे में यह सब दुष्कर्म पल रहा है और हम औघड़ बाबा की पूजा कर रहे हैं।

एक बजे दिन में बांदा पहुंच गया। एक वैष्णव भोजनालय में खूब छक कर भोजन किया। बांदा नवाबों का नगर है। इसका पौराणिक महत्व भी है। कहा जाता है कि इसे वामदेव ऋषि ने बसाया था। बाद में

इसका नाम वादा होगया। यहां एक विचित्र किस्मका तालाब है जिसका किसी भी कोण से चित्र लेने पर केवल तीन कोने ही आते हैं। वादा सजर पत्थरों के लिए विख्यात है। वहां से चला तो इस क्षेत्र के एक भूतपूर्व एम० एल० ए० से मुलाकात हो गई जिन्होंने मेरा यथोचित सत्कार किया। अगौरा पहुंच कर रुक गया। यहां के अध्यापकों के बीच बड़े स्नेह पूर्ण वातावरण में रात बीती। यहां पर मुझे श्री रामधारी सिंह 'कौशिक' मिले जो अगौरा के निवासी हैं तथा इस क्षेत्र के जाने माने कवि (लोक गीत गायक) हैं इन्होंने मेरी यात्रा में बड़ी रुचि लिया और मुझे अपने अनुभवों को प्रकाशित करने के लिए विशेष रूप से उत्साहित किया। मैंने उन्हें बताया कि मेरे अनुभवों का प्रथम खण्ड 'अपनी धरती' के नाम से प्रकाशित हो चुका है और इस बार भी इसका द्वितीय खण्ड प्रकाशित कराने का इरादा है तो वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझसे वादा लिया कि 'अपनी धरती' के पृष्ठों पर उनकी भी एक रचना छापी जाय। कुछ दिनों के बाद उन्होंने एक कविता लिख कर मेरे पास भेजा था। जिसे मैं आप के सम्मुख रख रहा हूं।

कैसे कैसे लोग रचे प्रभु कैसा तेरा खेला रे,  
निज धरती की खाक छानने निकला विमल अकेला रे।  
ना कोई संगी ना कोइ साथी साइकिल ही हमराही,  
ऐसे धीर, गम्भीर युवक जग में बहु तेरे ना ही।  
करें प्रकाशित समाचार सब लें न किसी से धेला रे,  
सत्तर-सत्तर मिल चलकर भी शिकन न पड़े जरा भी,  
भरा हुआ उत्साह हृदय में, मुख पर मंजुल हांसी।  
ऐसे लोग करें जग में कुछ, मुख से कुछ भी कहे ना रे,  
भूल न जाना इस "कौशिक" को, हे कमठ व्रत धारी,  
'अपनी' धरती के पृष्टों पर रचना रहे हमारी।  
तेरे साहस का बखान अपनी धरती में फैला रे॥

धन्य है कौंसड़ गांव, देवरिया जनपद धन्य महान,  
धन्य-धन्य वह प्रान्त कि जिसके हैं ऐसे संतान।  
मात पिता गुरुदेव धन्य हैं जिनके हैं ये चेला रे॥ निज...

कौशिक जी ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया। वैसे यह उन्हीं की महात्मा का द्योतक है जो मुझ जैसों को इतना ऊंचा कर के देखते हैं।

## ४०( १९--१२--७२ से २७--१२--७२ तक की डायरी )

कर्म चात्मिन्त्रितं कार्यं, तिक्षेण वा यदि वा-मृदु।
ग्रस्यते अंकर्म शीलस्तु, सदा नथेरे किंचनः ॥

वाराणसी में एक निश्चित समय पर पहुँच जाने की सूचना मैंने अपने प्रियजनों को दे दिया था। अतः बहुत जल्दी जल्दी दूरी तै कर रहा था। अपने प्रियजनों से मिलने की इच्छा इतनी बलवती हो रही थी कि अधिक से अधिक चलने पर भी थकावट महसूस नहीं होती थी। थकावट शब्द को मैं एक तरह से भूल ही गया था। वैसे अब तक इतना अभ्यास हो गया था कि निरंतर ४८ घंटे सायकिल चालन में मुझे कोई कठिनाई नहीं प्रतीत होगी। अगोर से कुछ दूर चलने पर भरत कूप आया। यह वह कूप है जहां भरत ने राम के राज्याभिषेक के निमित्त ले गए अनेक तीर्थों के जल को रखा था। गोस्वामी तुलसी दास जी ने लिखा है :

अत्रि कहेउ तब भरत सन, सैल समीप सुकूप।
राखिय तीरथ तोय तह पावन अमिय अनूप ॥

इस कूप की बड़ी महिमा है।

भरत कूप अस कहिहहिं लोगा, अति पावन तीरथ जल जोगा।
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी, होइहहिं विमल करम मन वानी ॥

क्यों न हो। भ्रातृभाव का जो आदर्श भरत ने रखा ... उदाहरण

विश्व साहित्य में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता । तभी तो उन्हें राम की अनन्य कृपा मिली,

" भरत सरिस को राम सनेही, जग जप राम, राम जप जेही ।

आज भी इस कूप को ऊपर से छा कर सुरक्षित रखा गया है और यहाँ स्नान करने के लिए भक्तों की भीड़ लगी रहती है । भरत कूप से थोड़ा ही आगे जाने पर चित्रकूट का पावन तीर्थ आ गया । धनुष के आकार की मन्दाकिनि के तीर पर बने हुए घाट बड़े भले लग रहे थे । इसी घाट पर वह स्थान आज भी सुरक्षित है जहां गोस्वामीं जी ने राम लक्षमण को तिलक लगाया था तथा जिसके सम्वन्ध में दोहा कहा गया है कि,

" चित्रकूट के घाट पर भइ सन्तन की भीर,
तुलसिदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुवीर । "

यहां पर तोता रुप हनुमान जी की प्रतिमा भी है । घाट से लगभग १ मील की दूरी पर कामद गिरि है । कहा जाता है कि भगवान आज भी इस पवित्र पहाड़ के अन्दर निवास करते हैं अतः कोई भी इस पहाड़ पर नहीं चढ़ता है और न वहाँ के पेड़ पौधों को ही नुकसान पहुंचाता है । रहीम ने भी तो कहा था कि,

" चित्रकूट में वसत है, रहिमन अवध नरेश,
जापर विपदा परत है, सो आवत ऐहि देश ।। "

चित्रकूट जाने वाले दर्शनार्थी कामदगिरि की परिक्रमा अवश्य करते हैं । मैंने भी परिक्रमा किया । भरत मिलाप, स्थान पर पहुंचकर एक दम भाव विभोर हो गया । जिस स्थान पर राम और भरत मिले थे वहां आज भी पैरों के छाप सुरक्षित हैं । कहा जाता है कि राम भरत मिलन इतना कारुणिक था कि पत्थर पिघल कर मोम हो गए । परिक्रमा के बांद अन्य स्थान देखने गया जिनमें हनुमान धारा

सीता रसोई तथा प्रमोद बन फटिक शिला मुख्य हैं । ये सारे स्थान राम कथा से सम्बन्धित हैं और राम की याद संजोये हुए हैं। चित्रकूट में कुछ ऐसा आकर्षण था कि हटने की इच्छा नही थी पर एक निश्चित दिन को वाराणसी पहुंचना था अत: चलना ही पडा ।

वहा से चलकर राजापुर आया । तुलसी की जन्म भूमि में आकर सर अपने आप झुक गया । यह वह भूमि थी जहां महामानव मानस कार तुलसी पैदा हुआ था । यहां के तुलसी मंदिर में गोस्वामी की हस्त लिखित रामायण सुरक्षित है इससे पूर्व मऊ (कौशाम्बी) में थोड़ी देर के लिए रुका था। इस स्थान को इक्ष्वाकु वंशी राजाओं की राज धानी रहने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है जिस वंश में मर्यादा पुरुषोत्तम राम पैदा हुए थे । अब तो केवल नाम शेष रह गया है । बांदा से इलाहाबाद तक काली मिट्टी मिलती गई । सिचाई की व्यवस्था कुछ खास अच्छी नहीं दिखी पर मिट्टी अच्छी थी अत: फसलें अच्छी दीख रही थी । रात गए इलाहाबाद पहुंच सका । गंगापुल को पार कर एक शिक्षा संस्था में गया । वहाँ के एक उत्तर प्रदेशीय प्रोफेसर साहब ने मेरे साथ कुछ भी सहयोग करने में एकदम असमर्थता प्रगट की पर सौभाग्य की बात थी कि वहां के केरल निवासी प्राचार्य महोदय बड़े सदय तथा सरल ह्दय थे। जिनके सहयोग से वहाँ के काश्मीर निवासी प्रबंधक श्री बाथू साहब ने मेरे रहने आदि की उचित व्यवस्था कर दी । स्वयं भोजन बनाकर खिलाया भी उस दिन कुछ अधिक श्रम हो गया था अत: थोड़ा-थोड़ा बुखार जैसा लग रहा था और उसपर से उस उत्तर प्रदेशीय प्रोफेसर साहब का व्यवहार भी अखर रहा था पर बाथू साहब के स्नेह तथा बन्धुत्व से भरे व्यवहार ने सारा कष्ट दूर दिया ।

२०-१२-७२ आज प्रात: तबीयत प्रसन्न थी । बाथू साहब से विदा लेकर इलाहाबाद से चल पड़ा । पुराना किला दूर से ही दिखाई दे रहा था।

उस दिन पूर्णिमा थी तथा स्नानार्थियों की वड़ी भीड़ थी । पांवन संगम के पास पथ चेतक को बालू में खड़ा करके मैंने पवित्र जल का स्पर्श किया तथा वहां का जल अपने बोतल में भी ले लिया जिसमें कई तीर्थों का जल संग्रहीत था । झूसी के पीपे के पुल को पार कर विश्वनाथ की नगरी काशी के लिए चल पड़ा । लगभग ४० की० मी० चलने के बाद वैरगिया नाला आया जिसके सम्वन्ध में कई जनश्रुतियां प्रचिलित हैं । भगवान की कृपा थी कि मुझे वहां कोई "साधु चोर,, नहीं मिला । वाराणसी पहुचने की जल्दी थी क्यों कि वहां मेरे प्रिय जन मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे । झांसी से वाराणसी कीदूरी ६०० की० मी० है वहाँ पहुचने पर मेरी इस यात्रा के लगभग ५००० की० मी० पूरे होने को थे ।

वाराणसी में मैं अपने चिर सहयोगी श्री घनश्याम मिश्र के यहां ठहरा यहां मुझे तीन दिन लग गए क्यों कि मुझसे मिलने के लिए गांव से मेरी पत्नी गिरिजा तथा मेरे कनिष्ठ भ्राता भानु प्रताप आदि आए थे । वाराणसी में मुझे श्री नरेन्द्र कुमार वीर, श्री रमाशंकर गुप्ता, यू० पी० साइकिल स्टोर के मालिक, जहां से मैंने हरकुलिस साइकिल खरीदी थी, तथा उनके मिस्त्री जिन्होंने साइकिल को फिट किया था आदि लोगों का विशेग सहयोग प्राप्त हुआ । ऐसा लगा कि मैं घर पहुंच गया हूं । श्रीमती घनश्याम मिश्रा ने मेरी विशेष सेवा की जो मुझे सदा याद रहेगी ।

२४-१२--७२ वाराणसी से विदा होते समय बड़ा कष्ट महसूस हुआ । एक बार फिर अपने लोगों से दूर जाना था । रामनगर के पास अपने चिर-वन्धु श्री राम देव जी तथा ईन्दु देवी से मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई । पीपे के पुल से होकर गंगा को पार किया और राम नगर होते हुए मुगल सराय आगया । यहाँ से राष्ट्रीय पथ २ पर चलना था । मोहनियां के पास उत्तर प्रदेश की सीमा समाप्त हो गई और बिहार आरम्भ हो गया । दुर्गावती नदी से निकली नहरों के द्वारा सिंचित यह

क्षेत्र खुशहाल नजर आया। वाराणसी से १२० कि० मी० चलकर शेर शाह की भूमि ससराम में पहुंचा जहाँ मैं शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र के प्रधानाचार्य श्री श्याम बिहारी शर्मा का अतिथि रहा।

२५--१२--७२ डेहरी के पास सोन नदी को पार किया। सोन का ३ की० मी० ३ मीटर लम्बा पुल बड़ा भला लग रहा था। नीचे सोन भद्र का बालू फैला हुआ था। यहां से होकर मैं औरंगाबाद पहुंचा जहां अनुग्रह बहु उच्चशीय विद्यालय के प्राचार्य ने मेरी यात्रा में बड़ी रुचि लिया। उस दिन शेर घाटी के डोबी नामक स्थान पर श्री शुक्ला जी के यहां ठहरा।

२६--१२--७२ रात मच्छरों ने बहुत तंग किया था। सारा चेहरा ही फूल गया था और बड़े भद्दे--भद्दे दाग पड़ गए थे। भभूआ चट्टी में एक दूकान पर खड़ा था वहां लोगों ने बताया कि पास के विश्राम गृह में बिहार के शिक्षा मंत्री श्री दिनेश सिंह ठहरे हुए हैं। मैंने उनसे भेंट करना चाहा। बड़ी आसानी से उनसे मुलाकात हो गई। मेरे कार्य क्रमों की जानकारी पाकर माननीय शिक्षा मंत्री जी बड़े प्रसन्न हुए और मुझे प्रोत्साहन दिया। संयोग की ही बात थी कि अपने पड़ोसी देश, विश्व के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल के माननीय गृह मंत्री श्री धीरेन्द्र कुमार करकिल भी वहीं थे। उन्होंने भी मेरी यात्रा में बड़ी रुचि लिया। तथा शुभकामनाए दी। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने भोजन करने के बाद ही आने दिया। इन दोनो ही राज नेताओं ने बड़ी आत्मीयता दिखाई। चलते समय नेपाल के गृह मंत्री जी ने मुझे जो आशिर्वाद दिया उसे मैं कभी भूल नहीं सकुंगा। उन्होंने बड़े स्नेह से कहा था, मेरी हार्दिक शुभ कामना आप के साथ है। आप की यात्रा मंगलमय हो।"

आगे १४--१५ मील तक जंगल ही जंगल मिले। बीच में लगभग तीन मील की एक कठिन चढ़ाई भी मिली जिसमें बड़ा श्रम करना पड़ा यहां से रोहतास शहर पास ही था। कहा जाता है कि इसे राजा हरि-

श्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम पर बसाया गया था । अब तो यह एक अलग जिला भी बन गया है । यहा से १८ की० मी० दूर दक्षिण तरफ चतरा नामक प्रसिद्ध स्थान है जो १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी रहीम खान, तथा वीर सावरा की जन्म भूमि है । इसके बाद आगे बढ़ा तो अटका नामक स्थान पर अटक जाना पड़ा । वहां पहुचते पहुचते रात हो गई । यहां पर मुझे बिहार कल्याण विभाग के कार्य कर्ताओं का विशेष सहयोग मिला ।

२७–१२–७२ अटका के आगे प्रायः ऊंची नीची भूमि, जंगल और पहाड़ियां ही मिली बीच बीच में कहीं कहीं एकाध खेत भी झाक जाते थे। दूर से ही पारस नाथ पहाड़ की चोटी दीख रही थी ईसरी बाजार होकर जब मैं मधुवन पहुंचा तो एक प्रकार से मैं पारस नाथ पहाड़ की जड़ में था । पारस नाथ की चोटी बिहार की सबसे ऊंची चोटी है । इसकी ऊंचाई ४५०० फुट है । इस पर अनेक जैन मन्दिर बने हैं। सबसे ऊंची चोटी पर सबसे बड़ा मन्दिर है जो काफी दूर से भी दिखाई देता रहता है। दूर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे कोई ध्वज फहरा रहा हो । इन मन्दिरों में जैन सन्तों के चरण चिन्ह बनाए गए हैं जिनका दर्शन करने के लिए देश के कोने कोंने से जैन धर्मावलम्बीं आते रहते हैं । यहां से थोड़ी दूर पर तोपचाची का प्रसिद्ध जलाशय है जहां से इस पूरे क्षेत्र में जल की आपूर्ति होती है ।

इस समय मैं जी० टी० रोड पर चल रहा था । अब मुझे धनबाद पहुंचना था । वहा मुझे अपने परम सहयोगी श्री श्याम बिहारी सिंह से मिलना था जिनका हार्दिक सहयोग मुझे अपने प्रथम यात्रा काल से ही मिलता रहा है । बरवा नामक स्थान पर मैंने जी० टी० रोड छोड़ दिया और शाम को चार बजे के लगभग धनबाद पहुंच गया । जब कोयला खान भविष्य निधि कार्यालय में पहूंचा तो यह जानकर घोर निराशा हुई श्री श्याय बिहारी सिंह बाहर निकल गए थे हालांकि बाद में यह जान सन्तोष ही हुआ कि वे अपनी माता जी के साथ तीर्थाटन पर निकले

मैं वड़े असमंजस में था पर उनके मित्रों ने मेरे साथ ऐसा सद्व्यवहार किया कि मैंने उनकी अनुपस्थिति महसूस ही नहीं किया विशेष कर श्री श्याम विहारी सिंह के परम मित्र श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव तथा श्री रामवृक्ष सिंह जीं, जो उनके कार्यालय में उच्च पदोपर कार्यरत हैं, मेरे साथ बड़ाही आत्मीयता पूर्ण व्यवहार किया। रात को श्री श्याम विहारी सिंह के निवास स्थान पर ही ठहरा। उनकी व्यवस्था देखकर वड़ा सन्तोष हुआ। घर को वड़े कायदे से साफ सुथरा रखा गया था तथा सामने का वगीचा देखने लायक था। घर के आगे पीछे हरीभरी लहलहाती वागवानी को देखकर उनके कर्मठचरित्र कीं झलक सहज ही पाई जा सकती थी। श्री श्याम विहारी सिंह की अनुपस्थित में उनके मित्रों ने मेरे साथ जो स्नेह और ममता पूर्ण व्यवहार किया उसे मैं भूल नही सकूंगा।

## ४१. (२८-१२-७२ से ७-१-७३की डायरी)

आनंदमय होजाओ यही तुम्हारा लक्ष्य है॥ (अरविंद घोष)

आज सवेरे श्री राम वृक्ष सिंह श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव तथा अन्य स्नेही वन्धुओं से भावपूर्ण विदाई लेकर चास की ओर चल पड़ा। वहा पर मुझे विश्व साइकिल पर्यटक श्री मिश्री लाल जायसवाल जी से मिलने की इच्छा थी। संयोग वश वे कहीं वाहर निकल गए थे। उनके सुपुत्र मिले जिन्होंने मेरा वड़ा सत्कार किया तथा श्री मिश्री लाल जी कीं यात्रा सम्बन्धित कुछ साहित्य भी दिया। मुझे दुख ही रह गया कि मैं उस महान साइकिल पर्यटक का दर्शन नहीं कर सका। यहां से और आगे जाने पर कुछ देर वाद मैं पिन्ड्रोजोरा के एक सर्वोदय विद्यालय में था जहां के प्रधान श्री सीता राम सिंह ने मेरे बारे में बड़ी रुचि लिया।

विहार की सीमा समाप्त हो रही थी और वंगाल का पुरुलिया जनपद प्रारम्भ हो रहा था। वंगाल कीं भूमिपर पहुंचकर वड़ा संतोष हुआ। वंगाल के प्रति मेरे मन में सदा बड़ी श्रद्धा रही है। यहां के महा पुरुषों ने अपनी धरती के लिए बहुत कुछ किया है,

हे भारत में सर्व श्रेष्ठ बंगाल तुम्हारी जय हो,
मान देश का सदा बढ़ाते रहें तुम्हारे लाल, ।। तु० ।।
बंकिम, चितरंजन, रामकृष्ण, ये हैं सब पुत्र तुम्हारे,
बाघा, यतीन, नेता सुभाष, सब तेरे राज दुलारे,
तेरे वीर क्रान्ति दूतों से भगे फिरंगी सारे,
भारत ही क्या अखिल विश्व में तेरा नहीं मिशाल ।। तु० ।।
शरतचन्द, जगदीशचन्द और रवि ठाकुर सा गायक,
आशुतोष, विद्यासागर औ बसू, राय से नायक,
देश हेतु बलिदान हुए हैं तेरे बहु सुत लायक,
चमक रहा है जिनके यश से आज तुम्हारा भाल ।। ०तु ।।
जागरूक हैं जनता तेरी, जागरूक बंगवासी,
कैसे भूलें खुदीराम जैसे किशोर की फांसी,
लाठी गोलीं भी इसकी कुछ कम कर सकी न शान,
तेरी विमल धूलि में सर दे करता विमल प्रणाम ।। तु० ।।

पुरुलिया आते आते रात हो आई । ठंड पड़ने लगी थी । पुरुलिया के सूचना कार्यालय में हीं वहां के अधिकारी धनंजय दास जी के सहयोग से ठहरने की सुविधा मिल गई ।

२९-१२-७२ . आज मुझे जमशेदपुर पहुंचना था । पुरुलिया के कुछ दूर बाद पुन: बिहार प्रदेश आरम्भ हो गया । चार बजे शाम को जमशेदपुर आया । यहा पर छोटा नागपुर क्षेत्र के एम० एल० ए० श्री सनातन मांझी ने मेरी बड़ी सहायता की । ३५ वर्षीय मांझी जी अपनी कर्मठता के लिए यहाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं और झारखन्ड पार्टी के उम्मीदवार के रूप मे दो बार चुनाव जीत चुके हैं । छोटा नागपुर के आदिवासियों का जीवन स्तर ऊंचा करने की अद्भुत लगन मांझी जी में है ।

३०–१२–७२ अज मैं उत्कल प्रदेश में चल रहा था। वाराणसी से धनवाद लगभग ४५० की० मी० है। धनवाद से उत्कल प्रदेश का वारीपाड़ा (मयूरभंज) ३७५ की० मी० है और यहां से कलकत्ता लगभग ३०० की० मी० है। कलकत्ता पहुंचने पर मेरी यात्रा ६००० की० मी० से अधिक हो चुकेगी।

आदिवासियों के गांव बड़े साफ-सुथरे दीख रहे थे, मकान कच्चे ही थे पर नीचे के हिस्से लाल और उपरी भाग सफेद रंगों से रंगे हुए थे। इधर के निवासी बड़े ही सरल प्रकृति के लगे। पूरा मयुरभंज जिला कृषि की दृष्टि से अनुपयुक्त लगा। उत्कल की शिक्षा संस्थाओं ने मेरे साथ बड़ा ही सौहार्द्र-पूर्ण व्यवहार किया। हिन्दी के प्रति इधर सर्वत्र आदर की भावना दिखी। मेरी पुस्तक 'अपनी धरती' को सभी शिक्षा संस्थाओं ने अपने पुस्तकालय के लिए आदरपूर्वक खरीदा। प्रायः हर जगह अध्यापक तथा छात्र मेरे स्वागत में छोटी मोटी सभाओं का आयोजन करते रहते थे।

३१-१२–७२ रात वीसई (मयूरभंज) में रुक गया था आज यहां से चला तो कुछ ही दूर बाद वीकूट की विकट घाटी मिली और उसके बाद सुवर्ण रेखा नदीं आई।

आजकल मुझे प्रायः बुखार रहने लगा था। चेहरा एकदम फूल गया था और कभी कभी मन बड़ा निराश हो जाता था। कभी कभी तो मैं आवश्यकता से अधिक हतोत्साह हो जाया करता था। ज्यों ज्यों मंजिल करीब आती जाती थी त्यों त्यों दिल बैठता जाता था। आज तो मैं इतना निराश हो गया कि सिवा भगवान के और कोई सहारा दृष्टिगत नहीं हुआ और फिर मैंने अपने आप को उसके हवाले कर दिया।

" आ गई मंजिल नहीं अब दूर है,
मेरे मालिक क्या तुझे मंजूर है।
कष्ट के बादल हैं क्यों फिर छारहे,
रोग के आसार क्यों दिखला रहे।
आज तक तेरा सहारा था मुझे,
हो गया क्या मुझसे कोई कसूर है ॥ मेरे० ॥
शक्ति दो भगवन मेरी पीड़ा हरो
क्यों लगाई देर है कुछ तो करो ।
तेरे ही बल पर ये बीड़ा था लिया,
फिर चला जाता क्यों मुझसे दूर है ॥मेरे०॥
शक्ति वह देना प्रभो, मैली मेरी काया न हो,
तन सलामत हीरहे और व्याधि की छाया न हो,
भूल मत जाना हमारी आरजू,
हर तरफ फैला तुम्हारा नूर है ॥मेरे०॥
है यही अभिलाष एक अन्तिम मेरी,
विघ्न बाधायें हटालो राह से।
पूर्ण होने तक 'मिशन' रखना दया,
फिर उठा लेना मुझे मंजूर है।।
मेरे मालिक क्या..............

बड़ी देर के बाद जब चित्त कुछ संतुलित हुआ तो फिर आगे चल पड़ा। खड़गपुर से ३ की० मी० दूर चन्द्रनगर के एक क्लब में ठहरनें की जगह चाही पर लोग बड़ें उदासीन लगे। यहां के लोगों का और कुछ सहयोग तो नही मिल सका पर किसी तरह ठहरने की जगह मिल सकी। इच्छा नहीं रहते हुए भी मजबूरीं में वहां रहना पड़ा। रात भर लाउड स्पीकर बजता रहा जिसमें मच्छरों का संगीत भी शामिल होता रहा और

मैं अपनी किस्मत को कोसता रहा

१-१-७३ आज नया दिन था। शुभ नववर्ष के दिन मन में काफी उत्साह था, इसके अतिरिक्त कलकत्ते में अपने प्रिय जनो से मिलने की आशा भी विशेष उत्साह भर रही थी। इसी परिवेश में मैंने महानगर में प्रवेश किया। संध्या के चार बजे थे। जिस समय मैंने नगर में प्रवेश किया उस समय सारा नगर क्रिकेट मय था। लगता था कि यदि इस समय तुलसी होते तो अवश्य लिखते कि 'क्रिकेट मय मैं सब जगजानी'। बच्चे, बूढ़े जवान सभी क्रिकेट की ही भाषा में न केवल बोलते ही थे वरन् चलते फिरते और सोते जागते भी थे। भारत इगलैन्ड के बीच मैच हो रहा था सर्व प्रथम मैं सन्मार्ग प्रेस के प्रगतिशील सम्पादक श्री तारकेश्वर पाठक जी से मिला इन्होंने मेरे साहस की बड़ी सराहना की। दूसरे दिन उन्होंने अपने दैनिक पत्र में मेरे कार्यक्रमों के विषय में समाचार छापा।

एक बात मैंने यहां महसूस किया। जिस उत्साह के साथ मैंने महा-नगर में प्रवेश किया वह जल्दी ही ठंडा भी हो गया। यहाँ के व्यस्त जीवन में मेरे बारे में अधिक रुचि लेने की फुरसत बहुतों को नहीं हुई। जीवन की रफ्तार यहां इतनी तेज है कि मानव एक दम यंत्रवत हो गया है। जो केवल मानव होकर रहना चाहे उनके लिए यहां स्थान नहीं है। एक बात की अतीव प्रसन्नता मुझे अवश्य हुई और वह बात थी कि मेरे अनुज प्रिय मुक्तिनाथ की पदोन्नति हिन्दी हाई स्कूल के प्रिन्सिपल के पद पर हो गई थी। यह अपने आप में एक बड़ी बात थी। इस हिन्दी हाई स्कूल की गणना देश के प्रमुख शिक्षा संस्थानों में होती है। क्यों न हो, जिस संस्था का सम्बन्ध श्री लक्ष्मी नारायण बिरला तथा श्री मनी बिरला जैसे शिक्षा प्रेमियों से हो उनका क्या कहना। जो साधन विहीन है उनकी बात और है पर बहुत से साधन सम्पन्न लोग भी समाज तथा देश-हित की उतनी चिन्ता नही रखते जितना अपने हित की, पर कुछ इने गिने साधन सम्पन्न ऐसे भी हैं जो समाज और देश की इकाई में भी सोचते हैं। बिरला लोग इन्ही में से हैं और उनका यह हिन्दी हाई स्कूल उनके द्वारा संचालित कई सस्थाओं में से एक है। मैं प्रिय मुक्तिनाथ की बात

कह रहा था। समाज में प्रगति के लिए आदमी के अन्दर सच्चाई और इमानदारी का होना अति आवश्यक है। इन गुणों को निभाने की चेष्टा मुक्तिनाथ ने बाल्यकाल से ही किया। इनके न्याय प्रिय आचरण से सदा सन्तुष्ट रहा और मेरी सदैव चेष्टा रही कि मुक्तिनाथ अपने ध्येय से गिरने न पाएं। इनकी सच्चाई, इमानदारी और कर्मठता का ही परिणाम है कि आज इन्हे इतनी बड़ी जिम्मेंदारी सौंपी गई है। हम लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। अभावों में रहने की एक प्रकार से आदत सी पड़ गई। मुक्ति नाथ जी के अमेरिका प्रवास काल में तो आर्थिक दशा कुछ विशेष कष्ट प्रद हो गई थी। फिर भी ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना रही है कि मुक्तिनाथ सुपथ से विचलित न हों। मुझे इनके चरित्र पर बड़ा भरोसा रहा है।

कलकत्ते में विश्व विख्यात तैराक, सप्त सिन्धु विजेता श्री मिहिर सेन से भेंट हुई। सेन महाशय के रोमांचकारी अभियान मुझे बड़ी प्रेरणा देते रहें हैं। इनका स्वस्थ एवं चुस्त शरीर देखने वालों को वरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। सेन महाशय ने मुझे विशेष रूप से प्रोत्साहित किया। साहित्यक कार्यों को एक निश्चित गति तथा दिशा प्रदान करने के लिए एक्सप्लोरर क्लब आफ इन्डिया के के माध्यम से समय-समय पर अभियान दल भारत और विश्व भ्रमण के लिए भेजा जाता है। जब मैं क्लब के युवा सेक्रेटरी श्री रोबिन कुमार दे से मिला तो उन्होंने बड़े उत्साह पूर्ण ढंग से क्लब के बारे में जानकारी दी।

कलकत्ते में मेरे चिर शुभ चिन्तक श्री जगदीश मिश्र तथा उनकी पत्नी ने मेरी सुविधाओं का बड़ा ध्यान रखा। इनके सुपुत्र श्री जय प्रकाश का भी मुझे सहोयग मिला। मिश्र जी अपने निश्छल व्यहार तथा प्रगति शील विचारो के लिए समाज में विशेष रुप से प्रतिष्ठित हैं। वैसी ही हैं इनकी धर्म पत्नी जिन्हें मैं आदर पूर्वक चाची जी कहा

करता हूं। पूरी तरह भारतीय नारी के आदर्शो से युक्त हैं श्री मती मिश्रा

यहां के प्रसिद्ध स्थानों को, जैसे जूं संग्रालय, वाटेनिकल गार्डेन, विक्टोरिया मेमोरियल, बिरला का तारा मण्डल, हावड़ा पुल, दक्षिणेश्वर तथा काली घाट के मंदिर, वेलूर मठ तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय अलीपुर को तो वैसे मैं पहले देख चुका था पर इस बार एक नई वस्तु ने विशेष रूप से मेरा ध्यान आकर्षित किया। यहां के रिजर्व बैंक ने अपने मुख्य भवन में एक विशेष प्रकार की सीढ़ी का निर्माण कराया है। जो अपने आप में एक विचित्रता है। आप केवल एक सीढ़ी पर जम कर खड़े हो जाय और कुछ देर बाद अपने आप ऊपर पहुंच जाएंगे। सीढ़ीयां हीं चलकर आप को उपर पहुंचा देंगी। अब तक की मान्यता थी कि पथ निश्चेष्ट रहता है और पथिक चलता हैं पर यहां तो दूसरी ही बात है। पथिक ही निश्चेष्ट है और स्वयम् पथ चल रहा है।

७-१-७३ कलकत्ते में लगभग एक सप्ताह लग ही गया। आज कलकत्ते से विदा होते समय प्रिय पुत्री पुष्पा ( जो उस समय मुक्तिनाथ के पास थी ) की अश्रु विन्दु देख कर मैं बिचलित हो उठा था। पुष्पा को मैंने पुत्र सा स्नेह दिया है। अन्ततः विवेकानन्द पुल को पार कर वर्दमान का रास्ता लिया। कलकत्ता से वर्द्वान की दूरी १२० कि० मी० है। पूरे पश्चिम बंगाल में वर्द्वान जनपद धान की खेती के लिए प्रसिद्ध है आज कल धान की रोपिया चल रही थी। जगह -- जगह छोटे – छोटे पम्प लगे हुए थे। वर्दवान से कुछ दूर पहले शक्ति गढ़ में एक स्वच्छ जलपान गृह दिखाई दिया मैं वहां दूध पीने के लिए रुक गया। इसकी मालकिन एक स्वस्थ महिला मालिना देवी हैं। बातों ही बातों में उन्होंने मेरा परिचय पूछा और जब मैंने अपने कार्य क्रमों तथा यात्रा के विषय में उन्हें जानकारी दी तो उन्होंने बड़ी रुचि के साथ सुना। बातों के श्रृंखला की दूसरी कड़ी के रूप में उन्होंने अपनी कहानी बताया।

मलिना जी एक बंगाली युवती हैं जीवन के प्रभात में एक पंजाबी युवक से इनका परिचय हुआ। जो बाद में प्रगाढ़ मैत्री और अन्त में परिणय के रुप में परिवर्तित हो गया। कुछ दिन बड़े उत्साह में बीते। उन्हीं दिनों इस जलपान गृह को आरम्भ किया गया। समय ने पलटा खाया और एक दिन ऐसा आया कि पंजाबी युवक की नियत बदल गई। उसने अपने क्षेत्र की एक अन्य लड़की से सादी कर ली और मालिनी को अकेला छोड़ गया। एक पुरुष के लिए एक नारी का यह मूल्य था। पुरुष भटक गया पर नारी ने अपनी गरिमा नहीं छोड़ी। मलिना आज भी अकेले रह कर इस दूकान को चला रही है। मैं अब तक काफी खुल चुका था। मैंने मलिना से पूछा कि वह भी कोइ उपयुक्त पात्र देखकर शादी क्यों नहीं कर लेती ? तो वह एक क्षण के लिए एकदम निस्प्रभ हो गई। मैंने भी अपने प्रश्न की कटुता को महसूस किया पर अब तो बात निकल ही चुकी थी। मलिना दूसरे ही क्षण पूर्ण स्वस्थ हो गई और उसने किंचित मुस्कराने का प्रयास करते हुए एक शेर पढ़ा ,

" रोशनी चाद से होती है, सितारों से नहीं ,
प्यार भी एक से होता है, हजारों से नहीं। .

मुझे जवाब मिल गया। इन पंकियों में मलिना के हृदय की झलक मिल जाती है। मैं जब दूध का मूल्य देने लगा तो मालिना ने मना करते हुए कहा " लागबे ना दादा , आमाके आशीर्वाद कोरे जान। " मलिना , तुमने मुझे दादा कहा , भगवान सदा तुम्हारे साथ रहे और तुम्हे अपार शक्ति दें कि तुम इस संसार को पार कर सको।

: — : — :

# ४२ जीवन का वह भयंकर क्षण

जीवन दुखी के लिए एक युग और सुखी के लिए एक क्षण है।

'वेकन'

८–१–७३ वर्दवान से विश्वकवि के शान्ति निकेतन का दर्शन करने चला। सात किलोमीटर चलने के बाद १०८ शिव मन्दिरों की एक श्रेणी मिली जिसे देखकर निर्माता के प्रति श्रद्धा से सर झुक गया। शान्ति निकेतन का पथ तो ठीक ही था पर मार्ग में उस दिन जो भयानक घटना घटी उसे याद करके आज भी रोमांच हो उठता है। शीघ्र पहुचने के ख्याल से एक रेल लाइन से होकर चल पड़ा। लाइन के किनारे-किनारे साइकिल चलाने का रास्ता तो था पर सामान से लदी साइकिल के साथ लाइन पर चढ़ना बड़ा श्रमकारी था। जब बोलपुर स्टेशन एक मील रह गया तो एक पुल से गुजरना पड़ा। नीचे उतरकर फिर ऊपर चढ़ना कठिन लगा। अतः मैं पुल के उपर से ही चल पड़ा। पटरियां काफी दूर-दूर थी। साइकिल के साथ कुछ दूर तक तो चला गया पर धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ने लगी। साइकिल को उठाकर अपने को नीचे गिरने से बचाते हुए मैं कूद-कूद कर चल रहा था। ठीक इसी समय रेलगाड़ी की सीटी बज उठी। पीछे ट्रेन आ रही थी। अब क्या करूं ? पुल के पार काम कर रहे मजदूर चिल्ला उठे, "दादा, साइकिल फेले पालिये आसुन।" मैंने घूम कर पीछे देखा तो खून सूख गया। ट्रेन पुल पर तेज सीटी बजाती चढ़ी आरही थी। दस बारह पटरियां और बाकी थीं। क्या साइकिल फेंक दूं ? लेकिन अभी तो बहुत चलना है। यात्रा अधूरी रह जायगी। तो फिर जान दूं ? क्योंकि जीवन और मौत के बीच की दूरी क्रमशः कम होती जा रही थी। एक बार लगा कि साइकिल फेंक दूं पर दूसरे ही

क्षण विचार आया कि इसने बड़ी भयंकर स्थितियों में साथ निभाया है। आज इसे फेंक कर अपनी जान बचाऊं तो ठीक नहीं होगा। जायेंगे तो दोनों साथ ही जायेंगे। ट्रेन की सीटी और मजदूरों की चिल्लाहट एकदम सर पर थी। अन्तिम पटरी सामने थी और ट्रेन एक दम पीठ पर। मैं सुध-बुध खोकर लुढ़क गया। लगा किसी ने धक्का देकर गिरा दिया।

", किस्मत की बात देखिए, टूटी कहां कमन्द,
दो चार हाथ जब कि लबे बाम रह गया।"

जब थोड़ी चेतना आई तो देखा कि मेरा पथ चेतक थोड़ी दूर पर पड़ा हुआ है और मैं मजदूरों से घिरा हुआ हूं। मृत्यु मुझे स्पर्श कर निकल गई थी पर मुझे जो फटकार तथा ताड़ना मिली कि मैंने कान पकड़ लिया कि जीवन में ऐसी गलती फिर कभी नहीं करूंगा। सोचता हूं कि एकाध क्षण का विलम्ब भी मुझे किस स्थिति में डाल देता, तो आज भी सिहर उठता हूं।

डेढ़ बजे दिन में विश्व भारती पहुंच गया। वहां के लोगों ने मेरी बड़ी सराहना की तथा इतनी लम्बी दूरी तै कर लेने के लिऐ आश्चर्य भी किया। रजिस्ट्रार महोदय ने विश्वभारती की ओर से मुझे प्रोत्साहन देते हुए एक प्रमाण—पत्र भी दिया। शिवरी पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई। वहां पर विश्राम के लिए स्थान पाने में बड़ा कठिनाई हुई। वहां के थानाध्यक्ष तथा पुलिस वालों के सहयोग से बड़ी मुश्किल से थाने में सोने भर की जगह मिल सकी।

## ४३ आसाम के कटु अनुभव

इज्जत को चोट पहुंचाने की अपेक्षा दस हजार बार मृत्यु उत्तम है।

—एडिसन

९—१-७३ शिवरी से कुछ दूर चलने पर दो युवक मिले जो सायकिल पर भ्रमण करने निकले थे। एक की साइकिल पंक्चर हो

गई थी। मैंने उसकी साइकिल ठीक कर दी। जब हम लोगों की पारस्परिक परिचय हुआ तो वे बड़े प्रसन्न हुए। इसके बाद हम लोगों की यात्रा बांगला देश तक साथ-साथ ही चली जो बड़ी आनन्दायक रही। मैं जब तक उनके साथ रहा उन्होंने मेरा कुछ भी खर्च नहीं होने दिया। बांगला देश में हर जगह उनके परिचित मिलते गये। पाकिस्तानी जंगखोरो ने वहा जो बर्बादी किया है उसे देखकर मन दयार्द्र हो उठता है पर बंगाली युवक जिस उत्साह के साथ पुनःनिर्माण में लग गए है उसे देखकर प्रसन्नता भी होती है। बांगला देश के दर्शन की बड़ी लालसा थी जो आज पूरी हो रही थी। एक जगह मैंने कुछ लोगो को सम्बोधित कर एक कविता सुनाया जिसे उन लोगों ने बहुत पसन्द किया। कविता निम्न थी—

"तूमी कतो भालो बांगला देश रे।
कतो भालो लागे तोमार वेष॥
तुमने दिखला ही दिया, विश्व को बतला ही दिया।
कतो भालो होलो तोमार शेष रे।। बांगला.........
हृदय वेदना तेरी अपार थी, बेड़िया तेरे गले का हार थी।
जालिमों की आ गई अन्तिम घड़ी, आग तेरी थी दबी जो फटपड़ी॥
देख रहे सभी निर्निमेष रे।। बांगला...............
फिर तो बंग बन्धु की पुकार थी, दुम दबाई याहिया सरकार थी,
जग में तेरे शत्रु भी अनेक थे, मित्र तेरे जग में दो ही एक थे।
फिर भी उदित हुआ बांगला देश रे॥ बांगला.........
पाक दरिन्दों ने नारियों पै जुल्म ढा दिए,
लूट के सर्वस्व औ सुहाग भी मिटा दिए।
वीर बालाओं के कटे केस रे॥ बांगला...............
लाख लाख नौनिहाल अपना सर कटा दिए।
शस्य श्यामला मही को रक्त से नहा दिए,
अकथ कथा तेरी अभी शेष रे।।बांगला..........

मेघालय (असाम) तक अनेक नदियों तथा बड़ी कठिन चढ़ाइयों का सामना करना पड़ा। आसाम में और भी कठिनाइयां सामने आई। कई स्थान पर तो युवकों ने मेरी टोपी तक गिरा दी। टोपी प्रतिष्ठा का प्रतीक है। किसी की टोपी, पगड़ी या ताज गिरना नहीं चाहिए। मैंने कुछ सभ्य से दिखने वाले व्यक्तियों की ओर शिकायत भरी नजरों से देखा पर किसी ने कोई सहयोग नहीं दिया। कुछ ही दूर गया था कि फिर लड़कों की एक भीड़ का सामना करना पड़ा। मैं कतरा कर निकल जाना चाहता था पर वे निकलने दे तब तो। लड़कों ने मुझे चारो ओर से घेर लिया। मैं कुछ कहू उसके पहले फिस्स की एक आवाज हुई और मेरी सायकिल का चक्का बैठ गया। फिर भी मैंने भगवान को धन्यवाद दिया क्यों कि केवल साइकिल की हवा निकाल कर ही लोगों ने मुझे छोड़ दिया। वे कुछ और भी तो कर सकते थे। बड़े दुखी मन से मैं पैदल ही आगे बढ़ा पर वे लोग मुझे इतने सस्ते में छोड़ने वाले नहीं थे। मेरे कपड़ों पर पीछे से गीली मिट्टी की बौछार होने लगी। स्थिति ठीक नहीं थी अतः मैं जल्दी से जल्दी किसी निरापद स्थान पर पहुंच जाना चाहता था। बात शायद यह थी की यहां बंगालियों तथा आसामियों में बड़ा वैमनस्य चल रहा था और चूंकि आचार व्यवहार आदि में मैं बंगालियों के करीब था अतः असामियों के क्रोध का पात्र बनना पड़ता था। बहुत दूर पैदल घिसटने के बाद एक सायकिल की दूकान मिली जिसका मालिक संयोगवश एक बंगाली युवक था उससे मैंने अपनी स्थिति बताई उसने परामर्श दिया कि मुझे यथा शिघ्र तुरां पहुंच जाना चाहिए जहां के पीस क्लब का सहयोग मुझे मिल सकता है। मैं किसी तरह तुरां पहुंच गया और सचमुच ही वहां के "पीस क्लब" वाले बड़ी सहृदयता पूर्वक मिले। उन्होंने मुझे आगे जाने से मना भी किया। उस समय शाम के चार बजे थे। मैं मन से तो दुखी था ही, शरीर से

यह दिखा देना तुम्हें मैं चाहता हूं विश्व वालों,
ठोकरों को सर झुकाए वह खिलौना मैं नहीं हूं।
यह बता देना तुम्हें मैं चाहता हूं विश्व वालों,
जो घृणा को उर लगाये वह खिलौना मैं नहीं हूं॥ — 'त्यागी'

दाए-श्री दिनेश सिंह (शिक्षा मंत्री बिहार) मध्य-सायकिल पर्यटक श्री विमल कुमार पान्डेय दाहिने-श्री विरेन्द्र बहादुर सिंह 'कार्किल' (गृहमंत्री श्री नेपाल)
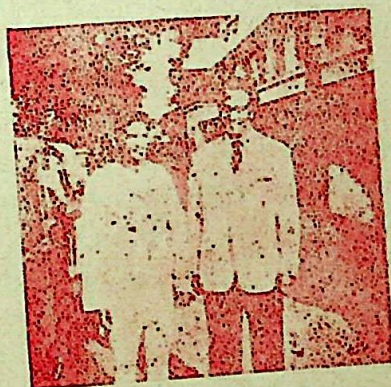
दाहिने-श्री मिहिर सेन (सप्त सिन्धु तैराक) बांये-पर्यटक श्री पान्डेय, कलकत्ता।

से भी बहुत थका हुआ था। विशेषकर 'अपनी धरती' के इस अन्तिम प्रांत के कटु अनुभवों ने मुझे बहुत कमजोर कर दिया था। क्लब वालों ने मेरे भोजन आदि की व्यवस्था की तथा साथ ही साथ एक ट्रक में मेरे वापस जाने की भी व्यवस्था कर दी जो कुछ ही घन्टों में बिहार की ओर जाने वाली थी। मेरे दुखी मन ने इस व्यवस्था को स्वीकार कर लिया। निश्चित समय पर मैंने अपने पथ चेतक को ट्रक पर रख दिया और एक किनारे अपना बिस्तर लगा कर पड़ रहा। ट्रक पर सामान लदा था पर फिर भी मेरे लिए लोगों ने विशेष सुविधा का प्रबन्ध कर दिया था अतः विशेष कष्ट महसूस नहीं हुआ। ट्रक को ऊपर से कवर किया गया था। सारी रात ट्रक चलती रही।

१३–१–७३ दूसरे दिन सुबह आठ बजे ड्राइवर ने मुझे जगाया और मुझे उतरने को कहा। उसने बताया कि भागलपुर यहा से समीप ही है। मैं खुशी-खुशी उतरा पर उतरते ही ड्राइवर ने बीस रुपये की मांग पेश कर दिया। अब तो मेरे लिए समस्या हो गई। इस सम्बन्ध में तो मैंने सोचा ही नहीं था। मैंने अपने पास के सभी पैसों को इकठ्ठा किया पर फिर भी पन्द्रह रुपये ही हुए। ड्राइवर ने मेरी मुसीबत को समझ लिया। जब मैंने उसे पन्द्रह रुपये दिया, तो उसने मुझे पांच रुपये वापस कर दिया और ट्रक स्टार्ट कर दिया। अब मैं फिर पथ-चेतक की पीठ पर था। पास के एक मोड़ पर मैंने काफी पिया और भागलपुर के लिए चल पड़ा।

—:o:—

# ४४ यात्रा का अन्तिम चरण

अलविदा अहलेवतन हाफिज खुदा मेरा
अन्तिम चरण पथ भारती का हो रहा मेरा।

आजकल संथालों का कोई पर्व था अतः इस क्षेत्र के सभी आदिवासी बड़े मौज में थे। जगह जगह झूमते हुए जत्थे मिल जाया करते थे। भागलपुर में वहाँ के संस्कृत कालेज के आचार्य ने मेरा बड़ा सत्कार किया। मुंगेर पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। वहां एक चायघर में बैठा चाय पी रहा था। समीप ही कुछ लोग चर्चा कर रहे थे कि अंग्रेजों के भक्त आज भी मौज उड़ा रहे हैं और गरीब उसी तरह कष्ट पा रहे हैं। किसी गोयनका नामधारी व्यक्ति की शिकायत चल रही थीं। आज के 'गरीबीं हटाओ' युग में इस चर्चा के प्रति मेरी दिलचस्पी स्वाभाविक रूप से जग गई। हमे अपनीं व्यवस्था में ऐसा शुधार लाना है कि गरीव के मन से ऐसी भावनायें दूर हो सकें। धनी और गरीब के बीच की खाई भरनी हीहोगी तभी हमारी स्वतन्त्रता सार्थक हो सकेगी।

१४-१७३ पिछली रात बड़ी मुश्किल से एक धर्मशाला में जगह मिल सकी थी। वरामदे मे ही सोना पड़ा था अतः रात भर ठंड लगती रही। सुवह जव धूप निकली तव जाकर कही प्रकृतिस्थ हो सका।

आज मकर संक्रान्ति थी अतः मुंगेर में ही गंगा में स्नान किया। यह एक शुभ संयोग ही था कि इस पवित्र त्योहार के अवसर पर मैं गंगा के समीप था।

इस क्षेत्र में फसलें बड़ी अच्छीं थी। गंगा का कछार होने से मिट्टी सीलन भरी होती है और पानी नहीं देना पड़ता है। अमरपूर में एक सज्जन मिले जिन्हे उस क्षेत्र के लोग द्वादश श्री वावू वहा करते हैं। एक प्रेमी युवक मुझे उन तक

ले गया। श्री बाबू बड़े ही भावपूर्ण तरीके से मिले। उनके साथ और भी बहुत से लोग थे। देर तक बातें होती रहीं। अन्त में लोगों ने मुझसे पूछा कि इतनी लम्बी यात्रा के दौरान अपने देश को, अपनी धरती को बहुत करीब से देखने के पश्चात मैंने क्या अनुभव किया। यह प्रश्न पहले भी कई जगह कई बार पूछा गया था। मैंने उन लोगों को एक छोटी सी कविता सुना दी जिसे उन लोगों ने बहुत पसन्द किया,

'हे मन्त्रीगण हे नेताओं, विनय करूं कर जोर।
ध्यान लगाकर सुनो जरा क्यों जनता करती शोर॥
जनता करती शोर सदा संतापहि गावे।
हो गये छब्बीस साल मगर अब भी दुख पावे॥
अंग्रेजन के भक्त अभी भी मौज उड़ाते।
नेता लेकर ओट उन्हीं में हैं मिल जाते॥
"अपनी धरती' भ्रमण कर पाया एक विचार।
असंतोष चहुं ओर है एक इंद्रा' से प्यार॥
एक इन्द्रा से प्यार नेतृगण होश में हो जाओ।
आवे खूनी क्रांति पुर्व ही सजग हो जाओ॥

श्री बाबू से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस समय ये लाखों के आदमी हैं पर व्यवहार में इतनी सरलता है कि छोटे-बड़े सभी के प्रिय हैं। बातचीत के दौरान श्रीबाबू ने कहा कि "आदमी भाग्य और भगवान का भरोसा करना छोड़ दे तो बहुत कुछ पा सकता है। केवल इसी वाक्य से उनके चरित्र के बारे में जाना जा सकता है। यहां से विदा लेकर मैं मोकामा पहुंचा। वहां के नए पुल का निर्माण कार्य चल रहा था। मोकामा में मेरे सुपरिचित श्री देवेन्द्र पान्डे मिले जिन्होंने मेरा अच्छा स्वागत किया। मकर संक्राति की रात अपने शुभचिन्तकों के बीच बीती इस क्षेत्र में मिर्च की बड़ी अच्छी फसल दिखी। यहां के सूखे और लाल मिर्च दूर-दूर तक भेजे जाते है।

१५–१–७३ देवेन्द्र जी के यहाँ बिन्दा देवी ने मेरी विशेष सेवा की और चलने समय रास्ते का भोजन आदि भी आग्रह पुर्वक बाध दिया । चूंकि अब मैं वापसी के पथ पर था । और कुछ ही दिनों में घर पहुंचने को था। अतः प्रसन्नता मन में समा नहीं रही थी और हृदय में वड़ा उत्साह भरा हुआ था । इसी मनस्थिति में चार वजे शाम को मैं पटना पहुंच गया । पटना का स्वागत मैं कभी भूल नहीं सकूगा . विशेष। कर आकाश वाणी के संवाद संयोयन विभाग के अध्यक्ष श्री चतुर्भुज जी का सदव्यवहार और प्रोत्साहन मुझे सदा याद रहेगा।। चतुर्भुज जी ने अपने दोस्तों से मेरा परिचय कराया तथा आकाश वाणी, पटना के 'युवाजगत' कार्य--क्रम के लिए मेरी संस्मरणात्मक वार्ता को भी टेप किया । यह कार्य--क्रम ११ फरवरी १९७३ को प्रकाशित हुआ था । पटने में एक प्रमुख पत्र के सम्पादक श्री भारती जी का भी मुझे विशेष सहयोग मिला । भारती जी उचकोटि के विद्वान हैं । ये स्तंत्रता संग्राम के सेनानी रह चुके हैं तथा इनका व्यक्तित्व राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण हैं । आपने मुझे 'अपनी धरती' का द्वितिय खंड भी प्रकाशित करने के लिए बहुत उत्साहित किया ।

पटना से भाव भीनी विदाई लेकर पहलेजा घाट से जहाज के द्वारा गंगा पार किया । जहाज के कर्मचारियों ने मेरे साथ वड़ा सौजन्य पूर्ण व्यवहार किया । तथा लगभग डेढ़ घन्टे के गंगा यात्रा में मेरे अनुभवों को रुचि पूर्वक सुनते रहे । गंगा पार कर सारन की एक पुलिस चौकी में विश्राम किया ।

१७–१–७३ अव मेरा अपना क्षेत्र शुरु हो गया था । चारो तरफ मेरी अपनी भोजपुरी सुनाई दे रही थी । सुबह का समय था और दिशाएं घने कुहासे से ढकी हुई थी । वड़ी सावधानी वरतनी पड़ रही थी । शाम को मैं सीवान पहुंचा जो अव एक स्वतंत्र जिला बन चुका है । रात यहां बितानी थी अतः एक शिक्षा संस्था में पहुंचा पर

वहां के आचार्य ने वड़े ही अनमने भाव से केवल रात भर रुकने की अनुमति दी।

१८--१--७३ गत रात मेरे यात्रा पथ की अंतिम रात थी। आज का सवेरा मुझे बड़ा ही सुखकर लगा। मन में उमंगे हिलोरे ले रही थीं। आज मेरी यात्रा समाप्त होने वाली थी। ग्राम की एक दूकान मे दूध लेकर काफी वनाया और पी कर वड़े ही प्रसन्न मन से चल पड़ा। कुहासा आज भी काफी घना था और आगे वढ़ने में कठिनाई हो रही थी पर उत्साह जल्दी--जल्दी आगे वढ़ने को वाध्य कर रहा था। ११ वजते--वजते मैं गोठनी में अपने चिर शुभ चिन्तक वर्मा साहब के स्वास्थ्य केन्द्र पर पहुंच गया। यहां पर मेरा वड़ा हार्दिक स्वागत हुआ। डा० गोपाल जी, श्री राजेन्द्र जी, दीप नारायण तथा देवेन्द्र जी आदि बन्धुओं ने मेरा बड़ा ही भाव पूर्ण स्वागत किया। यहां से विदा लेकर चला तो कुछ ही देर वाद मैं अपने प्रिय ग्राम कौसड़ की भूमि पर था। वहुत दिनों के वाद अपनी प्रिय भूमि पर पहुंचने पर मेरी आंखें आनन्दाश्रुओं से भर उठीं। सारे ग्राम वासियों ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। सर्व प्रथम मेरे वाल मित्र केदार सिंह ने माला पहनाई। मेरे सकुशल वापस आ जाने की खुशी में गांव के युवक मंगल दल ने तो एक आयोजन ही कर डाला और फूल मालाओं से मेरा सत्कार किया। मेरी माता तथा पत्नी की खुशी का तो कोई पारावार ही नहीं था। पता नहीं इन लोगों ने कितनी मनौतियां मानी थी। और इस प्रकार मैं फिर अपनों में था।

इस सन्दर्भ में मैं अपने चिर साथी पथ चेतक के सम्बन्ध में कुछ लिखना आवश्यक समझता हूं। इसने मेरा बड़ा साथ दिया। उसके प्रति अपनी भावनाओं को मैंने एक छोटी सी कविता के रुप में वांधने का प्रयत्न किया हैं। जो नीचे दे रहा हूं।

' पथ चेतक के प्रति ' ( हरकुलिस साइकिल का नाम )

" ऐ हम सफर मेरे साथी क्या साथ निभाया है ।
तेरे ही सहारे मैं सफ़र इतना कर पाया है ।। ऐ० ।।
मैं थक भी कभी जाता था मगर तूँ थकते नहीं थे कभी ।
हर समय तुम्हे मैंने सही हालत में पाया है ।। ऐ० ।।
मरुभूमि हो या आंध्रा के वन चाहे चंवल का विहड़पथ हो ।
तुम्हें देख भली मुझे शक्ति मिलि क्या प्यार जताया है ।। ऐ० ।।
काशी, केरल काशमीर प्रांत गुज़रात और आसाम तलक ।
योजन अष्टमशत साथ दिया कोई यू कर पाया हैं ? ।। ऐ० ।।
हो देव हरकुलिस के वेटे औ 'पथ चेतक' है नाम तेरा ।
चिर सहचर वने रहो मेरे वड़े श्रम तुम्हें पाया है ।। ऐ० ।।

अंत में परम उत्साही तथा समाज सेवी शिक्षाविद श्री ललिता प्रसाद दूबे (विद्यालय प्रति उपनिरिक्षक) का आशिर्वाद पत्र 'अपनी धरती' में अंकित करना अपना कर्तव्य समझता हूं। जिन्होंने मेरी सदभावना यात्रा एवं यात्रा संस्मरण की जानकारी प्राप्त कर बड़े उत्साह पूर्ण मेरा स्वागत किया। उनकी सहन शीलता एवं कार्य शीलता देख कर मेरा मस्तक श्रद्धा से झुक गया। आपको ज्ञात होना चाहिए कि श्री दूबेजी उस समय अपने प्रिय जामाता की दुखद मृत्यु से अत्यधिक व्यथित थे।

## माध्यमिक शिक्षा परिषद

### इलाहाबाद (उ० प्र०) दि० ९--८--७३

श्री विमल कुमार पाण्डेय ग्राम कौसड़ पत्रालय खेमादेई जनपद देवरिया के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार के सदस्य एवं उत्साही कर्तव्य निष्ठ तथा राष्ट्रिय भावना से ओत प्रोत व्यक्ति हैं। इन्होंने सायकिल द्वारा भारत भ्रमण का अत्यन्त महत्व पूर्ण कार्य सम्पन्न किया है। जो हमारे देश के नव युवकों को सतत प्रेरणा देता रहेगा।

श्री पाण्डेय की सदभावना यात्रा का सस्मरण राष्ट्रिय एकता और सौहार्द के संवर्धन में अपनी निराली भूमिका अदा करेगी।

मेरी शुभ कामनायें सतत इनके साथ हैं।

**ललिता प्रसाद दुबे**
(विद्यालय प्रति उप निरिक्षक)
देवरिया

# आह्वान

★ सायकिल द्वारा सदभावना यात्रा ★

राष्ट्र एवं समाज हित युवा वृन्द से निवेदन है कि "अभियात्री दल" ( पर्यटन क्लब ) के सदस्य बन कर २०० कि० मी० से विश्व पर्यटन तक की यात्रा में सम्मलित हों। किसी तरह का भेद भाव नहीं।

विशेष जानकारी के लिए पत्र व्यवहार अथवा साक्षात कार करें।

( क्लब अध्यक्ष )
विमल कुमार पाण्डेय
(अखिल भारतीय सायकिल पर्यटक)

आयोजक

**श्री धर्म नाथ सिंह** (अध्यक्ष सहकारी संघ, लार)

संरक्षक

श्री राम चन्द्र तिवारी (एडवोकेट)
" प्रेम शंकर पाण्डेय (एडवोकेट)
" श्याम विहारी सिंह (एम ए एल एल बी)
" हुकुम सिंह (डाइरेक्टर क्षेत्रिय केन्द्र विभाग एवं प्रबंधकारिणी सदस्य सुतावर इण्टर कालेज)
" हंस नाथ सिंह ( सामाजिक कार्य कर्त्ता)
" शिवनाथ सिंह (सभापति ग्राम कौसड़)
" वेनी माधव सिंह ( " " डुमरी )
" हरिहर सिंह (सामाजिक कार्यकर्त्ता )
" कपिलदेव सिंह ( अध्यक्ष क्षेत्रिय कोआपरेटिव सोसाइटी )
" शिव शंकर सैनी (उत्साही युवक लार)
" शंकर प्रसाद यादव (अध्यापक पिन्डी इण्टर कालेज )

शुभ चिन्तक

श्री शत्रुघ्न पति त्रिपाठी (व्यवस्थापक-इण्टर कालेज पिन्डी)
श्री भुपेन्द्र पति त्रिपाठी (साहित्य व्याकरणाचार्य एवं पोष्टाचार्य संस्कृत विभागाध्यक्ष वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय)
श्री वृजानन्द सिंह (ब्लाक प्रमुख)
श्री रामा शास्त्री (प्राचार्य संत विनोवा डीग्री कालेज देवरिया)
श्री भाष्करा नन्दपाठक (स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सेनानी)

# ४५. प्रमुख समाचार पत्रों की सराहना

"आज" वाराणसी ३ नवम्बर १९७१

"सायकिल से भारत भ्रमण–देवरिया जिले के कौंसड़ पिण्डी गाँव के श्री विमल कुमार पान्डे सायकिल से भारत भ्रमण के सिलसिले में मंगलवार को वाराणसी पहुंचे। आप आज वुधवार को यहां से दक्षिण भारत की सदभाना यात्रा पर रवाना हो जायेंगे।"

## "नवीन दुनिया" (जबलपुर) दिनांक ११ नवम्बर १९७१

## ( सायकिल पर भारत दर्शन )

( शांति यात्री श्री पाण्डे नगर में )

उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले से सायकिल पर भारत दर्शन की आकाक्षा लेकर निकले सायकिल चालक श्री विमल कुमार पान्डे आज नगर में पहुंचे हैं। उन्होंने अपनी यात्रा ३ नवम्बर को प्रारम्भ की है तथा एक सप्ताह ही में वाराणसी से लेकर जवलपुर तक की दूरी तै कर ली है। श्री पान्डे ने 'नवीन दुनिया' कार्यालय को भेंट देने हुए कहा हैं कि उनकी यात्रा का प्रमुख उद्देश्य देशवन्धुत्व और राष्ट्रीयता जाग्रत करना, कृषि सम्वन्धी जानकारी प्राप्त करना, महापुरुषों का सत्संग लाभ लेना तथा विभिन्न प्रांतों के लोक गीतों और लोक जीवन का अध्ययन करना है। श्री पान्डे ने वताया कि वे अभी दक्षिण की ओर जा रहें हैं जहां वह सर्व प्रथम सर्वोदयी संत विनोवा भावे से भेंट करेंगे, तत्पश्चात दक्षिण प्रवास के दौरान भू०पू० राष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन से मिलने का आपने निश्चय किया है। आपने अपनी अभी तक की सप्त दिवसीय यात्रा के अनुभवों के बारे में अच्छा, खराब और भयानक तीन ही शब्दों का प्रयोग किया है।"

"नवभारत" ( जवलपुर ) दिनांद १३ नवम्बर १९७१

## (सायकिल द्वारा भारत भ्रमण)

उत्तर प्रदेश के एक ग्राम कौसड़ पिन्डी, देवरिया निवासी श्री विमल कुमार पान्डे जो सायकिल पर भारत भ्रमण हेतु बनारस से ३ नवम्बर को निकले हैं, गत दिवस जवलपुर पहुंचे। आपने एक भेंट में बताया कि आप हर क्षेत्र में कृषि के क्षेत्र में किए जा रहे नये प्रयोगों का अध्ययन कर रहे हैं। आप की यात्रा का उद्देश्य राष्ट्रिय एकता एवम् शांति का संदेह गाँव-गांव पहुचाना है।"

"नवभारत" ( नागपुर ) दिनांक १५ नवम्बर १९७१

## (साइकिल पर भारत भ्रमण)

इधर एक नई लहर आई है जिसमें विभिन्न प्रान्तों के तरुण अलग अलग साधनों से देश दर्शन को निकल रहें हैं। नगर वासियों ने अभी-वंगाल और देहरादून के तरुणों को देखा था और कल आए हैं नगर में देवरिया उ० प्र० के तरुण श्री विमल कुमार पाण्डे जो सायकिल से भारत भ्रमण को निकले हैं। व्यवसाय से कृषक श्रीं पान्डेय प्रतिदिन लगभग ७५ किलोमीटर चलते हैं। उन्होंने 'नव भारत' प्रतिनिधि को वताया कि उनका खर्च वे स्वम् बहन करते हैं। वे मध्यप्रदेश भ्रमण कर अव महाराष्ट्र में हैं और आज वे प्रस्थान कर वार्धा जायेंगे जहां वे विनोवा भावे से मुलाकात करेंगे। श्री पाण्डेय ने वताया कि उन्हें हर स्थान पर हार्दिक प्रेम मिला।

दैनिक हिन्दी **"मिलाप"** ( हैदराबाद ) २१ नवम्बर १९७१

## (सायकिल पर भारत दर्शन, शांति यात्री श्री विमल पंडित हैदराबाद पहुंचे)

हैदराबाद, २० नवम्वर, सौहार्द्र, भाई चारगी तथा वन्धुत्व की भावना एवम् एकता का संदेश लेकर भारत दर्शन पर निकले उत्तर प्रदेश

के देवरिया जिले के श्री विमल कुमार पान्डेय आज हैदराबाद पहुंचे। श्री पान्डेय ने अपनी यात्रा वाराणसी से ३ नवम्वर को आरम्भ किया तथा अब तक रीवा, जबलपुर, वर्धा आदि का भ्रमण कर चुके हैं। वर्धा में आपने विनोबा जी का आशीर्वाद प्राप्त किया जिन्हों ने परामर्श दिया कि अच्छा होता यदि यह यात्रा पैदल की जाती। हिंन्दी मिलाप कार्यालय को भेंट देते हुए श्री पान्डेय ने वताया कि भारत दर्शन का उद्देश्य जहां देश की विभिन्न संस्कृतियों तथा भाषाओं में एकता एवम् समानता की जानकारी प्राप्त करना है वहां कृषि संम्बन्धी जानकारी के साथ साथ महापुरुषों के सत्संग का लाभ उठाते हुए लोक जीवन का अध्ययन भी करना है। मद्रास, केरल, दिल्ली, तथा पजाव की यात्रा कर आप अपने अनुभवों को लिपिवद्ध करेंगे।

## THE HINDU ( Banglore Mysore )

### Saturday November 27,1971

Mr Bimal Kumar Pandey a cyclist from Deoria in Uttar Pradesh is in Banglore on his way to Kanya Kumari. He left Benaras on November 3 .and has all redy visited Jabalpur. Nagpur and Hyderabad. Mr.Pandey, 40 year old peasant said that the purpose of his tour was to understand the condition of the common man all over India. Before turning to his village he wants to visit Kashmir and Assam.

## THE INDIAN EXPRESS Banglore Nov. 27, 1971

### ( Round the Country on Cycle )

Banglore Nov, 26. While there are many ways for people of one state to understand the custom and fashion of other state, Mr. Bimal Kumar Pandey of Uttar Pradesh thought the best way is to go on a cyele through the length

and breadth of the country. An agriculturist with modern approach Mr. Pandey left Varanasi on Nov. 3on a cycle and reached city today. His plan is to visit Kanya Kumari On his return on monday, he will go to Kashmir. This 40 year old young man proudly said that he had not taken a single pasia from any body for his tour. He returned all the money that was offered to him, he said, showing his traveller cheques. Mr. Pandey who has come through Madhya Pradesh, Maharashtra, Andhra Prade h hopes to complete his tour ln three months. Mr. Pandey is father of a 12 yaar old daughter;

'THE NAV HIND TIMES' [ Panjim Goa ]Dec. 8. 1971

( Tour by Cycle )

[ By a staff reporter ]

Panjim Dec, 7 Forty year old Bimal Kumar Pandey of Varanasi [U. P.] who is on an all Inbia tour on bicycle arrived in Goa yesterday. A farmer by profession Mr. Pandey began his tonr on Sep, 29 from Varanasi So for he has visited Madhya Pradesh, Maharashtra, Mysore Andhra Pradesh. Tamil Nadu and Kerala. He proposes to visit Kashmir befoe returning to his native place. He will leave Goa tomorrow.

( सायकिल से भारत भ्रमण )

**"आज" २२ अक्टूबर १९७२ वाराणसी**

देवरिया के कौसड़ ग्राम के श्री विमल कुमार पान्डेय आगामी २८ अक्टूबर को सायकिल से भारत की सदभावना यात्रा पर रवाना होंगे। आपकी यह दूसरी भारत यात्रा होगी। इसके पूर्व गत वर्ष आपने वाराणसी से यात्रा शूरू की थी, परन्तु भारत पाक युद्ध के कारण आपको अपनी यात्रा बीच मे ही स्थगित कर देनी पड़ी थी। इस वार आप उत्तराखन्ड काश्मीर, राजस्थान, सौराष्ट्र मध्य प्रदेश, विहार, उड़ासा, पश्चिम वंगाल और वंगलाँ देश की यात्रा करेंगे। आपने अपनी पिछली यात्रा के संस्मरण "अपनी धरती" नामम पुस्तक में रोचक ढंग से लिखे हैं।

**"जनवार्ता" वाराणसी २३ अक्टूबर १९७२ ई०**

( सायकिल से भारत की सदभावना यात्रा)

देवरिया जिलान्तर्गत कौसड़ गांव के युवक श्री विमल कुमार पान्डेय भारत की दूसरी सदभावना यात्रा पर सायकिल से रवाना होंगे। इन्होंने प्रथम यात्रा गत वर्ष वाराणसीं से शुरू की थीं। भारत भ्रमण की यात्रा का मुख्य उद्देश्य लोगो में वन्धुत्व की भावना स्थापित करना है। अव की वार पांडेय जी उत्तरभारतकाश्मीर, राजस्थान, सौराष्ट्र, मध्य प्रदेश, विहार उत्कल प्रदेश एवं वंगला देश तक की है। गत वर्ष पाकिस्तान युद्ध के कारण इनकी यात्रा स्थगित होगई। इन्होंने पिछली यात्रा का संस्मरण "अपती धरतो" पुस्तक में लिखा है।

## 'स्वतन्त्र भारत' लखनऊ ४ नवम्बर १९७२

( सायकिल से सम्पूर्ण भारत भ्रमण )

लखनऊ २ नवम्बर। देवरिया जिला उत्तर प्रदेश का पिछड़ा जिला समझा जाता है। परन्तु इसी पिछड़े क्षेत्र के कौसड़ गाँव के नवयुवक श्री विमलकुमार पाँडेय ने सायकिल द्वारा सम्पूर्ण भारत भ्रमण कर अपने क्षेत्र

का शुभसंदेश देश के कोने कोने तक पहुंचाने का व्रत लिया है । श्रीं पांडेय २८ अक्टूबर को अपनी द्वितीय यात्रा प्रारम्भ कर २ नवम्बर को यहां पहुचे हैं । इस बार की यात्रा में आप काश्मीर सौराष्ट्र, उत्कल प्रदेश बंगाल बगला देश आदि की यात्रा करेंगे। पिछली यात्रा सुदूर दक्षिण प्रदेशों की थी । ३५०० मील की यात्रा करके पाकिस्तान की असामयिक हमले के कारण अपनी यात्रा रोक दी थी । पाडेय जी आत्म निर्भरता में अधिक विश्व न करते हैं । अपनी यात्रा के दौरान किसी से एक पैसे की भी सहायता नहीं लेते । इन्होंने अपनी पिछली यात्रा के रोचक संस्मरण 'अपनी धरती' पुस्तक में संग्रहित किये है ।

**'दैनिक नवजीवन'** लखनउ ४ नवम्बर १९७२ इ०

( सायकिल से भारत भ्रमण )

लखनऊ गुरुवार देवरिया के श्री विमलकुमार पाडेय सायकिल मे भारत भ्रमण के लिए निकले हैं । वे २ नवम्बर को यहां पधारे । यहाँ से ये दिल्ली, काश्मीर, गुजरात, बंगाल आदि प्रदेशों की यात्रा कर अपनी विशेष जानकारियों को प्राप्त कर पुस्तक लिखना चाहते है ।

**'अमर उजाला'** आगरा ८ नवम्बर १९७२ ई०

( सायकिल यात्री श्री विमल कुमार पान्डे )

आगरा ७ नवम्बर । देवरिया निवासी श्री विमल कुमार पान्डेय अपनी सायकिल के दूसरे चक्र में आगरा आये । वे अपनी द्वितीय यात्रा २८ अक्टूबर को प्रारम्भ किये थे । वे यहां से दिल्ली चंडीगढ़ काश्मीर, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदश उड़ीसा अंगला देश, विहार होकर लौटेंगे इसके पूर्व वे काशी से रामेंश्वरम् तक की यात्रा कर चुके हैं । उन्होंने पाक युद्ध के कारण यात्रा रोक दी थी । 'अपनी धरती' पुस्तक में यात्रा संस्मरण लिखे है ।

**"दैनिक पंजाब केसरी"** जालंधर १३-११-७२

( अ० भा० सायकिल यात्रा )

पाडेय जी सदभावना यात्रा पर जालन्धर पहुचे । जालन्धर १५

नवम्बर जिला देवरिया के सामाजिक कार्यकर्ता ३१ वर्षीय श्री विमल कुमार पांडेय जो अपनी दूसरी अखिल भारतीय सायकिल यात्रा २८ अक्टूबर को किये है। गत दिवस जालन्धर पहुचे। पंजाव केसरी के कार्यालय मे इन्टरव्यू देने के पश्चात वह पठानकोट को रवाना हो गये। वहां से जम्मू काश्मीर की सदभावना यात्रा करते हुये हिमांचल जायेंगे, अब तक ये ६००० की मीं यात्रा कर चुके हैं।

श्री पांडेय ने वताया की अव तक ये १० राज्यों की यात्रा कर चुके हैं। एंवम वे वंगाल भी जायेंगे। श्री पाडेय अपना संस्मरण 'अपनी धरनी' नामक पुस्तक में लिखे हैं।

## "वीर प्रताप" जालन्धर १९-११-७१

श्री विमल कुमार पांडेय देवरिया ( उ० प्र० ) जो सायकिल से भारत की यात्रा कर रहे है। अव तक वह दक्षिणी भारत की यात्रा कर चुके हैं। गत दिवस आप जालंधर पहुचे। जहां से आप हिमांचल और काश्मीर के लिए प्रस्थान करेंगे।

## "राष्ट्र दूत,, जयपुर (राजस्थान) शुक्रवार१दिसंवर १९७२ई।

### ( श्री पान्डेय द्वारा सायकिल से भारत भ्रमण )

'हमारे कार्यालय प्रतिनिधिद्वारा'

जयपुर ३०नवंवर साइकिल से भारत भ्रमण कर रहे श्री विमल कुमार पान्डेय आज जयपुर पहुचे। उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के निवासी श्री पान्डेय साइकिल द्वारा अव तक १४ राज्यों की यात्रा प्राय. ७हजार की०मी की यात्रा पूरी कर चुके हैं। वे यहाँसे अजमेर सौराष्ट्र होता उत्तकल प्रदेश जायेगे आप वंगला देश पहुंचकर अपनी सायकिल यात्रा पुर्ण करेगें। श्री पान्डेय आत्म निर्भरता में विश्वास करते हैं, तथा अपनी यात्रा के दौरान किसी से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नही करते। श्री पान्डेय अपनीभारत यात्रा का संसमरण अपनी धरती, नामक पुस्तक सग्रहित कर रहे हैं।

**"दैनिक नव ज्योति,, अजमेर "** रविवा०२४दिसंबर१९७२ई।

अजमेर २दिसं०(वा प्र) आज एक युवक विमल कुमार पान्डेय१३राज्यों की सायकिल से यात्रा करने के बाद यहां पहुचा । वह उत्तर प्रदेश का मूल निवासीं है।

विमल कुमार सारे भारत की सदभावना यात्रा पर निकला है। जो "अपनी धरती,, नामक से पुस्तक लिखना चाहता है। वह यहां से आबू होकर सौराष्ट्र पहुंचेगा तथा उत्कल बंगाल में उसकी यात्रा समाप्त होगी।

**"नव जीवन,,साप्ताहिक उदयपुर**(राजस्थान)ता०१०-१२-७२ई।

( सायकिल प्रबासी श्री विमल पान्डेय उदयपुर आगमन पर स्वागत)

उदयपुर देवरिया। जनपद(उत्तर प्रदेश) के विमल कुमार साइकिल पर भारत भ्रमण करते हुये,आबू, ईडर विछिवाड़ा की ओर से ९ दिसं० को यहां पहुचे। आप यहां के दर्शनीय स्थानो को देखने के बाद चित्तौड़गढ़ के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। वह अब तक कन्या कुमारी से काश्मीर तक भ्रमण कर चुके हैं। दक्षिण के पथ में आप विनोबा जीं से भी आसिर वाद प्राप्त कर चुके हैं। अपने वर्तमान प्रवास का अंत आप बंगला देश की यात्रा के साथ करेंगे।

आप यहां "नवजीवन" प्रेस मे ठहरे और पुराने सेनानी श्री शोभालाल जी गुप्त (भू० पू० सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान) से भी सम्पर्क में आये, जो इन दिनों उदयपुर पधारे हुये है। आपकी साहसिक यात्रा की हम हार्दिक सफलता चाहते हैं।

**दैनिक जागरण** झासी १७ दिसम्बर १९७२ ई०

( सायकिल यात्री श्री पांडेय का आगमन )

श्री विमल कुमार पांडेय देवरिया (उ० प्र०) निवासी जो कि

कन्या कुमारी से काशमीर, सौराष्ट्र से यहां तक की यात्रा करते हुए झांसी आये। आप अभी तक १५ प्रदेशों का भ्रमण किया है। आप यहां से इलाहाबाद के लिए रवाना होंगे। आपने बताया कि अपनी यात्रा पर पुस्तक लिखेंगे।

**"आज"** वाराणसी २२ दिसम्बर १९७२ ई०

सायकिल पर भारत यात्रा

सायकिल से भारत की यात्रा पर निकले श्री विमल कुमार पांडेय देश के उत्तरी पश्चिमी और दक्षिणी भागों की यात्रा कर बुधवार की रात्रि मे वाराणसी वापस आ गये। आप देश के पुर्वी भाग की यात्रा पर शुक्रवार को रवाना होंगे।

देवरिया जिले के कौसड़ ग्राम निवासी युवक श्री विमल कुमार पाण्डेय ने गत २८ अक्टूबर को वाराणसी से ही यात्रा प्रारम्भ की थी।

**'सन्मार्ग'** कलकत्ता ३ जनवरी १९७३ ई०

( सायकिल पर्यटक का आगमन )

कलकत्ता। उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के विमल कुमार पाडेय जो सायकिल द्वारा भारत का भ्रमण कर रहे हैं, गत १ जनवरी को कलकत्ता आये। वे अब तक १९ राज्यों का दौरा कर चुके हैं। यहां से वे आसाम एवं बगला देश जायेंगे। इस सदभावना यात्रा का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता है।

**"प्रदीप"** पटना वूधवार १७ जनवरी १९७३ ई०

( वी० के पांडेय द्वारा सायकिल से भारत भ्रमण )

कार्यालय संवाददाता द्वारा

पटना १६ जनवरी ग्यारह हजार मील सायकिल से यात्रा कर

चुकने के बाद सायकिल पर्यटक श्री विमल कुमार पान्डेय का विचार बनारस मे रहकर "अपनी धरती" के नाम से अपने संस्मरणों को पुस्तक रूप में करने का है "

श्री पांडेय देश भर के १८ राज्यों तथा सभी प्रमुख नगरों का दौरा कर आज पटना पहुंचे। श्री पांडेय ने प्रदीप को बताया कि उन्हे विभिन्न राज्यों की जनता से काफ़ी स्नेह तथा सहयोग मिला है।

उन्होने बताया कि उनकी यात्रा का उद्देश्य देश बन्धुत्व और राष्ट्रीयता जागृत करना, कृषि सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना तथा विभिन्न प्रान्तों के लोक जीवन तथा लोक गीतों का अध्ययन करना था श्री पांडेय ने बताया कि वे ३ नवम्बर १९७१ से यात्रा कर रहे हैं और इस बीच वे अब तक काशी से लेकर कन्याकुमारी, काश्मीर, सौराष्ट्र से गौहाटी तक की यात्रा कर चुके हैं।

श्री पान्डेय ने बताया कि अभी वे काशी जाकर अपने पर्यटन के संस्मरणों का प्रकाशन 'अपनी धरती' पुस्तक के रूप मे करेंगे। पुस्तक के प्रकाशन के बाद उनका विचार "विश्व भ्रमण" का है।

"आज" वाराणसी २३ जनवरी १९७३ ई०

( सायकिल से दस हजार किलोमीटर यात्रा )

भटनी देवरिया, २१ जनवरी भारत भ्रमण करने वाले सायकिल पर्यटक युवक श्री विमल कुमार पान्डेय ने १८ प्रदेशों को लगभग १० हजार कि० मी० की यात्रा समाप्त कर नव निर्मित सिवान जनपद से कल प्रातः जब गुठनी पहुंचे, तब वर्मा क्लिनिक मे उनका स्वागत किया गया।

श्री पांडेय इस बार उत्तरा खण्ड काश्मीर, राजस्थान, सौराष्ट्र मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, विहार, उड़ीसा पश्चिम बंगाल, आसाम के कुछ भाग देखने के बाद बंगला देश आदि की यात्रा समाप्त कर

अपने निकटवर्ती ग्राम कौसड़ पत्रालय खेमादेई (देवरिया) जाते समय गुठनी पहुंचे थे।

आपकी सायकिल यात्रा सन १९७१ में प्रारम्भ हुई थी। आप दक्षिणी प्रान्तों की यात्रा कर चुके थे, किन्तु दिसम्बर १९७१ मे पाकिस्तान द्वारा भारत पर अचानक आक्रमण कर दिये जाने के कारण इन्होंने बींच मे ही यात्रा स्थगित कर दी थीं इन्होंने पहली यात्रा का संसमरण अपनी प्रथम पुस्तक "अपनीं धरती" मे विशेष रूप से उल्लिखित किंया हैं। आपके भ्रमण का विशेष ध्येय कृषि सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना, सामाजिक एवं साँस्कृतिक अनुभव प्राप्त करना बताया है।

श्री विमल जी ने अपनी इस बार की यात्रा में कुछ कड़ुवे और मीठे संस्मरण भी सुनाये। आपके ससमरण का 'टेप' „आकाशवाणी', पटना मे भी लिया गया है, जिसको सम्प्रति ११ फरवरी ७३ की रात्रि ९-५० से १० बजे रात्रि तक "युवाजगत" के सन्दर्भ मे प्रसारित किया जायेगा। आ० स०

"**आज**"वाराणसी १४ जुन १९७३ ई०

( भटनी मे सायकिल पर्यटक )

भटनी (देवरिया) ११जून सुप्रसिद्ध भारतीय सायकिल पर्यटक श्री विमलकुमार पान्ड़ेय जनपद देवरिया ग्राम कौसड़ (खेमादेई) निवासी आप 'अपनी धरती' का द्वितीय भाग पूरा कर उसको अंतिम रूप देने के उद्देश्य से यहां आये थे। श्री पांडेय का विचार जनपद की शिक्षण संस्थाओं से सम्पर्क बढ़ाना और छात्रों को प्रत्येक राज्य के सामाजिक सांस्कृतिक एवं कृषि सम्बन्धी यात्रा काल के अनुभव से अवगत करानां है। इस समय शिक्षण संस्थायें बन्द हैं। सम्भवतः ग्रीष्मावकाश के बाद आप तूफानी दौरा करने का कार्यक्रम बनायेंगे।

—:—

# परिशिष्ट

( प्रथम यात्रा )

देवरिया जनपद से प्रारम्भ कर वाराणसी से राष्ट्रीय पथ सप्तम (जो काशी से कन्या कुमारी तक चली गई है।) रीवा, जवलपुर, नागपुर, हैदराबाद, बेंगलौर मदुरा सेतबन्ध रामेश्वरम, कालीकट, गोवा, रत्नगिरि, वम्बई, ३५०० की. मी. पथ। पाक युद्ध के कारण २ माह १७ दिन में ही स्थगित करनी पड़ीं।

( द्वितीय यात्रा )

अपने ग्राम से प्रारम्भ कर गोरखपुर, लखनऊ, आगरा, दिल्ली पानीपत, अम्बाला, चंडीगढ़, जालन्धर, पठानकोट, जम्मू, नौसेरा, रजौरी ( फिर वापिसी ) जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, लोधियाना, संगरूर, हिसार राजगढ़, (सादूलपुर) जैपुर, अजमेर, आबू, इडर अंबाजी उदयपुर चित्तौड़ शिवपुरी, झांसी, बांदा इलाहाबाद, वाराणसी मुगलसराय, धनबाद, जमशेदपुर उत्कल प्रदेश का मयूरभंज क्षेत्र, खड़गपुर, कलकत्ता, वर्दवान, सूरी, होते बगला देश मेघालय (आसाम) वापिसी– भागलपुर, पटना, सिवान, गोठनी होते अपने निवास स्थान पथ ७५०० की० मी० अर्थात सम्पूर्ण यात्रा पथ ११ हजार की० मी० समय प्राय ६ माह।

-जय हिन्द-

--:--

" उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं, क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम् ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च, लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ॥"

—चाणक्य

हर कदम इम्तहां लेता, औ हर सांस आज़माती है।
मौत के होंठ चूमने वाले, आ तुम्हें जिन्दगी बुलाती है ॥ —श्री हरि

ॐ शांति ॐ शान्ति ॐ शान्ति

## • राष्ट्रीय गान •

जनगण मन अधिनायक जय हे,
भारत – भाग्य विधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा,
द्राविण उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा।
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय गाथा।
जनगण-मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे॥

मैत्री प्रिंटिंग प्रेस, लार देवरिया।